बीकानेर नरेश

(संक्षिप्त जीवन-चरित्र)

दूसरा भाग

मूल लेखक

मेजर के. एम. पनिक्कर, बार-एट-ला,
फॉरेन एँड पोलिटिकल मिनिस्टर तथा मिनिस्टर फॉर
पब्लिक हेल्थ एँड एजूकेशन, वाइस-प्रेसिडेंट,
एग्जिक्यूटिव कौंसिल बीकानेर स्टेट।

अनुवादक

पं० महेन्द्र शंकर पाण्डेय, एम. ए., बी. टी.
सीनियर हिस्ट्री टीचर, सादूल हाई स्कूल बीकानेर।

हम्फ़रे मिल्फ़ोर्ड
ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस
बम्बई कलकत्ता मद्रास

मूल्य ॥=)

BIKANER NARESH Bhag II

(Maharaja of Bikaner Part II)

Hindi translation of

K. M. PANNIKAR'S MAHARAJA OF BIKANER.

rst published November, 1944. प्रथमावृत्ति नवम्बर, १९४४

पं० धर्मचन्द भार्गव बी. एस सी., अमृत इलैक्ट्रिक प्रेस, रेलवे रोड, लाहौर।

प्राक्कथन

बीकानेर-नरेश के जीवन चरित्र का यह द्वितीय भाग बहुत ही महत्वपूर्ण है। गत यूरोपीय महायुद्ध से इनका अन्तर्राष्ट्रीय जीवन विश्व-ख्याति में आलोकित हो गया था। भिन्न २ अवसरों पर आपने भारतीय हितों की रक्षा महान् बुद्धिमत्ता के साथ की है। आपकी राजनीति परायणता की प्रशंसा देशी एवं विदेशी महापुरुषों ने मुक्त-कंठ से की है। आप बीकानेर के आदर्श शासक और भारत के आदर्श व्यक्ति हैं। आपने अपने अथक परिश्रम से बीकानेर की मरु-भूमि को धन-धान्य पूर्ण बना दिया है। इस वृद्धावस्था में भी आप अपना पूरा समय अपने राज्य तथा भारत के हित चिन्तन में ही व्यतीत करते हैं।

मेजर के० एम० पनिक्कर ने आपका जीवन-चरित्र अंग्रेजी में बहुत ही निपुणता के साथ चित्रित किया है। उक्त जीवनी को दो भागों में विभक्त कर के हिन्दी में अनुवाद किया गया है। इससे हिन्दी के पाठक भी बीकानेर-नरेश के अनुपम कार्यों से विशेषतया परिचित हो सकेंगे।

इस पुस्तक में "स्वर्ण महोत्सव" और "वर्तमान युद्ध" नामक दो पाठ बढ़ा दिए गए हैं जो मूल पुस्तक में नहीं हैं। इन दोनों पाठों को बढ़ाने की अनिवार्य आवश्यकता प्रतीत हुई क्योंकि इनके जोड़ देने से बीकानेर-नरेश का अब तक का जीवन-चरित्र संक्षिप्त रूप से पाठकों के सामने आ जाएगा।

इस अनुवाद के लिये सर्व प्रथम मूल लेखक मेजर के. एम. पनिक्कर को मैं धन्यवाद देता हूं। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती हेमलता पाण्डेय, विशारद, ने समय समय पर मेरी इस पुस्तक के अनुवाद करने में सहायता की है। उनको भी धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

महेन्द्र शंकर पाण्डेय।

BIKANER NARESH Bhag II

(Maharaja of Bikaner Part II)

Hindi translation of

K. M. PANNIKAR'S MAHARAJA OF BIKANER.

First published November, 1944. प्रथमावृत्ति नवम्बर, १९४४

पं० धर्मचन्द्र भार्गव बी. एस सी., अमृत इलैक्ट्रिक प्रैस, रेलवे रोड, लाहौर।

प्राक्कथन

बीकानेर-नरेश के जीवन चरित्र का यह द्वितीय भाग बहुत ही महत्वपूर्ण है। गत यूरोपीय महायुद्ध से इनका अन्तर्राष्ट्रीय जीवन विश्व-ख्याति में आलोकित हो गया था। भिन्न २ अवसरों पर आपने भारतीय हितों की रक्षा महान् बुद्धिमत्ता के साथ की है। आपकी राजनीति परायणता की प्रशंसा देशी एवं विदेशी महापुरुषों ने मुक्त-कंठ से की है। आप बीकानेर के आदर्श शासक और भारत के आदर्श व्यक्ति हैं। आपने अपने अथक परिश्रम से बीकानेर की मरु-भूमि को धन-धान्य पूर्ण बना दिया है। इस वृद्धावस्था में भी आप अपना पूरा समय अपने राज्य तथा भारत के हित चिन्तन में ही व्यतीत करते हैं।

मेजर के० एम० पनिक्कर ने आपका जीवन-चरित्र अंग्रेजी में बहुत ही निपुणता के साथ चित्रित किया है। उक्त जीवनी को दो भागों में विभक्त कर के हिन्दी में अनुवाद किया गया है। इससे हिन्दी के पाठक भी बीकानेर-नरेश के अनुपम कार्यों से विशेषतया परिचित हो सकेंगे।

इस पुस्तक में "स्वर्ण महोत्सव" और "वर्तमान युद्ध" नामक दो पाठ बढ़ा दिए गए हैं जो मूल पुस्तक में नहीं हैं। इन दोनों पाठों को बढ़ाने की अनिवार्य आवश्यकता प्रतीत हुई क्योंकि इनके जोड़ देने से बीकानेर-नरेश का अब तक का जीवन-चरित्र संक्षिप्त रूप से पाठकों के सामने आ जाएगा।

इस अनुवाद के लिये सर्व प्रथम मूल लेखक मेजर के. एम, पनिक्कर को मैं धन्यवाद देता हूँ। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती हेमलता पाण्डेय, विशारद, ने समय समय पर मेरी इस पुस्तक के अनुवाद करने में सहायता की है। उनको भी धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

महेन्द्र शंकर पाण्डेय।

विषय-सूची

(दूसरा भाग)

पहला पाठ

प्रथम यूरोपीय महायुद्ध तथा महाराजा बीकानेर

४ अगस्त सन् १९१४ ई० को बृटिश-सरकार को विवश होकर जर्मनी के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर देनी पड़ी। ज्योंही घटना-चक्र से महाराजा को यह ज्ञात होने लगा कि साम्राज्य को युद्ध में सम्मिलित होना पड़ेगा, त्योंही आपने सम्राट् की सेवा और साम्राज्य की सहायता के लिए अपनी सेनाएँ अर्पित करने की इच्छा प्रकट की। आप ने न केवल धन-जन से ही सहायता देने को लिखा, किंतु युद्ध में स्वयं सम्मिलित होने के लिए भी अनुमति माँगी। युद्ध भूमि में जाकर पराक्रम प्रदर्शित करने का आप को यह अच्छा अवसर मिला। महाराजा के सम्मुख अपने पूर्वजों के उज्ज्वल उदाहरण उपस्थित थे। बीकानेर के इक्कीस नरेशों में से सत्रह नरेश अपनी सेना सहित दूर-दूर के युद्धों में सम्मिलित हुए थे। युद्ध की आशंका प्रकट होते ही आप ने सम्राट् को नीचे लिखे आशय का तार भेजा:—

"रूस, फ्रांस और जर्मनी में युद्ध छिड़ जाने का हाल मैंने अभी सुना है। मेरी यह सविनय प्रार्थना है कि यदि इङ्गलैंड को भी लड़ाई में सम्मिलित होना पड़े, तो मुझे भी आप अपने स्टाफ़ में सम्मिलित करके लड़ाई में भाग लेने की आज्ञा दें; नहीं तो मुझे अपनी सेना एवं राजपूतों के साथ यूरोप, भारत अथवा अन्यत्र युद्ध में सम्मिलित होकर आप के एवं साम्राज्य के सम्मान

तथा कल्याण की रक्षा के लिए लड़ने की आज्ञा दी जाए। ऐसा अवसर जीवन में कभी एक बार ही मिलता है। अतः आप से प्रार्थना है कि यदि साम्राज्य को युद्ध में भाग लेना पड़े तो मुझे आप भूलें नहीं। राठौड़ों की प्रथा के अनुसार युद्ध में सम्मिलित होने की मेरी बड़ी अभिलाषा है। अपनी अनुपस्थिति में राज्य के शासन का पूरा प्रबन्ध मैंने कर लिया है और अनुमति मिलने पर तुरन्त युद्ध में सम्मिलित हो सकता हूँ।"

सम्राट् ने उत्तर में महाराजा की प्रशंसा की, तथा कृतज्ञता प्रकट करते हुए लिखा कि यदि लड़ाई प्रारम्भ हुई तो महाराजा की प्रार्थना पर अवश्य ध्यान दिया जायगा।

महाराजा ने वाइसराय को भी इसी आशय का तार दिया तथा अपनी सेना सहित लड़ाई में सम्मिलत होने की इच्छा प्रकट की। इतने से ही महाराजा सन्तुष्ट नहीं हुए। आपने लार्ड हार्डिङ्ग को एक खरीता भेजा और लिखा कि राज्य की स्थायी सेना के अतिरिक्त मैं और भी अधिक सेना भरती करके भारतवर्ष के प्रधान-सेनापति को दे सकता हूँ। महाराजा की प्रार्थना तुरन्त स्वीकार कर ली गई। बीकानेर का गंगा रिसाला लड़ाई में भेजा गया। महाराजा स्वयं भारतीय सेना के सातवें डिवीज़न के हेड-क्वार्टर-स्टाफ़ में नियुक्त होकर फ्रांस गये।

राठौड़ों को इतिहास कारों ने "रण-बंका-राठौड" लिखा है। ये शब्द उनका सच्चा वर्णन करते हैं। राठौड़ों ने सदा युद्ध में वीरता दिखलाई है तथा युद्ध में सम्मिलित होने से बढ़कर उनके लिये कोई प्रसन्नता की बात नहीं रही है।

गंगा रिसाले के लड़ाई पर जाते समय महाराजा ने भाषण देते हुए कहा कि, "हम लोगों के लिए यह बड़े महत्त्व का समय है। राजपूत सदा लड़ाई में आगे रहे हैं। शान्ति के समय सम्राट् के सुव्यवस्थित-शासन से हम लोगों ने लाभ उठाया है। अब हमारा कर्त्तव्य है कि समय पड़ने पर सम्राट् की सेवा करें।" गंगा रिसाले को सम्बोधित करते हुए महाराजा ने कहा कि, "मुझे इस बात का दुःख है कि मैं इस लड़ाई में तुम्हारे साथ तुम्हारा सेनापति बनकर नहीं जा सकूँगा; परन्तु मुझे विश्वास है कि गंगा रिसाला इस लड़ाई में भी उसी वीरता का परिचय देगा, जो उसने चीन तथा सुमालीलैंड की लड़ाइयों में प्रदर्शित की थी। वीरो! अपना कर्त्तव्य स्मरण रक्खो! हम लोग सैनिकों के रूप में बीकानेर आए थे। हम लोग योद्धा थे और उस समय से अब तक योद्धा ही रहे हैं। अंग्रेज़ों के पक्ष में हम लोग ग़दर में लड़े। उनके लिये हम लोग चीन तथा सुमालीलैंड में लड़े। अब हम फिर लड़ने जा रहे हैं। ईश्वर तथा हमारी माता श्री करणी जी हमें आशीर्वाद दें और हमारी रक्षा करें। तुम लोग सम्राट् की प्रशंसनीय सेवा करो और सकुशल अपने घर लौटो।"

महाराजा यूरोप जाने के लिये कराची पहुँचे, परन्तु एमडन नामक जर्मन-जहाज़ उन दिनों हिन्द महासागर में उपद्रव मचा रहा था। अतः कराची में महाराजा को लगभग दो सप्ताह तक रुकना पड़ा। महाराजा अक्तूबर में फ्रांस पहुँचे।

पहले पहल महाराजा मेरठ डिवीज़न के हेडक्वार्टर-स्टाफ़ में नियुक्त हुए। दिसम्बर तक आप फ्रांस में 'लोकोन' नामक स्थान में रहे। इसके पश्चात् सम्राट् ने आपको सेनापति, सर

जॉन फ्रेंच के स्टाफ़ में नियुक्त किया। आप जनवरी के अन्त तक इनके साथ रहे। महाराजा ने इस सम्मान की प्रशंसा की, परन्तु आप इतने से संतुष्ट नहीं हुए। आप वास्तव में संग्राम में जाना चाहते थे, परन्तु लड़ाई का ढंग पहले का सा नहीं रह गया था। अतः बृटिश सरकार एक नरेश का जीवन सङ्कट में नहीं डालना चाहती थी। इस लिये महाराजा को स्टाफ़ के साथ ही रहना पड़ा।

महाराजा ने यह साफ़ साफ़ कह दिया कि वे नरेश होने के कारण पक्षपात पूर्ण व्यवहार नहीं चाहते। वे अपने साथ वैसा ही व्यवहार चाहते थे, जैसा उनके समान दूसरे सेना नायकों से होता था। महाराजा अपने लिये किसी प्रकार का आराम नहीं चाहते थे। आपने लड़ाई की सब कठिनाइयाँ वीर पुरुष की तरह प्रसन्नता से सहीं। महाराजा के कार्यों से प्रसन्न होकर बड़े अफ़सरों ने आपकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की। जनरल सर चार्ल्स एन्डर्सन ने भी आपकी खूब प्रशंसा की।

महाराजा युद्ध भूमि में अधिक समय नहीं रह सके। सन् १९१५ के प्रारम्भ में आपको महाराजकुमारी के रोग ग्रस्त होने का समाचार मिला। अन्त में महाराजकुमारी की शोचनीय अवस्था के कारण आपको युद्ध से लौटना पड़ा। आते समय आपने लार्ड क्चिनर से प्रार्थना की कि आप मिश्र में जनरल मेक्सवेल के स्टाफ़ में नियुक्त किये जाँए क्योंकि आप तुर्कों की सेना के साथ युद्ध देखना चाहते थे, जो स्वेज़-नहर की ओर बढ़ रही थी।

२९ जनवरी सन् १९१५ ईः को महाराजा पोर्टसईद पहुँचे, तथा जनरल मेक्सवेल के कहने से गङ्गा रिसाले को अपनी

अध्यक्षता में लेकर तुर्की सेना से मुकाबिला करने के लिये प्रस्तुत हुए। एक दिन महाराजा अपनी सेना की छोटी सी टोली के साथ घूम रहे थे। एकाएक 'कतिब्रलखेत' नामक स्थान के निकट तुर्की सेना दिखाई दी। फौरन लड़ाई छिड़ गई तथा महाराजा ने भी इस लड़ाई में भाग लिया। तुर्की सेना को पीछे हटना पड़ा। महाराजा ने अपनी सेना सहित तुर्की सेना का कई दिनों तक पीछा किया।

इसके पश्चात् महाराजा भारतवर्ष लौटे। महाराजकुमारी की अवस्था चिन्ता जनक थी और अन्त में उनका देहान्त होगया। इन दिनों महाराजा का स्वास्थ्य भी खराब था। कुछ समय बाद स्वास्थ्य ठीक हो जाने पर आपने युद्ध में जाने के लिये वाइसराय को फिर लिखा परन्तु वाइसराय सहमत नहीं हुआ। उसने लिखा कि, "भारत और बीकानेर की भलाई के लिये आपको भारत में ही रहना चाहिए। यद्यपि भारत में इस समय आन्तरिक अथवा बाह्य उपद्रवों का भय नहीं है, फिर भी नए वाइसराय को कुछ समय तक अच्छे सलाहकारों की आवश्यकता होगी। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप भारत में ही रहें।"

उन दिनों भारत में राजनैतिक आन्दोलन चल रहा था और लॉर्ड हार्डिंग की अवधि समाप्त हो चुकी थी। थोड़े ही समय बाद नये वायसराय लॉर्ड चैम्सफोर्ड भारत में आने वाले थे। अतः वाइसराय की प्रार्थना पर महाराजा फिर लड़ाई में नहीं जा सके। यह स्मरण रहे कि भारत में भी राजनैतिक क्षेत्र में महाराजा ने बड़े महत्व का कार्य किया, जिसका विवरण आगामी पत्रों में यथा स्थान दे दिया गया है।

दूसरा पाठ

अधिकार–समस्याएँ

यह कहा जा चुका है कि महाराजा ने फिर युद्धस्थल में जाने का प्रयत्न किया, परन्तु देशकी स्थिति की ओर ध्यान देते हुए बृटिश-सरकार ने महाराजा से भारत में ही रहने का अनुरोध किया। अतः आप फिर युद्ध में सम्मिलित नहीं हो सके।

भारत एवं देशी राज्यों के हित के लिए महाराजा का भारत में रहना बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। यद्यपि आपकी अवस्था इस समय केवल छत्तीस वर्ष की थी, तथापि बृटिश-साम्राज्य के राजनैतिक क्षेत्र में आपने ख्याति प्राप्त करली थी। लार्डहार्डिङ्ग महाराजा की राजनैतिक कुशलता तथा बुद्धिमत्ता पर पूर्ण विश्वास करते थे, एवं बहुधा आपकी सलाह से काम करते थे। यूरोप में अनुभव प्राप्त करने के कारण महाराजा के विचार विस्तृत एवं उदार थे। पारिवारिक दुःख तथा अस्वस्थता होते हुए भी आपने उन राजनैतिक कार्यों में भाग लिया, जिनसे भारत के देशीराज्यों को लाभ पहुँचा। इस पुस्तक के प्रथम भाग में यह लिखा जा चुका है कि युद्ध प्रारम्भ होने के पहले महाराजा ने भारतीय नरेशों की सभा स्थापित करने का प्रयत्न किया था, परन्तु युद्ध छिड़ जाने के कारण महाराजा लड़ाई में चले गए। अतः उस समय यह कार्य पूर्ण न हो सका।

युद्ध भूमि में भी महाराजा सदा उस विषय में विचार शील रहे तथा भारत में आने पर आपने फिर इस दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ किया। भारतीय नरेशों ने युद्ध में बृटिश-सरकार की हर प्रकार से सहायता की थी, अनेक नरेश स्वयं युद्ध-स्थल

में गए थे। देशी राज्यों की सेनाएँ भी अनेक युद्ध क्षेत्रों में साम्राज्य की सेनाओं के साथ बैरी का सामना कर रही थीं। सम्राज्य के बड़े २ राजनीतिज्ञ भारतीय नरेशों की सेवाओं एवं बृटिश-भारत की सहायता से अत्यन्त प्रसन्न थे, अतः उन लोगों का विचार था कि भारत के नरेशों को उनके सब स्वाभाविक अधिकार प्राप्त होने चाहिए। इस विचार से महाराजा ने सन् १९१५ ई० में नरेशों की स्थिति, सम्मान एवं अधिकारों की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया। पिछले पचास वर्षों में बृटिश-सरकार के अफ़सरों ने देशी नरेशों के अनेकों अधिकारों की अवेहलना की, एवं कभी २ मनमानी भी की, जैसे खरीता लिखने की शैली में भी परिवर्तन कर दिया गया था। भारतीय नरेशों के अधिकारों को सरकारी अफ़सर दिन पर दिन घटाने का प्रयत्न कर रहे थे। इस अन्यायपूर्ण हस्तक्षेप की ओर महाराजा ने सरकार का ध्यान आकर्षित किया। आपने साम्राज्य के राजनैतिक क्षेत्र में देशी राज्यों का महत्त्व प्रमाणित करते हुए उन दोषों का वर्णन किया, जिनके कारण नरेशों को कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती थीं। इन दोषों की जाँच के लिए तथा उन्हें दूर करने के लिए महाराजा ने विशेषज्ञों की सभा नियुक्त करने का प्रस्ताव किया। इसके अतिरिक्त आपने नरेशों की सभा बुलाने का भी प्रस्ताव किया। आपने कहा कि इस प्रकार की सभा में नरेश-गण अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे। यह सभा बुलाने का प्रस्ताव आप पहले १९१४ ई० में भी कर चुके थे। आपने कहा कि, "युद्ध के कारण इस प्रकार की सभा बुलाने का अच्छा अवसर है। भारतीय नरेश तथा भारतीय राज्यों की प्रजा को पूर्ण विश्वास है कि

यह प्रार्थना निष्फल नहीं होगी एवं उनकी यह उत्कट अभिलाषा पूर्ण होगी"।

महाराजा स्वयं लॉर्ड हार्डिङ्ग के पास गए। वाइसराय महाराजा के प्रस्तावों से बहुत प्रभावित हुआ तथा उसने अपनी सहानुभूति प्रदर्शित की। महाराजाने बड़ी योग्यता से नरेशों की कठिनाइयों की ओर वाइसराय का ध्यान आकर्षित करवाया। लार्ड हार्डिङ्ग स्थिति की गम्भीरता तुरन्त समझ गए। नरेशों की साधारण शिकायतें तुरन्त दूर करदी गई। खरीतों में फिर से राज्योचित भाषा का प्रयोग होने लगा। देशीनरेशों की स्थायी संस्था स्थापित करने के पक्ष में भी वाइसराय ने अपनी सम्मति प्रकट की एवं भारत की सामयिक राजनैतिक स्थिति ने इस विचार को प्रोत्साहन दिया।

इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही भारत में राजनैतिक आन्दोलन हो रहा है। कुछ लोगों ने सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकारी दल की स्थापना की थी, पर लार्ड मिन्टो ने देशी नरेशों की सहायता से इन क्रान्तिकारियों का दमन कर दिया। १९०९ ई० में सरकार ने एक नियम बनाया। इसके अनुसार भारतीयों को भारत के शासन में कुछ अधिकार दिए गए। फलतः कांग्रेस (राष्ट्र-सभा) दो दलों में विभाजित होगई। सर फीरोजशाह मेहता तथा श्री गोखले की अध्यक्षता में कांग्रेस के उदार दल ने सरकार का साथ दिया तथा इन सुधारों के अनुसार देश के शासन में भाग लिया। सरकार ने भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्त किया। इसका परिणाम यह हुआ कि १९१४ ई० में सरकार के प्रति जनता का अधिक विरोध न हुआ।

महायुद्ध के प्रारम्भ होते ही भारत के राजनैतिक आन्दोलन ने अपना रूप बदला। श्रीमती एनीबिसेंट ने मद्रास में स्वराज्य-आन्दोलन प्रारम्भ किया। यह एक अंग्रेज महिला थी। श्री तिलक ने इस आन्दोलन में सहयोग दिया था। अभाग्यवश युद्ध प्रारम्भ होने के कुछ समय बाद श्रीगोखले तथा सर फ़िरोजशाह मेहता का स्वर्गवास हो गया। अतः कांग्रेस में गरम दल ने जोर पकड़ा। इस दल का आशय भारत के लिए शीघ्र औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करना था। इस आन्दोलन को जनता ने प्रोत्साहन दिया.

इस राष्ट्रीय आन्दोलन के लोकप्रिय होने के अनेक कारण थे। बृटिश राजनीतिज्ञों ने अनेक बार कहा कि हम लोग प्रजासत्तात्मक राज्यों की रक्षाके लिऐ युद्ध में सम्मिलित हुए हैं। भारतीय इस युद्ध में तन, मन, धन से सहायता कर रहे थे। निर्बल राज्यों का रक्षा के लिए भारतवर्ष के योद्धा भिन्न २ युद्धक्षेत्रों में लड़ रहे थे। भारतीय नेता कहते थे कि जब हम दूसरों की अधिकार-रक्षा के लिए लड़ रहे हैं तो हमें भी अपने देश में अधिकार प्राप्त होने चाहिएँ। देश की आर्थिक स्थिति भी चिन्ता जनक थी। युद्ध के कारण प्रत्येक वस्तु का मूल्य बढ़ गया था। जनता को बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती थी। अतः श्रीमती एनीबिसेन्ट तथा श्री तिलक ने इस स्थिति से लाभ उठाकर जनता को स्वराज्य-आन्दोलन की ओर आकर्षित किया।

अधिकतर भारतीय नरेश इस आन्दोलन की महत्ता नहीं समझ सके, परन्तु महाराजा बीकानेर तथा कई और नरेशों ने इस आन्दोलन का महत्त्व समझ लिया। ये लोग सच्चे देश-भक्त थे। ये इस विचार से सहमत थे कि साम्राज्य

में भारत के सम्मान की वृद्धि होनी चाहिए। इनकी सम्मति में भारत तथा साम्राज्य का सम्बन्ध दृढ़ बनाए रखने के लिये शासन प्रणाली में परिवर्त्तन आवश्यक था।

महाराजा का विश्वास था कि बृटिश भारत में राजनैतिक सुधार आवश्यक है परन्तु साथ ही साथ उन उपायों का अवलम्बन भी आप आवश्यक समझते थे, जिनसे भारतीय नरेश अपने राज्यों में पहले से अधिक स्वतन्त्रता पूर्वक काम कर सकें एवं ऐसे कार्यों में भाग ले सकें जिनका प्रभाव रियासतों तथा बृटिश-भारत पर समान रूप से पड़ने वाला हो। इन सुधारों को ध्यान में रख कर ही आपने सरकार से प्रस्ताव किया था कि नरेशों के अधिकार की रक्षा की जाए तथा एक सभा स्थापित की जाए। इस प्रकार भारत की भलाई के लिये आप बृटिश भारत तथा रियासतों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे।

लॉर्ड हार्डिङ्ग अनुभवी एवं कुशल राजनीतिज्ञ था। वह कई कारणों से नरेशों की सभा स्थापित करने के पक्ष में था। पहले वह बृटिश भारत में होने वाले आन्दोलन की शक्ति नष्ट करना चाहता था। दूसरे वह एक ऐसी संस्था स्थापित करना चाहता था जिसमें रियासतों एवं बृटिश-भारत से सम्बन्ध रखने वाली बातों पर विचार किया जा सके। अतः १९१६ में उसने दिल्ली में नरेशों की सभा की। सरकार ने निश्चय किया कि यह सभा प्रति वर्ष बुलाई जाए।

इस सभा में प्रमुख नरेश एकत्रित हुए जिन में बड़ोदा, ग्वालियर, काश्मीर, भूपाल, कोल्हापुर, जयपुर, जोधपुर तथा

पटियाला नरेश थे। इनके अतिरिक्त अन्य राजे महाराजे भी थे। इस सभा की स्थापना के लिए महाराजा बीकानेर ने अथक परिश्रम किया था तथा सभा की कार्यवाही में आपने मुख्य भाग लिया था, अतः एकत्रित नरेशों ने सर्व सम्मति से आपको इस सभा का आनरेरी जनरल सेक्रेटरी बनाकर आपका सम्मान किया। इस सभा के कार्यों के विषय में हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे।

तीसरा पाठ

युद्ध-समिति

यूरोप में महायुद्ध भीषण रूप से चल रहा था। ऐसी अवस्था में सम्राट की सरकार ने इगलैंड तथा उपनिवेशों का सम्पर्क पूर्ववत् बनाए रखने के लिए एवं साम्राज्य की रक्षा के लिए १९१६ ई० में एक युद्ध-समिति बुलाने का निश्चय किया। इस समिति में बृटिश-साम्राज्य के प्रत्येक उपनिवेश के सदस्य सम्मिलित हुए। भारतवर्ष इस युद्ध में पूर्ण रूप से साम्राज्य की सहायता कर रहा था। अतः कतिपय राजनैतिक नेताओं ने विचार किया कि भारत के सदस्य भी इस समिति में परामर्श के लिए सम्मिलित होने चाहिएँ। भारत सरकार नेताओं के विचार से सहमत था। अतः जब १९१७ में इस समिति की बैठक हुई तो सम्राट् की सरकार ने भारत के भी तीन प्रतिनिधि इस सभा में निमंत्रित किये। भारत-सचिव भारतवर्ष के चौथे प्रतिनिधि बने। इन की अध्यक्षता में भारत के प्रतिनिधियों ने युद्ध-समिति में भाग लिया।

महाराजा की अवस्था इस समय केवल सैंतीस वर्ष की थी, परन्तु राजनैतिक क्षेत्र में इन्होंने ख्याति प्राप्त करली थी। ये अनुभवी शासक एवं कुशल राजनीतिज्ञ थे। अतः लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने आपको युद्ध-समिति में निमंत्रित करते हुए यह पत्र लिखाः—

वाइसराय कैम्प, इंडिया।

११।१२ जनवरी, १९१७

प्रिय महाराजा,

मैं यह जानने के लिए पत्र लिख रहा हूँ कि क्या आप साम्राज्य की युद्ध-समिति में सहयोग दे सकेंगे। इस समिति की बैठक लन्दन में अगले महीने में होगी। मुझे पूर्ण आशा है कि आप अवश्य स्वीकार करेंगे। यह परम आवश्यक है कि भारतीय नरेशों का एक प्रतिनिधि इस सभा में सम्मिलित हो क्योंकि उन नरेशों ने धन एवं जन से साम्राज्य की बहुत अधिक सहायता की तथा अनेक नरेश स्वयं भी युद्धस्थल में गए। कृपया इस विषय में किसी से न कहें। यदि आप निमंत्रण स्वीकार करें तो इस विषय में बिना कुछ लिखे हुए तार द्वारा केवल "हाँ" लिख भेजें। भारत-सचिव की आज्ञा मिलने पर प्रतिनिधियों के नाम प्रकट किये जाएंगे।

मेरा विचार है कि इस समिति की कार्यवाही में दो अथवा तीन सप्ताह लगेंगे।

आपका शुभ चिन्तक,
(हस्ताक्षर) चेम्सफोर्ड।

महाराजा ने समझ लिया कि आप बीकानेर अथवा भारतीय नरेशों के प्रतिनिधि के रूप में लन्दन नहीं जा रहे थे,

वरन् अपनी मातृ भूमि—भारत वर्ष के प्रतिनिधि होकर जा रहे थे। इस समय से इन के भाषणों में नवीन विचार प्रारंभ हुआ। लन्दन जाने से पूर्व भारतीय नरेशों ने बम्बई में आपको दावत दी। उस समय आपने भाषण देते हुए कहा कि, "हम लोग अपने बृटिश-भारत के बन्धुओं की महत्वपूर्ण आकांक्षाओं के लिये हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं।" आपके भाषण का सार यह था कि बृटिश-भारत ने अंगरेजों की छत्र-छाया में बहुत उन्नति की है, तथा युद्ध में पूर्ण सहयोग दिया है, अतः बृटिश-सरकार को चाहिए कि लड़ाई समाप्त हो जाने पर बृटिश-भारत के नेताओं की माँग पूरी करे एवं उन्हें शासनाधिकार दे।

एक भारतीय नरेश का इस प्रकार का भाषण देना बड़े साहस का काम था। किसी राजा अथवा महाराजा ने इससे पहले कभी ऐसे विचार प्रकट न किए थे। इस भाषण से यह बात प्रत्यक्ष हो गई कि भारतीय नरेश बृटिश-भारत की जनता की उचित माँगों से सहानुभूति प्रकट करते हैं, विरोध नहीं।

बृटिश-भारत के राजनैतिक क्षेत्र में इस भाषण ने गहरा प्रभाव डाला। कुछ पुराने विचार के मित्रों ने महाराजा को इस साहस पर उपालम्भ दिया तथा कुछ मित्रों ने इसे अनुचित भी बतलाया। बृटिश-भारत के राष्ट्रीय पत्रों ने हृदय से इस भाषण का स्वागत किया एवं मुक्त-कंठ से महाराजा की प्रशंसा की। वास्तव में यह भाषण बड़े महत्व का था क्योंकि इन्हीं विचारों के कारण बीस वर्ष बाद संघ-शासन की स्थापना हुई। इसके विषय में हम आगे पढ़ेंगे।

महाराजा अपने साथियों सहित फरवरी में लन्दन पहुँचे। पहले साम्राज्य के अन्य प्रतिनिधि इस पक्ष में नहीं थे कि भारत को साम्रज्य को युद्ध-समिति में प्रतिनिधित्व प्राप्त हो। परन्तु इंगलैंड के प्रधान मन्त्री श्री लॉयड जॉर्ज ने ऐसा नहीं होने दिया। अतः भारत के प्रतिनिधि उस समिति में सम्मिलित हुए। महाराजा बीकानेर ने इस सभा की कार्यवाही में प्रशंसनीय काम किया। इन के विषय में श्री लॉयड जार्ज ने अपने स्मृति-संग्रह (memoirs) में लिखा है कि, "महाराज बीकानेर—जिन्हें लोग प्रेम-वश साधारणतः बीकानेर के नाम से सम्बोधित करते थे—अपने देश के आदर्श पुरुष हैं। हम लोगों को शोघ्र ज्ञात हो गया कि पूर्व से आए हुए विद्वानों में उनका महत्व पूर्ण स्थान था। धीरे २ हम लोग प्रायः उनकी सलाह पर निर्भर रहने लगे, प्रधानतः भारत सम्बन्धी समस्याओं पर।"

भारत के प्रतिनिधियों का इंगलैंड में अनेक प्रकार से सम्मान तथा स्वागत हुआ। महाराजा को इस अवसर पर लन्दन-नगर की नागरिकता प्रदान की गई। एडिनबर्ग-विश्वविद्यालय ने आपको डाक्टर की उपाधि प्रदान की तथा बृटिश जनता ने भी अनेकों प्रकार से आपका आदर किया। प्रत्येक अवसर पर आपने अपने भाषणों में बृटिश राजनीतिज्ञों का ध्यान भारत की राजनैतिक स्थिति की ओर आकर्षित किया एवं भारतवासियों की उचित माँगें पूरी करने का उनसे पूर्ण अनुरोध किया। भारत-सचिव श्री ऑस्टिन चेम्बरलेन महाराजा के विचारों से बहुत प्रभावित हुये। उन्होंने महाराजा से भारत के राजनैतिक सुधार की आयोजना तैयार करने का

अनुरोध किया। महाराजा ने इस अवसर से लाभ उठाया और इस विषय में भारत-सचिव के पास एक विस्तृत योजना तैयार करके भेजी। दो कारणों से इस योजना का विशेष महत्त्व है। पहला, भारतीय नरेश की तैयार की हुई यह सर्व प्रथम योजना है, जिसमें भारत के राजनैतिक सुधारों के विषय में विचार व्यक्त किये गए हैं। दूसरा, इस योजना के आधार पर भारत-सचिव ने २० अगस्त सन् १९१७ई० को भारत में राजनैतिक सुधार करने की घोषणा की। अपनी योजना में महाराजा ने चार बातों पर जोर दिया।

(१) बृटिश-सरकार शीघ्र यह घोषणा करे कि सरकार का ध्येय भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य स्थापित करना है।

(२) बृटिश भारत में शीघ्र शासन-सुधार किया जाए।

(३) भारत की केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारों के अधिकार बढाए जाएँ और उन्हें अधिक स्वतंत्रता मिले।

(४) भारतीय नरेशों, रियासतों तथा उनकी प्रजा के हित के लिए शीघ्र एक स्थायी संस्था स्थापित की जाए जिसमें उन सब समस्याओं पर विचार किया जा सके जिनका सम्बन्ध बृटिश-भारत एवं रियासतों से हो।

इन चारों बातों के देखने से ज्ञात हो जाता है कि २० अगस्त सन् १९१७ को घोषणा करते समय भारत-सचिव महाराजा की योजना से प्रभावित हुआ था।

बृटिश-सरकार महाराजा के कार्यों से अत्यन्त प्रसन्न हुई। अतः १९१८ में महाराजा को लार्ड चेम्सफोर्ड ने युद्ध समिति में आने का फिर निमन्त्रण दिया परन्तु इस बार महाराजा कार्यवश न जा सके।

भारत लौटने पर महाराजा भारतीय नरेशों की सभा स्थापित करने के प्रयत्न में संलग्न हो गए। आप जानते थे कि शीघ्र ही भारत में शासन-सुधार होगा। ऐसे समय पर आपने नरेशों के हित एवं अधिकारों की रक्षा का निश्चय किया। इस अभिप्राय से आपने कई नरेशों तथा रियासतों के मंत्रियों को निमन्त्रित किया। आपने बृटिश-भारत के कई प्रमुख राजनीतिज्ञों को बीकानेर बुलाया और एक सभा की। इस सभा ने एक उप-समिति नियुक्त की। इसके सदस्य ग्वालियर पटियाला, अलवर तथा नवानगर के महाराजा चुने गए। इस सभा में सर एम० विश्वेश्वरय्या, सर मनु भाई मेहता, कर्नल हक्सर तथा सर दयाकिशन कौल जैसे अनुभवी मन्त्री भी उपस्थित थे।

इस सभा के कार्य के विषय में हम यथास्थान इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

चौथा पाठ

वरसाई की संधि

पिछले पाठों में हम लोग यूरोपीय महायुद्ध के विषय में बहुत कुछ पढ़ चुके हैं। इस युद्ध में भारतवर्ष ने इंग्लैंड की तन, मन, धन से सहायता की। लगभग साढ़े चार वर्षों तक भीषण नर-संहार के पश्चात् ११ नवम्बर १९१८ ई० को युद्ध बन्द करने की घोषणा हुई तथा संधि की शर्तें निश्चित करने की बात चीत होने लगी। सम्राट् की सरकार ने भारतवर्ष के प्रतिनिधियों को भी इस संधि-चर्चा में सम्मिलित करने

का विचार प्रकट किया। अतः वाइसराय ने तार द्वारा माहाराजा को इंग्लैंड जाने का अनुरोध किया। वास्तव में साम्राज्य की युद्ध-समिति में महाराजा के कार्यों एवं प्रतिभा से इंग्लैंड का प्रधान मंत्री, लायड जॉर्ज, इतना प्रभावित हुआ था कि उसने स्वयं वाइसराय से यह इच्छा प्रकट की कि महाराजा संधि सभा में भारतवर्ष के प्रतिनिधि रहें। भारत-वर्ष के दूसरे प्रतिनिधि सर एस० पी० सिनहा नियुक्त हुए। ये लोग 'डफरिन' नामक जहाज़ से इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। इस यात्रा में महाराजा ने नरेन्द्र-मंडलकी स्थापना के लिए बुद्धिमत्ता-पूर्ण एक लेख तैयार किया जिसका वृत्तान्त हम यथा स्थान पढ़ेंगे।

जिस समय महाराजा इंगलैंड पहुंचे, उस समय वहाँ पार्लियामेंट के सदस्यों का चुनाव हो रहा था। इस चुनाव के कारण देश भर में हल चल सी मच रही थी। विभिन्न दल अपनी २ विजय के प्रयत्न में थे। इस कारण महाराजा को लन्दन में कई सप्ताह तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। अन्त में लॉयड जॉर्ज के दल की विजय हुई।

पहली जनवरी सन् १९१९ ई० को सम्राट पंचम जॉर्ज ने महाराजा को संधि-सभा में भारत के प्रतिनिधि होकर सम्मिलित होने का अधिकार-पत्र दिया। इस संधि-सभा में भारत की ओर से तीन प्रतिनिधि थे। (१) भारत सचिव श्री एडविन मांटेग्यू, (२) महाराजा बीकानेर तथा (३) लार्ड सिनहा। साम्राज्य के अन्य प्रतिनिधियों सहित ये लोग पेरिस पहुँच गए। संधि-सभा का मुख्य कार्य चार महान व्यक्तियों के अधिकार में था। (१) एम: क्लिमैंशू (२) राष्ट्रपति विल्सन

(३) श्री लॉयड जार्ज तथा (४) श्री आरलैंडो। इन चारों के हाथ में सभा का पूर्ण अधिकार रहने पर भी श्री लॉयड जार्ज हर कार्य में बृटिश साम्राज्य के प्रतिनिधियों से सलाह लेते थे। इस परामर्श में महाराजा ने पूर्ण सहयोग दिया। भारत वर्ष के प्रतिनिधियों को सब से पहले जिस समस्या का सामना करना पड़ा, वह थी भारत का राष्ट्र-संघ में प्रतिनिधित्व प्राप्त करना। बृटिश-साम्राज्य के अन्य प्रतिनिधियों ने भी भारतवर्ष को राष्ट्र-संघ में सम्मिलित करने के विचार का विरोध किया क्योंकि भारतवर्ष स्वतंत्र नहीं है। इस मत के विरुद्ध लार्ड सिनहा ने योग्यता पूर्ण युक्तियाँ भारत सचिव के पास लिख भेजी थीं। महाराजा ने भी इस सम्बन्ध में अपनी युक्तियों द्वारा प्रमाणित कर दिया कि भारतवर्ष को राष्ट्र-संघ में प्रतिनिधित्व प्राप्त होना चाहिए। इस विषय पर सभा में बहुत वाद-विवाद के पश्चात् निश्चय हुआ कि भारत वर्ष राष्ट्र-संघ का सदस्य रहेगा। महाराजा के समयोचित परिश्रम एवं योग्यतापूर्वक कार्य संचालन का ही परिणाम था कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारतवर्ष ने सम्मान प्राप्त किया।

भारत के प्रतिनिधियों को संधि-सभा में एक दूसरी जटिल-समस्या का सामना करना पड़ा। युद्ध में तुर्की ने जर्मनी का साथ दिया था और अंत में जर्मनी की भाँति इसे भी हार खानी पड़ी। संधि के समय इंगलैंड तथा फ्रांस ने तुर्की-राज्य के अनेक भागों का आपस में बटवारा करने का निश्चय किया। इस घटना से भारतवर्ष के मुसलमान बहुत उत्तेजित हुए। महात्मा गांधी के नेतृत्त्व में हिन्दू नेताओं ने भी मुसलमानों के साथ सहानुभूति प्रकट की। भारतवर्ष

के मुसलमानों का यह आन्दोलन ख़िलाफ़त-आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध है। इनका अभिप्राय तुर्की-राज्य को छिन्न-भिन्न होने से बचाना था। संधि-सभा में भारत के दोनों प्रतिनिधि हिन्दू थे, परन्तु उन्होंने सदैव मुसलमानों की माँग का ध्यान रक्खा।

भारत के मुसलमानों ने महाराजा को इस सम्बन्ध में तार भेजा तथा प्रार्थना की कि तुर्की के साथ कठोरता का व्यवहार नहीं होना चाहिए। महाराजा ने भारत-सचिव की सलाह से तार का उत्तर देकर मुसलमानों को आश्वासन दिलाना चाहा परन्तु भारत-सरकार इस विषय में सहमत नहीं हुई। संधि-सभा में महाराजा तथा लार्ड सिनहा ने इस बात का बहुत प्रयत्न किया कि तुर्की के साथ कठोर व्यवहार न किया जाय परन्तु इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया क्योंकि लायड जॉर्ज तुर्की के विरुद्ध था। तुर्की साम्राज्य का महान् शक्तियों ने आपस में बटवारा कर लिया तथा उस के राज्य का बहुत सा भाग यूनान को दे दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि तुर्कों में जोश भर गया। तीन साल के भीतर ही उन्होंने यूनान को हरा कर अपना राज्य उससे वापिस ले लिया।

संधि-सभा में जापान के प्रतिनिधि ने प्रस्ताव किया कि संसार की सब जातियाँ समान समझी जानी चाहिएँ। राष्ट्रपति विल्सन ने इसका घोर विरोध किया। भारतवर्ष के अतिरिक्त साम्राज्य के दूसरे उपनिवेशों ने भी जापान के प्रस्ताव का विरोध किया। भारत के प्रतिनिधि भली प्रकार जानते थे कि इस प्रश्न को लेकर भारतीयों पर अनेक प्रतिबंध लगाये

जाते हैं जिसके कारण उनको अनेकों कष्ट उठाने पड़ते हैं। इसी विचार से भारतीय प्रतिनिधियों ने जापान के प्रस्ताव का समर्थन किया। इस कार्य में लॉर्ड सिनहा को अधिक परिश्रम करना पड़ा परन्तु महाराजा ने उनको पूर्ण सहयोग दिया।

संधि-सभा में राष्ट्रपति विलसन ने प्रस्ताव किया कि मजदूरों के काम करने का समय निश्चित कर देना चाहिए। महाराजा जानते थे कि इस प्रकार परिवर्तन एकाएक भारत में नहीं किया जा सकता। अतः महाराजा ने अपने भाषण में स्पष्टतया प्रकट कर दिया कि भारतीय रियासतों में बाहरी नियम नहीं लागू हो सकते। इस कार्यवाही से महाराजा ने भारतीय रियासतों के नियम बनाने की स्वतंत्रता की रक्षा की।

इस स्थान पर भारतवर्ष के राजनैतिक सुधारों के सम्बन्ध में एक घटना का वर्णन कर देना आवश्यक है। १९१९ ई० की ग्रीष्म ऋतु में मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार की धाराएं पत्रों में प्रकाशित हुईं। कुछ साम्राज्यवादी अंगरेजों ने लॉर्ड सिडेनहम की अध्यक्षता में इन प्रस्तावों का घोर विरोध किया। इन लोगों ने इंडो बृटिश-एसोसिएशन नाम की एक संस्था बनाई और स्थान स्थान पर भारत-सम्बन्धी सुधारों के विरुद्ध व्याख्यान दिए। इन लोगों का कहना था कि भारतवर्ष के राजे महाराजे इन सुधारों को नहीं चाहते। इन लोगों ने यह भी कहा की लॉर्ड सिनहा के सहकारी भारत-सचिव नियुक्त होने पर भारतीय नरेश अप्रसन्न हैं। इन व्याख्यानों को पढ़ कर महाराजा ने निश्चय किया कि इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करके इंडो-बृटिश-एसोसिएशन की पोल खोलनी चाहिये अन्यथा भारतीय नरेशों को इस

संस्था के सदस्य व्यर्थ बदनाम करते फिरेंगे। इस विचार से महाराजा पेरिस से लन्दन आये। वहाँ लॉर्ड सिनहा के मित्रों ने उन के सम्मानार्थ एक भोज दिया जिसमें महाराजा सभापति बने। आपने अपने भाषण में इंडो-बृटिश-एसोसिएशन की बातें झूठी प्रमाणित करते हुए इस संस्था के सदस्यों की अच्छी खबर ली। आपने यह भी कहा कि भारत के नरेश कदापि सुधारों के विपक्षी नहीं हैं।

महाराजा के वक्तव्य ने साम्राज्य-वादियों की आँखे खोल दी। बहुतों ने यह कहना प्रारंभ करदिया कि महाराजा अंगरेज़ों के विरुद्ध हैं। यह सुन कर आपको दुःख हुआ क्योंकि आप अंगरेज़ों के परम मित्र एवं बृटिश-साम्राज्य के स्तम्भ थे। आपने अपने विरुद्ध इस प्रकार के षड़यंत्र का समाचार सम्राट् की सरकार से कह दिया।

इस यात्रा में ऑक्सफोर्ड-विश्वविद्यालय ने महाराजा को डी० सी० एल० की पदवी प्रदान करके आपका सम्मान किया। जुलाई में महाराजा भारत लौटे। बम्बई में बड़े समारोह के साथ आपका स्वागत हुआ। वाइसराय ने तथा अन्य नरेशों ने आप को तार द्वारा बधाई दी तथा आपके कार्य की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की।

पांचवाँ पाठ

नरेन्द्र-मंडल

हम इस पुस्तक के प्रथम भाग में पढ़ चुके हैं कि महाराजा गंगासिंह जी प्रारंभ से ही भारतीय नरेशों की एक

स्थायी सभा स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे। महायुद्ध एवं तत्कालीन राजनैतिक स्थिति ने इस योजना को प्रोत्साहन दिया। बृटिश-सरकार ने भारतीय नरेशों का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना आवश्यक समझा। अतः लॉर्ड हार्डिङ्ग ने १९१६ ई० में भारतीय नरेशों की एक सभा बुलाई।

यह सभा दिल्ली में हुई। पहले कभी भारतीय नरेशों की इस प्रकार की सभा नहीं हुई थी। इस सभा में विभिन्न कार्यों पर विचार किया गया। राज्यारोहण के समय के कृत्य, नाबालिगी के समय शासन-प्रबन्ध तथा नाबालिग की शिक्षा का प्रबन्ध इत्यादि अनेक विषयों पर इस सभा में विचार किया गया। कुछ लोगों को इस सभा की सफलता में संदेह था, इस सभा का उद्घाटन करते समय वाइसराय ने कहा कि रियासतों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों पर विचार करने के लिए तथा भारत सरकार की सहायता के लिए नरेशों की यह पहली सभा है। कुछ समय बाद इस सभा में भाषण देते समय लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने कहा कि नरेशों, उन के राज्यों तथा उनकी प्रजा के विषय में भारत सरकार इस सभा से परामर्श लेना चाहती है और इसी लिए यह सभा स्थापित हुई है।

इस सभा के प्रमुख कार्यकर्त्ता महाराजा बीकानेर, ग्वालियर के महाराजा माधव राव सिंधिया, महाराजा पटियाला, नवानगर के महाराजा रंजीतसिंहजी तथा अलवर के महाराजा जयसिंहजी थे। सर्व सम्मति से महाराजा गंगासिंहजी इस सभा के जनरल सेक्रेटरी चुने गये। उस समय सर जॉनवुड भारत सरकार का पोलिटिकल सेक्रेटरी था। उसने देशी शासकों के गद्दी बैठने के अधिकार के सम्बन्ध में

एक पत्र में लिखा कि प्रत्येक शासक को सिंहासन ग्रहण करते समय भारत सरकार की स्वीकृति लेनी होगी। इस बात का शासकों की सभा ने घोर विरोध किया। यदि किसी रियासत में गद्दी के लिये झगड़ा हो तो भारत सरकार को झगड़े का निबटारा करने का अधिकार है, परन्तु जब किसी शासक का पुत्र गद्दी का उत्तराधिकारी है तो फिर बृटिश-सरकार की स्वीकृति लेना निराधार है। इस नीति का पालन करने का यह परिणाम होता कि कभी २ उचित उत्तराधिकारी को भी सिंहासन न मिलता। इस लिए तमाम शासकों ने सर जॉनवुड के इस प्रस्ताव का विरोध किया। महाराजा ने भारत-सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए लिखा कि इस प्रकार की नीति का परिणाम बुरा होगा। महाराजा ने हिन्दू शास्त्रों के प्रमाण से सिद्ध कर दिया कि सिंहासन कभी रिक्त नहीं रह सकता। ज्योंही किसी शासक का स्वर्गवास होता है त्योंही उसका उत्तराधिकारी शासक हो जाता है।

सिंहासनारोहण के विषय में इस सभा ने यह प्रस्ताव पास किया कि हिन्दू शासक की मृत्यु पर हिन्दू नियमानुसार उस शासक का उत्तराधिकारी शासक होगा, मुसलमान शासक की मृत्यु पर मुसलमानी नियमानुसार उस शासक का उत्तराधिकारी शासक बनेगा, तथा किसी शासक के निस्सन्तान मरने पर गोद लेने की शर्तों के अनुसार उत्तराधिकारी नियुक्त होगा। इस सभा ने साथ ही यह भी स्वीकार किया कि यदि सिंहासन के लिए झगड़ा हो तो बृटिश-सरकार सिंहासन का उचित उत्तराधिकारी नियुक्त

करेगी। एक प्रस्ताव द्वारा यह भी निश्चय किया गया कि शासक की नाबालिग़ी में किस प्रकार राज्य प्रबन्ध होना चाहिए। भारत सरकार ने यह निश्चय स्वीकार किया।

इस सभा की सफलता का श्रेय महाराजा श्री गंगासिंह जी को है। जनरल सेक्रेटरी होने के कारण सभा का सब प्रबन्ध आप को ही करना था। अन्य शासक आपकी कार्य-कुशलता से बहुत प्रभावित हुए और सर्व सम्मति से आप फिर आगामी वर्ष के लिए भी जनरल सेक्रेटरी चुने गए। नवानगर के महाराजा रंजीतसिंह जी ने आपकी प्रशंसा करते हुए कहा कि महाराजा बीकानेर ने इस सभा के स्थापित करने में पूर्ण सहयोग दिया एवं अपने उत्साह और राजनैतिक बुद्धिमत्ता से शासकों की भलाई का निरन्तर प्रयत्न किया।

अगले वर्ष १९१७ ई० में इस सभा की बैठक फिर हुई। इस बार महाराजा ने पहले से भी अधिक उत्साह एवं योग्यता से कार्य संचालन किया। आपने लन्दन में साम्राज्य की युद्ध समिति में अपनी नीतिनिपुणता का परिचय दिया। अब आपका यश दूर २ तक फल गया। इस वर्ष की सभा विशेष महत्व की थी। बृटिश-भारत में राजनैतिक सुधार होने वाले थे। जनता को राजकार्य में विशेष अधिकार मिलने वाले थे। इसका प्रभाव देशी रियासतों पर भी अवश्य पड़ता। शासकों ने इस सभा में अपनी भविष्य की नीति निश्चित करना उचित समझा। कुछ भारतीय नरेश इस पक्ष में नहीं थे कि बृटिश-भारत की जनता के अधिकर बढ़ाए जायँ। परन्तु महाराजा इस मत के नहीं थे। हम पहले पढ़ चुके हैं कि आपने भारतीय जनता के अधिकार बढ़ाने

के लिए बृटिश-सरकार से प्रार्थना की थी और इसी के परिणामस्वरूप बृटिश-सरकार भारतीयों को राजनैतिक अधिकार देने के लिए सहमत हुई। आपका विचार था कि बृटिश-भारत में परिवर्तन के साथ ही साथ रियासतों की पुरानी प्रणाली में भी परिवर्तन होना चाहिए। इस विचार से आपने वाइसराय को एक स्थायी नरेन्द्र-मण्डल स्थापित करने के लिए लिखा। आपने साथ ही यह भी लिखा कि सरकार को रियासतों के प्रति उदार नीति का पालन करना चाहिए तथा वे सब दोष दूर करने चाहिएँ, जिनके कारण देशी शासकों के अधिकारों में सरकार द्वारा हस्तक्षेप हुआ हो।

वाइसराय तथा अन्य सरकारी अफ़सर स्थायी रूप से शासकों की सभा स्थापित करने के पक्ष में नहीं थे, परन्तु महाराजा ने अन्य अनुभवी शासकों के सहयोग से नरेन्द्र-मंडल स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न किया। आपने इस सम्बन्ध में शासकों का एक सभा बीकानेर में बुलाई थी जिसका वृतान्त हम पहले पढ़ चुके हैं। दूसरी बार पटियाला में फिर सभा हुई। इस सभा में बीकानेर की सभी योजनाओं का समर्थन हुआ। जब भारत मंत्री श्री मांटेग्यू भारतवर्ष आए महाराजा ने उनसे नरेन्द्र-मंडल स्थापित करने के विषय में बातचीत की। भारत मंत्री ने महाराजा के प्रस्ताव का समर्थन किया। अतः नये कानून के अनुसार नरेन्द्र-मंडल की स्थापना हुई, परन्तु इस का उद्घाटन कुछ समय तक नहीं होसका। वे तमाम रियासतें इस मंडल की सदस्य हो सकती हैं, जिन्हें ११ तोपों की सलामी का सम्मान प्राप्त है, इसके अतिरिक्त ९ तोपों की सलामी वाली रियासतें भी अपने सदस्य चुनकर इस सभा में भेज सकती हैं।

नरेन्द्र-मंडल की स्थापना का पूर्ण श्रेय महाराजा को है। सब से पहले आपने इसकी स्थापना का प्रस्ताव किया। इसके बाद आपने छः वर्ष तक इसके लिए सतत प्रयत्न किया और जब लन्दन में इस विषय में नियम इत्यादि बन रहे थे तो आपने पूर्ण सहयोग दिया।

छठा पाठ

नरेन्द्र-मण्डल के प्रधान

पिछले पाठ में हम पढ़ चुके हैं कि महाराजा के अदम्य उत्साह एवं अनवरत परश्रम के फलस्वरूप बृटिश सरकार ने नरेन्द्र मण्डल स्थापित करना निश्चित किया। इस सम्बन्ध में सरकार ने एक नियम बनाया। ८ फरवरी १९२१ ई० को दिल्ली-किले में स्थित मुग़लों के प्रसिद्ध दीवाने-आम में ड्यूक ऑफ कनॅाट ने सम्राट् की ओर से नरेन्द्रमण्डल का उद्घाटन किया। सर्व प्रथम सम्राट् पंचम जार्ज की घोषणा पढ़ी गई। ड्यूक ऑफ कनॉट ने इस अवसर पर अपने भाषण में भारतीय नरेशों की महायुद्ध में की गई सहायता की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की।

नरेन्द्र-मंडल के स्थापित हो जाने पर भारतीय नरेशों ने महाराजा श्रीगंगासिंहजी को इस सभा का पहला चांसलर अर्थात् प्रधान चुना। भारतीय नरेशों ने कई कारणों से आप को यह सम्मान प्रदान किया। इसके पहले आप शासकों की अस्थायी सभा का कार्य संचालन कर चुके थे और आपको सार्वजनिक कार्यों का अनुभव था। आप की

व्यक्तिगत योग्यता से सब लोग परिचित थे। अतः महाराजा को नरेन्द्र-मण्डल का चांसलर बनाकर सब नरेशों ने यह सिद्ध कर दिया कि इस सभा की स्थापना का श्रेय आप को ही है और आप ने ही इसकी स्थापना का सब से अधिक प्रयत्न किया है। आप की सहायता के लिये शासकों की एक उप-समिति बनी। महाराजा ग्वालियर, महाराजा पटियाला, महाराजा कच्छ तथा महाराजा नवानगर इस उप-समिति के सदस्य चुने गये।

प्रारम्भ में नरेन्द्र-मण्डल को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कुछ प्रधान रियासतें इस मण्डल के विरुद्ध थीं। इस मण्डल के सदस्यों के चुनाव के विषय में आपस में मत भेद था। दलबन्दी की भी कठिनाई थी जो सार्वजनिक संस्थाओं में प्रायः उत्पन्न हो जाती है। परन्तु इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी नरेन्द्र-मंडल ने अनेकों लाभ-प्रद कार्य किये। रियासतों और बृटिश-सरकार के आपस के सम्बन्ध निश्चित किए गए। और भी अनेक नियम बने जिनसे बृटिश-सरकार से सन्धि अथवा अन्य किसी प्रश्न के सम्बन्ध में किसी प्रकार का संदेह न रह जाए। नरेन्द्र-मण्डल एक ऐसी संस्था है जहाँ शासकगण सार्वजनिक कार्यों का अनुभव प्राप्त कर सकें। इसके अतिरिक्त इस सभा से सब से बड़ा लाभ यह हुआ कि आपस में मिल कर कार्य करने से नरेशों में ऐक्य और संगठन के भाव जागृत हुए। यहां पर यह कहना असंगत नहीं होगा कि नरेन्द्र-मंडल में अखिल-भारतीय प्रश्नों पर विचार करने के कारण आगे चलकर राजनैतिक उन्नति हुई तथा भारतीय नरेशों ने संघ-शासन मे भाग लेना

स्वीकार किया।

नरेन्द्र-मंडल को एक सब से बड़ी कठिनाई का सामना करना था। अभी तक यह निश्चय नहीं हुआ था कि चांसलर का क्या कार्य होगा। यह भी निश्चित नहीं था कि मंडल में किस प्रकार कार्य संचालन होगा। चांसलर की सहायता के लिये न तो कोई दफ़्तर था और न मंडल में कोई स्थायी कोष था। ऐसी परिस्थिति में चांसलर के पद को शक्ति संपन्न एवं प्रभाव शाली बनाये रखने के लिए नीति-कुशलता और कार्य-पटुता की आवश्यकता थी। अतः प्रारम्भ में महाराजा को नरेन्द्र-मंडल के कार्य-संचालन के लिए अपने निजी दफ़्तर से सहायता लेनी पड़ी और अपने निजी कोष से मंडल की सफलता के लिए पर्याप्त धन खर्च करना पड़ा। इन कठिनाइयों से महाराजा विचलित नहीं हुए। आपने अपनी कार्य कुशलता से इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की और नरेन्द्र-मंडल को सफल बनाया। जिस प्रकार आपने मंडल के जनरल सेक्रेटरी रहते हुए सुचारु रूप से कार्य संचालन किया था उसी प्रकार चांसलर रहते हुए भी किया। नरेन्द्र मंडल के कार्य की सफलता के लिए आप अपने व्यक्तित्व की तनिक भी चिंता नहीं करते थे, क्योंकि आप भली प्रकार जानते थे कि सभा की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि शासकों में आपस में किसी प्रकार का वैमनस्य न उत्पन्न होने पाए। इस नीति को ध्यान में रख कर आप सदा सभाओं में किसी प्रधान नरेश को सभापति बनाते थे। नरेन्द्र-मंडल की बैठक में भी वाइसराय के भाषण का उत्तर देने के लिए आप किसी प्रधान नरेश से ही प्रार्थना करते थे।

नरेन्द्र-मंडल की बैठक के सम्बन्ध में एक विशेष कठिनाई थी, इस सभा का वाइसराय सभापति होता था और केवल शासक-गण इसमें सम्मिलित होते थे। नरेशों के मन्त्री इस सभा में नहीं उपस्थित हो सकते थे। अनेकों नरेशों को सार्वजनिक सभाओं में भाषण इत्यादि का अनुभव नहीं था। अत: वे सभा में बोलने से हिचकते थे। इस कठिनाई को दूर करने के लिए महाराजा ने गैर-सरकारी तौर पर शासकों की सभा करने का निश्चय किया। इन सभाओं में मंत्री-गण भी सम्मिलित हो सकते थे। इन सभाओं से बड़ा लाभ हुआ।

नरेन्द्र-मंडल के प्रारम्भिक दिनों में भारतवर्ष में राजनैतिक आंदोलन चल रहा था। इस के कई कारण थे। वृटिश भारत के नेता राजनैतिक सुधारों से संतुष्ट नहीं थे। पंजाब की "जलियानवाला बाग़" को दुर्घटना के कारण राष्ट्रवादी बहुत असंतुष्ट थे। इसी समय तुर्की के प्रति इंगलैंड-सरकार की नीति के कारण भारतवर्ष के मुसलमानों में भी असंतोष फैला था। इन कारणों से गांधीजी की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय आंदोलन हुआ। यह असहयोग-आंदोलन के नाम से प्रसिद्ध है। देश भर में इस आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा। इस आंदोलन तथा १९१९ के राजनैतिक सुधारों के कारण रियासतों को शासन सम्बधी एवं आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अनेक दुर्घटनाओं के कारण शासकों ने समझा कि धीरे २ क्रांतिकारी दल के बढ़ने की आशंका है। अतः अपनी रियासतों के हित के लिये भारतीय-नरेश रियासतों के प्रति सरकार की नीति निश्चित रूप से जानना चाहते थे। महाराजा ने इस विषय में १८ मई सन् १९११ ई०

को वाइसराय लार्ड रीडिंग को एक पत्र लिखा। इस पत्र में आपने भारतीय-नरेशों की एक गोलमेज़-सभा करने का प्रस्ताव किया इसके अतिरिक्त और भी अनेक शासन सम्बन्धी प्रश्न थे जिनका निबटारा आवश्यक था। इन में मुख्य प्रश्न था भारत-सरकार का रियासतों से संबंध।

कुछ रियासतें ऐसी थीं जिनका वाइसराय से सम्बन्ध रेज़िडेंट के ज़रिये था, परंतु राजपूताने को रियासतों को विशेष कठिनाई थी। प्रत्येक बड़ी रियासत में एक पोलिटिकल एजेंट होता था। इसके बाद सारे राजपूताने का एक प्रधान एजेंट था जो गवरनर जनरल का एजेंट कहलाता था और अजमेर तथा माउँटआबू में रहता था। नरेशों का वाइसराय से पत्र व्यवहार इन अफ़सरों के ज़रिए ही होता था। इससे विम्लब अधिक होता था। महाराजा ने इस सम्बन्ध में भी वाइसराय को लिखा कि नरेशों का उन से पत्र व्यवहार केवल एक अफ़सर के ज़रिये ही होना चाहिए। ऊपर लिखी सब कठिनाइयाँ नरेशों की गोलमेज़-सभा में सरलता द्वारा दूर की जा सकती थीं। इसीलिये महाराजा ने इस सभा का प्रस्ताव किया था। यद्यपि लार्ड रीडिंग महाराजा के सिद्धांत से सहमत था फिर भी वह इस प्रकार सभा करने को तैयार नहीं हुआ। लार्ड रीडिंग का मत था कि इन सब प्रश्नों पर नरेंद्र-मंडल की सभा में विचार हो सकता है।

इन सब कठिनाइयों के कारण महाराजा के नेतृत्व में नरेन्द्र-मंडल का कार्य बहुत महत्व का है। हम पहले पढ़ चुके हैं कि नरेन्द्र-मंडल ने अनेकों लाभप्रद कार्य किये। इनके अतिरिक्त अनेक प्रश्नों पर विचार किया गया और

वाद-विवाद हुए। नरेशों का संगठन-कार्य प्रारम्भ हुआ तथा महाराजा के नेतृत्व में संगठन में उपयुक्त उन्नति हुई। अपनी राजनैतिक बुद्धिमत्ता से महाराजा ने ऐसी योग्यता से कार्य संचालन किया कि बृटिश-सरकार एवं देशी नरेशों को यह विश्वास हो गया कि नरेन्द्र-मंडल से दोनों को ही लाभ है। मंडल के कार्य संचालन में महाराजा को अपने प्राईवेट सेक्रेटरी से कार्य लेना पड़ा। इससे स्पष्ट है कि नरेन्द्र-मंडल की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ महाराजा को झेलनी पड़ीं।

सन् १९२६ में महाराजा ने चांसलर-पद को त्याग दिया। इस अवसर पर भारतीय नरेशों ने अपनी कृतज्ञता प्रकट कर आपके कार्यों की प्रशंसा की एवं एक स्वर्णपट आप को भेंट स्वरूप दिया। नरेन्द्र-मंडल की बैठक में महाराजा-पटियाला ने आप की प्रशंसा में एक प्रस्ताव पेश किया। महाराजा-काश्मीर ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। वायसराय लॉर्ड रीडिंग ने इस अवसर पर अपने भाषण में महाराजा की प्रशंसा करते हुए कहा कि, "जिस योग्यता तथा कार्य-पटुता से महाराजा ने चांसलर का काम किया है उस प्रकार किसी भविष्य के चांसलर के लिये काम करना कठिन है। नरेन्द्र-मंडल ने जो सफलता प्राप्त की है अथवा जो सफलता भविष्य में प्राप्त करेगा वह महाराजा बीकानेर के कठिन परिश्रम का फल है। नरेन्द्र-मण्डल की स्थापना तथा उसके प्रारम्भिक कार्य की कठिनाइयों का आपको सामना करन पड़ा है। इस मंडल की कार्यवाही मैंने विशेष रूप से देखी है अतः आप लोगों के प्रस्ताव का मैं हार्दिक समर्थन करता हूँ।"

सातवाँ पाठ

शासन-सुधार

महाराजा के शासन-काल के आरम्भ से रजत-जयंती तक का समय बीकानेर राज्य को संगठित और सुव्यवस्थित करने का समय था। रजत-जयंती के पश्चात् महाराजा ने जो शासन-सुधार किए, उनका आशय था राज की प्रजा को राज्य-प्रबन्ध में अधिकार देना तथा शासन को बृटिश-भारत के शासन के समान उदार बनाना। इस सम्बन्ध में सबसे महत्व का सुधार था बीकानेर-लेजिस्लेटिव एसेम्बली (व्यवस्थापिकासभा) की स्थापना। इस संस्था के स्थापित करने की घोषणा महाराजा ने रजत-जयंती पर कर दी थी परन्तु पूर्णरूप से नियम इत्यादि बनाने में कुछ समय लगा। इन नियमों के विषय में पूर्णरूप से विचार करना आवश्यक भी था, क्योंकि राजपूताना में इस प्रकार की संस्था किसी रियासत में नहीं थी। नियम इत्यादि बन जाने पर १० नवम्बर सन् १९१३ ई० को महाराजा ने स्वयं इस सभा का उद्घाटन किया।

इस सभा में ३५ सदस्य थे। इनमें ६ राज्य के मंत्री थे, १९ सरकार द्वारा निर्वाचित होते थे तथा १० प्रजा द्वारा चुने जाते थे। इस सभा को पर्याप्त अधिकार प्राप्त थे। यह प्रस्ताव पास कर सकती थी, सरकार से प्रश्न पूछ सकती थी तथा नए नियम बना सकती थी। महाराजा को इन नियमों को स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने का अधिकार था। वास्तव में इस सभा को वे सब अधिकार प्राप्त थे जो मिन्टो-मार्ले सुधारों के अनुसार भारतीय-लेजिस्लेटिव-कौंसिल को

प्राप्त थे। इस सुधार का महत्व यह था कि प्रजा को राज्य-व्यवस्था में अधिकार मिला।

हम पहले पढ़ चुके हैं कि उत्तरी भारत की किसी भी रियासत में उस समय तक व्यवस्थापिका-सभा की स्थापना नहीं हुई थी। इसके अतिरिक्त उस समय तक समस्त राजपूताना पुराने विचारों में जकड़ा हुआ था। ऐसी अवस्था में इस प्रकार की संस्था की स्थापना बड़े साहस का काम था, परन्तु अपनी प्यारी प्रजा की राज-भक्ति एवं देश-प्रेम के विश्वास से प्रेरित होकर महाराजा ने यह संस्था स्थापित की।

कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने इस सुधार को अपूर्ण बताया। ऐसे मनुष्य हर समय पाए जाते हैं। महाराजा ने इन छिद्रान्वेषियों की बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

चार वर्ष के कार्य के पश्चात् महाराजा को इस संस्था की सफलता का पूर्ण विश्वास हो गया। अतः १९१७ ई० में आप ने प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्यों की संख्या १० से बढ़ा कर १५ कर दी तथा उन सब नगरों को एसेम्बली में सदस्य भेजने का अधिकार दिया जिनकी आबादी २,५०० से अधिक थी। एसेम्बली के सदस्यों की संख्या भी ३५ से बढ़ा कर ४५ कर दी गई। काश्तकारों की उन्नति का विशेष ध्यान रखते हुए उन्हें अलग सदस्य भेजने का अधिकार प्राप्त हुआ। १९२१ ई० में इन सुधारों में और भी परिवर्तन हुआ। काश्तकारों और जमींदारों की एक सभा स्थापित हुई और इसे एसेम्बली में अपनी ओर से तीन सदस्य भेजने का अधिकार प्राप्त हुआ। काश्तकारों की सभायें तथा डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड स्थापित करने की नीति का सफलता पूर्वक पालन हुआ। इन संस्थाओं के द्वारा जनता

को शासन-सम्बन्धी कार्यों की प्रारम्भिक शिक्षा मिलती है।

बीकानेर-लेजिस्लेटिव-एसेम्बली ने अनेकों लाभदायक कार्य किए हैं। बाल-विवाह-निषेध-नियम, अधिक सूद रोकने के लिए नियम, अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा नियम तथा धार्मिक एवं धर्मार्थ संस्थाओं के प्रबन्ध के लिए नियम इत्यादि अनेकों नियम इस एसेम्बली ने बनाए। इस एसेम्बली का सबसे अधिक महत्व का कार्य है प्रस्ताव पास करना एवं सरकार से प्रश्न पूछना। इस तरह महाराजा को प्रजा की कठिनाइयों का तुरन्त पता चल सकता है।

एसेम्बली की स्थापना का आधार स्थानीय स्वराज्य था। अपने शासन काल के प्रारम्भ से ही महाराजा ने जान लिया था कि सुव्यवस्थित शासन के लिए नींव का दृढ़ होना आवश्यक है। इस विचार से आपने पंचायतों, म्युनिसिपैलिटियों तथा लोकल-बोर्डों के संगठन की ओर ध्यान दिया। प्रत्येक नगर में म्युनिसिपैलिटी की स्थापना हुई। १९१७ ई० में इन म्युनिसिपैलटियों को अपनी आय तथा व्यय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त हुआ। इन्हें कर लगाने का अधिकार भी मिला। प्रत्येक सम्प्रदाय के सदस्यों के निर्वाचन के लिये गैर-सरकारी सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गई। आजकल राज्य भर में १८ से अधिक म्युनिसिपैलटियां हैं। गांवों में भी पंचायतों को कुछ दीवानी तथा फौजदारी के अधिकार मिले तथा उन्हें कार्य संचालन में भी भाग मिला।

इस प्रकार शासन-प्रणाली संगठित होने से राज्य में उन्नति हुई तथा प्रजा-हित के कार्यों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ने लगी। ज़मीन का बन्दोबस्त सन् १९११ में हो चुका

था, फिर भी इस बन्दोबस्त को निश्चित करने के पहले महाराजा ने जी-डी रुड्किन को इसका काम सौंपा। उनकी सलाह से बन्दोबस्त फिर से हुआ, परन्तु तब तक खेती में सुधार न था अतः इस बन्दोबस्त से कोई विशेष लाभ नहीं था। खेती के सुधार के लिए महाराजा ने कुशल अफ़सर नियुक्त किए। गेहूं तथा कपास इत्यादि उत्पन्न करने के लिए प्रयास किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि अच्छी फसल पैदा होने लगी। नहर के इलाके में काश्तकारों को खेत खरीदने का अधिकार प्राप्त हुआ, स्थान स्थान पर मंडियों की स्थापना हुई तथा काश्तकारों की सभायें स्थापित हुईं। इन सब बातों से महाराजा की प्रजाहितैषिता का परिचय मिलता है।

न्याय-विभाग में भी सुधार हुआ। ३ मई १९२२ ई० को चीफ़-कोर्ट के स्थान पर बीकानेर में हाई-कोर्ट की स्थापना हुई। एक चीफ़ जज (प्रधान न्यायाधीश) तथा दो दूसरे जज नियुक्त हुए। राज्य के सब न्यायालय हाईकोर्ट की आधीनता में काम करते हैं। चीफ़ जज का पद मंत्रियों के बराबर रक्खा गया और उतने ही अधिकार भी उसे प्राप्त हुए।

बीकानेर नगर को आधुनिक ढंग की राजधानी बनाना महाराजा का एक मुख्य सुधार है। पहले बीकानेर नगर में सँकड़ी गलियाँ तथा तंग बाजार थे। इमारतें भी अधिकतर पुराने ढंग की थीं। महाराजा को अपने शासन-काल के प्रारम्भ से ही इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था। आप बीकानेर नगर को सुन्दर बनाना चाहते थे। इस आशय से आपने नगर में स्थान २ पर भव्य भवन बनवाए और विस्तृत

बाग लगवाए। दफ़्तरों की इमारतें भी आपने कलापूर्ण बनवाईं। चौड़ी सड़कों का निर्माण हुआ। मुख्य स्थानों पर स्मारक-मूर्तियां बनाई गईं। हार्डिंग-म्युनिसिपल-हाल, इरविन-लेजिस्लेटिव-एसेम्बली-हॉल, महकमा खास की इमारतें, हाई कोर्ट, वाल्टर नोबल्स स्कूल तथा और भी अनेकों भवनों के निर्माण से बीकानेर-नगर बहुत सुन्दर बन गया। इन इमारतों के निर्माण में आपने स्वयं दिलचस्पी ली।

सन् १९१८ ई० में बीकानेर-राज्य तथा बृटिश-सरकार में संधि हुए एक सौ वर्ष हो गए। इन सौ वर्षों में बीकानेर-राज्य ने आशातीत उन्नति की। अतः सौ वर्ष व्यतीत होने पर महाराजा ने सम्राट् को तार द्वारा अपनी प्रसन्नता प्रकट की तथा धन्यवाद दिया। साथ ही आपने तीन लाख रुपया लड़ाई में सहायतार्थ दिया। सम्राट् ने अपने उत्तर में महाराजा की तथा आप के पूर्वजों की प्रशंसा की तथा रुपयों की भेंट के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद दिया।

आठवाँ पाठ

महान-आदर्श

पिछले पाठ में हम महाराजा के सुधारों का वर्णन पढ़ चुके हैं। अब हम महाराजा के आतिथ्य-सत्कार के गुण का हाल पढ़ेंगे। अतिथि-सत्कार करना भारतवासियों का महान् गुण है। महाराजा श्री गंगासिंहजी सदा से इस महान आदर्श के पोषक रहे हैं। जब कभी इंगलैंड से राज-परिवार का कोई व्यक्ति भारतवर्ष आया महाराजा ने उसका समुचित आदर

सत्कार किया। सच तो यह है कि महाराजा के शासनाधिकार प्राप्त करने के बाद जो भी राज-परिवार का व्यक्ति भारत में आया उसने अपने कार्य-क्रम (प्रोग्राम) में बीकानेर का भ्रमण अवश्य रक्खा। सन् १९०३ ई० में ड्यूक ऑफ़ कनॉट और सन् १९०५ ई० में प्रिंस ऑफ वेल्स बीकानेर आए। यही प्रिंस ऑफ़ वेल्स बाद में सम्राट् पंचम जॉर्ज के नाम से विख्यात हुए। इन लोगों के बीकानेर आने का हाल हम इस पुस्तक के प्रथम भाग में पढ़ चुके हैं। सन् १९२१ ई० में भूत-पूर्व सम्राट् एडवर्ड अष्टम ने अपने शुभागमन से बीकानेर को सुशोभित किया। उस समय आप प्रिंस ऑफ़ वेल्स थे। महाराजकुमार को इन के निकट रहने का विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। प्रिंस के स्वागत का प्रबन्ध महाराजा ने अपनी देख-रेख में किया। प्रिंस ऑफ़ वेल्स इस स्वागत से अत्यन्त प्रसन्न हुए। अपने भाषण में आपने महाराजा के सत्कार की बहुत प्रशंसा की।

महाराजा के बालिग़ होने के बाद से प्रत्येक वाइसराय सरकारी तौर से बीकानेर आया। लार्ड हार्डिंग से महाराजा का घनिष्ट सम्बन्ध था। सन् १९१२ ई० में वे सरकारी तौर पर महाराजा की रजत-जयन्ती के शुभावसर पर बीकानेर आए। इसके अतिरिक्त ग़ैर सरकारी तौर से वे फिर दो बार बीकानेर आए। इसके बाद लार्ड चेम्सफोर्ड भी दो बार बीका-नेर आए। इस अवसर पर महाराजा ने नरेन्द्र-मंडल की स्थापना के विषय में अपने भाषण में कहा तथा रियासतों के प्रति लॉर्ड चेम्सफोर्ड की सहानुभूति की नीति की भी सराहना की।

१९२२ ई० में महाराजा को एक महान् व्यक्ति के स्वागत

का सुअवसर प्राप्त हुआ। उक्त व्यक्ति एम० क्लिमेंशू था जो वरसाई की संधि-सभा के समय फ्रांस का प्रधान मंत्री था। संधि-सभा में इसने बड़ी योग्यता से काम किया था। संधि-सभा में क्लिमेंशू से महाराजा की मित्रता होगई। इसके उग्र राजनैतिक विचारों के कारण लोग इसे 'टाइगर' (चीता) कहते थे। वरसाई की संधि-सभा में महाराजा क्लिमेंशू की निर्भीकता तथा नीति-निपुणता से बहुत प्रभावित हुए। क्लिमेंशू भी महाराजा के प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं व्यवहार-कुशलता पर मुग्ध होगया। एक दिन आपस में बात करते समय महाराजा ने हँसी में कहा कि यदि फ्रांसीसी "टाइगर" भारत में कभी आए तो मैं उसका परिचय भारत के जंगली टाइगर या शेर से कराऊँगा। महाराजा का अभिप्राय शिकार खेलने से था। यह बात केवल हँसी में हुई थी परन्तु क्लिमेंशू यह बात नहीं भूला। पूर्वी देशों का भ्रमण करने के बाद उसने भारत में आने का निश्चय किया। इंडो-चाइना से उसने अपने मित्र महाराजा श्री गंगासिंहजी को तार भेजा और भारतीय शेर से परिचय प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। इसी क्षण से महाराजा ने एम० क्लिमेंशू के स्वागत की तैयारी करना प्रारम्भ कर दिया। वास्तव में क्लिमेंशू के भारत-भ्रमण का पूरा प्रबन्ध महाराजा ने ही किया। ग्वालियर राज्य में शेर के शिकार का प्रबन्ध हुआ और महाराजा स्वयं शिकार में क्लिमेंशू के साथ गए।

बीकानेर में महाराजा ने इनका उचित आदर सत्कार किया। उनके सम्मानार्थ एक शानदार दावत हुई। महाराजा के आतिथ्य-सत्कार से क्लिमेंशू बहुत प्रभावित हुआ तथा

अपने भाषण में महाराजा की बहुत प्रशंसा की। पेरिस पहुंच कर उसने महाराजा को एक विनोदमय पत्र लिखा तथा महाराजा के स्वागत की प्रशंसा की।

जनवरी १९२२ ई० में लार्ड रीडिंग छः दिन के लिये बीकानेर आया। साम्राज्य की युद्ध-समिति के समय से ही महाराजा का उससे परिचय था। भारतवर्ष में आते ही लॉर्ड रीडिंग को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। देश भर में राजनैतिक अशान्ति थी। इसका प्रभाव रियासतों पर भी पड़ा। अनेक प्रकार की झूठी बातें रियासतों के विषय में अखबारों में छपने लगीं। महाराजा ने अपने भाषण में वाइसराय का इन सब बातों की ओर ध्यान दिलाया। लार्ड रीडिंग ने उत्तर में महाराजा के आतिथ्य-सत्कार की तथा राज्य में सुव्यवस्थित-शासन-प्रबन्ध की अत्यन्त प्रशंसा की।

नवाँ पाठ

भीषण-षड़यंत्र

९ सितम्बर सन् १९२० ई० को महाराजकुमार श्री सादूलसिंहजी बालिग़ हुए। महाराजा तथा रियासत के लिये यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात थी। महाराजा ने अपनी देख रेख में इनकी समुचित शिक्षा का प्रबन्ध किया था। सैनिक एवं शासन सम्बन्धी शिक्षा का भी इन्हें पूर्ण ज्ञान कराया गया। सोलह वर्ष की अवस्था में मंत्रियों की देख रेख में इन्हें राज्य के भिन्न २ विभागों के प्रबन्ध तथा संचालन का ढंग बतलाया गया। महाराजा ने स्वयं भी अपनी देख रेख में इनको

शासन-सम्बंधी शिक्षा दी। स्टेट-कौंसिल के कार्य का भी आपने ज्ञान प्राप्त किया। इससे हमें ज्ञात होता है कि बालिग होने के पहले महाराजकुमार को शासन का पूर्ण ज्ञान कराया गया था। कुछ लोगों की सलाह थी कि शिक्षा प्राप्त करने के लिये महाराजकुमार को इंगलैंड भेजा जाय, परन्तु महाराजा ने यह उचित नहीं समझा। यही कारण था कि महाराजकुमार की शिक्षा का प्रबन्ध योग्य अध्यापकों के द्वारा बीकानेर में ही हुआ। फिर भी समय २ पर महाराजकुमार को आप यूरोप यात्रा में अपने साथ ले गए। इससे महाराजकुमार को यूरोपीय राजनैतिक मामलों का अनुभव प्राप्त हुआ।

महाराजकुमार के बालिग हो जाने पर महाराजा ने इन्हें शासन-कार्य में भाग देना चाहा। ऐसा करने से दो लाभ हैं। पहला यह कि शासक का कार्य भार कुछ कम हो जाता है, दूसरा यह कि अपने अनुभवी पिता की देख रेख में उत्तराधिकारी को शासन का अनुभव प्राप्त होता है। भूतकाल में हिन्दू राजा प्रायः इन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करते थे। अतः महाराजा ने अपने पुत्र महाराजकुमार श्री सादूलसिंहजी को चीफ-मिनिस्टर एवं स्टेट कौंसिल का प्रेसिडेण्ट नियुक्त करने का निश्चय किया।

महाराजकुमार योग्य एवं परिश्रमी हैं। आपने कौंसिल का कार्य सफलतापूर्वक संचालित किया एवं राज्य कार्य का अनुभव प्राप्त किया। ऐसे समय कुछ स्वार्थी मनुष्यों ने अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये पिता पुत्र में वैमनस्य उत्पन्न कराने का प्रयत्न किया। उनका प्रयत्न सर्वथा असफल हुआ परन्तु महाराजकुमार ने महाराजा से अपना पद त्यागने की

आज्ञा चाही। १९२५ में उन्होंने इस सम्बन्ध में महाराजा से लिखित प्रार्थना की। महाराजा ने उत्तर में महाराजकुमार के कार्य की अत्यन्त प्रशंसा की और उनकी प्रार्थना स्वीकार करली। महाराजकुमार ने साढ़े चार वर्ष तक प्रधान-मंत्री का कार्य बड़ी योग्यता से किया।

इस समय राज्य में दो भीषण षड्यंत्र हुए। इन दिनों महाराजा को राष्ट्र-संघ में सम्मिलित होने के लिए तथा अन्य राजनैतिक कारणों से यूरोप जाना पड़ा। उनकी अनुपस्थिति से कुछ षड्यंत्रकारियों ने अनुचित लाभ उठाना चाहा। इन लोगों ने राज्य-परिवार में फूट डालने का प्रयत्न किया। इन षड्यंत्रकारियों में प्रधान रावतसर का रावत मानसिंह था। यह राज्य का एक प्रमुख सरदार था। इसका साथ एक मंत्री ने भी दिया। यह मंत्री अपने पद से शीघ्र हटने वाला था, परन्तु उसे आशा थी कि षड्यंत्र सफल होने से वह अपने पद पर बना रहेगा। रावतसर के रावत मानसिंह पर महाराजा की विशेष कृपा थी। उसकी शिक्षा का महाराजा ने उचित प्रबन्ध किया था। कुछ समय महकमा ख़ास में काम सीखने के बाद यह रेवेन्यू-मिनिस्टर के दफ़्तर में नियुक्त हुआ और अन्त में महाराजकुमार की सेवा में नियुक्त हुआ।

रावत मानसिंह ने अपना ठिकाना बढ़ाने का प्रयत्न किया और अपने को राजा महाजन से बड़ा सिद्ध करना चाहा। महाराजा ने इस मामले की पूरी जाँच करने के बाद उसकी प्रार्थना अस्वीकार की क्योंकि राजा महाजन उन्नीस पीढ़ियों से राज्य के सर्व प्रधान सरदार माने जाते थे। अपनी असफलता के कारण रावत मानसिंह पिता पुत्र में अनबन कराने

का प्रयत्न करने लगा। उसने दो जाली पत्र लिखे और महाराजकुमार से कहा कि ये पत्र राज परिवार में लिखे गए हैं। इन पत्रों का आशय यह था कि महाराजकुमार के विरुद्ध महल में षड़यंत्र हो रहा है और जादू टोने के कारण उनके प्राणों पर संकट है। इस सम्बन्ध में उसने महाराजकुमार को और भी कई जाली पत्र दिखलाए। अवस्था कम होते हुए भी महाराजकुमार बहुत बुद्धिमान थे। वह रावत की बातों में नहीं फँसे तथा महाराजा से सब वृत्तान्त कह सुनाया। महाराजा ने इस विषय में पूरी जाँच की। यह सब रावत मानसिंह का षड़यत्र ही पाया गया। अतः वह अपनी जागीर से अलग कर दिया गया और गढ़ में नज़रबन्द किया गया। महाराजकुमार ने इस षड़यंत्र के समय बड़े धैर्य से काम लिया। इनकी बुद्धिमत्ता एवं कार्य-पटुता के कारण ही षड़यंत्रकारी असफल हुए।

इस भीषण-षड़यंत्र के अतिरिक्त एक दूसरी घटना हुई। यह घटना भी अराजकतापूर्ण थी एवं इसी षड़यंत्र के समान भयंकर थी। यह घटना राजा जीवराजसिंहजी से सम्बन्ध रखती है। इन्होंने अपने पुत्र भैरुसिंह जी के उकसाने पर महाराजा के विरुद्ध कृतघ्नता का व्यवहार किया। राजा जीवराजसिंह जी महाराजा के निकट सम्बन्धी हैं। महाराजा ने कृपा पूर्वक इन्हें राजा की पदवी दी तथा स्टेट कौंसिल का सदस्य बनाया। राजा जीवराजसिंहजी को राज्य की ओर से कुछ नियत वार्षिक कर पर कल्याणसिंहपुरा नामक गाँव मिला था। कुछ समय बाद इन्होंने चतुराई से इस गाँव को अपनी जागीर का गाँव बना लिया।

गंगा नहर बनने के पहले महाराजा ने नहर के मार्ग में पड़ने वाले गाँव राज्य में मिला कर उनके बदले दूसरे गाँव जागीरदारों को देने का निश्चय किया। इस नीति के अनुसार कल्याणसिंहपुरा के बदले में राजा जीवराजसिंह जी को दूसरे गाँव मिल गये। इन गाँवों की आय कल्याणसिंहपुरा से तिगुनी थी। इसी बीच में सरकारी कागजों की जाँच करने से पता चला कि कल्याणसिंहपुरा जागीर का गाँव नहीं है। महाराजा ने इस सम्बन्ध में राजा जीवराजसिंहजी तथा उनके पुत्र से बात की और जीवराजसिंह जी के विरोध प्रकट करने पर इस गाँव के विषय में पूरी जाँच करने के लिए एक कमीशन नियुक्त किया। महाराजा श्री भैरुंसिंहजी के० सी० एस० आई०, दो राज्य के अफ़सर, चीफ़ जस्टिस तथा हाई कोर्ट के एक और न्यायाधीश इस कमीशन के सदस्य थे। राजा जीवराजसिंह जी ने कमीशन के सम्मुख उपस्थित होना स्वीकार नहीं किया।

कमीशन ने पूर्ण रूप से जाँच करने के बाद राजा जीवराजसिंह जी के विरुद्ध फैसला दिया। इसके बाद जीवराजसिंहजी तथा उनके पुत्र ने लड़ने की धमकी दी। अतः महाराजा ने अपनी कौंसिल की सलाह से उनकी जागीर छीन ली तथा उन्हें रियासत से बाहर चले जाने की आज्ञा दी।

राजा जीवराजसिंह जी का निकटवर्त्ती रियासतों से सम्बन्ध था। उन्होंने रियासत से बाहर जाकर गवर्नर जनरल के एजेंट को इस सम्बन्ध में कहा। एजेंट ने इस विषय में जीवराजसिंह जी को क्षमा करने की महाराजा से प्रार्थना की। यदि ऐसा होता तो दूसरे विरोधी सरदारों को उत्साह

मिल जाता जैसे कि महाराजा डूंगरसिंह जी के समय में हुआ था। अतः महाराजा अपने निश्चय पर दृढ़ बने रहे।

इन दोनों षड्यंत्रों का दूसरे राजभक्त सरदारों एवं जागीरदारों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसका कारण यह था कि महाराजा ने सदा अपने जागीरदारों की भलाई एवं उन्नति का ध्यान रखा। राजकार्य में भी महाराजा इनकी सलाह लेते रहे। इनकी शिक्षा का आपने उचित प्रबन्ध किया। सन् १९२५ में दशहरा के दरबार में महाराजा ने एक सरदार-सभा स्थापित करने की घोषणा की। इस सभा का काम है सरदारों एवं जागीरदारों की रक्षा एवं उनके अधिकारों के विषय में महाराजा को समय २ पर सलाह देना। छः सरदार इस सभा के सदस्य होते हैं और एक सभापति होता है। इन सदस्यों में से तीन जागीरदारों द्वारा चुने जाते हैं और तीन को महाराजा नियुक्त करते हैं। महाराजा यह चाहते हैं कि जिस प्रकार बीकानेर-राज्य के प्रारंभिक-काल में ये सरदारगण राज्य के प्रमुख स्तम्भ थे, उसी प्रकार अब भी ये लोग महाराजा के सलाहकार एवं राज्य के स्तम्भ बने रहें।

दसवाँ पाठ

बीकानेर-स्टेट-रेलवे

हम पिछले अध्यायों में कुछ सुधारों का वर्णन पढ़ चुके हैं। इन सुधारों के साथ ही बीकानेर-स्टेट-रेलवे के सम्बन्ध में बड़े महत्व का सुधार हुआ। १९२४ ई० के पहले बीकानेर तथा जोधपुर रेलवे का प्रबन्ध साथ साथ होता था। महा-

राजा के राज्यारोहण के समय रियासत में केवल ८७ मील लम्बी रेल का लाइन थी। भीषण दुर्भिक्ष के समय महाराजा ने यह जान लिया कि भविष्य में रियासत को दुर्भिक्ष की कठिनाइयों से बचाने के लिये रेलवे लाइन का बढ़ाना आवश्यक है, जिसमें दुर्भिक्ष के समय एक स्थान से दूसरे स्थान पर अनाज इत्यादि सुगमता से पहुँचाया जा सके। इस कार्य में अनेकों कठिनायाँ थीं। रेलवे लाइन बिछाने के लिये बहुत अधिक धन की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त रेलवे के प्रबन्ध इत्यादि के लिये विशेषकों की आवश्यकता थी। महाराजा ने इन कठिनाइयों की परवाह नहीं की और रेलवे लाईन बढ़ाने का कार्य जारी रखा। परन्तु प्रारम्भ में रेलवे लाईन बहुत कम होने के कारण बीकानेर-रेलवे का प्रबन्ध जोधपुर-रेलवे के साथ होता रहा क्योंकि उस समय जोधपुर रेलवे ने अच्छी उन्नति करली थी। इस प्रबन्ध से दोनों राज्यों को लाभ हुआ।

प्रारम्भ में रेलवे का सम्मिलित-प्रबन्ध अवश्य लाभदायक था परन्तु दोनों राज्यों में रेल की लाइन अधिक फैल जाने के कारण प्रबन्ध अलग अलग करना आवश्यक होगया। १८९७ ई० में बीकानेर में लगभग ९० मील लम्बी रेल की लाइन थी परन्तु १९२४ में यह बढ़कर ५६८ मील लम्बी हो गई। नहर बनाने की योजना के साथ साथ नई रेल बनाने की भी आयोजना थी। इन सब कारणों से दोनों राज्यों की रेलों का प्रबन्ध अलग अलग होना आवश्यक था। अतः २२ जनवरी सन् १९२४ ई० को महाराजा ने जोधपुर-नरेश को इस सम्बन्ध में एक पत्र लिखा।

वास्तव में रेल का प्रबन्ध अलग होने के पहले अनेकों कठिनाइयों को दूर करने की आवश्यकता थी। इनमें मुख्य दो बातें थीं। पहली, मारवाड़ जँकशन से हैदराबाद (सिंध) तक की रेलवे का प्रबन्ध। इस लाईन का प्रबन्ध जोधपुर रियासत को मिला। दूसरी, वर्कशॉप का प्रयोग। इस विषय में यह निश्चय हुआ कि जब तक बीकानेर में रेलवे वर्कशॉप न बन जाय तब तक बीकानेर रेलवे का काम जोधपुर-रेलवे-वर्कशॉप में हो। इन सब बातों के निश्चय हो जाने पर १ नवम्बर सन् १९२४ को दोनों राज्यों की रेलों का प्रबन्ध अलग अलग कर दिया गया। महाराजा को इस बात से अत्यन्त प्रसन्नता हुई क्योंकि प्रारम्भ से ही आप बीकानेर के प्रत्येक भाग में रेल बनाना चाहते थे। अब यह काम बहुत सुगम हो गया तथा रियासत को इससे बहुत लाभ हुआ। दस वर्ष में ही रियासत में रेल की लाइन पहले से लगभग दूनी लम्बी हो गई। बड़ोदा-रियासत के अतिरिक्त और किसी भारतीय रियासत में रेलवे लाइन का क्षेत्रफल के अनुसार इतना अधिक प्रतिशत नहीं है जितना बीकानेर में है। बीकानेर रियासत को प्रतिवर्ष रेल से ४० लाख रुपयों से अधिक आय होती है।

बीकानेर रेलवे का नक्शा देखने से ज्ञात होगा कि बीकानेर एक बहुत बड़ा जँकशन है। यहाँ से एक लाईन उत्तर की ओर भटिंडा जाती है। भटिंडा पटियाला-रियासत में स्थित है और बीकानेर से लगभग २६० मील दूर है। दूसरी लाइन पूर्व में हिसार जाती है और बीकानेर को सीधा दिल्ली से मिलाती है। तीसरी लाइन दक्षिण की ओर जोधपुर

जाती है। इसके अतिरिक्त गंगा-नहर का इलाका भी रेल द्वारा बीकानेर से मिला है। २० लाख रुपये की लागत से एक वर्कशॉप बीकनेर में बना है। इससे बीकानेर रेलवे की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

रेल के बन जाने से रियासत का प्रत्येक भाग संगठित हो गया है तथा प्रत्येक प्रमुख नगर रेल द्वारा बीकानेर से मिल गया है। रेल के साथ ही प्रत्येक नगर में टेलीफोन और तार भी लग गए हैं। इन रेलों के बन जाने से अब १८९९-१९०० के समान भीषण-दुर्भिक्ष पड़ना असम्भव है! एक विशेष बात जानने योग्य यह है कि नहर तथा रेल के बनवाने में महाराजा को भारत-सरकार अथवा दूसरों से ऋण नहीं लेना पड़ा।

ग्यारहवाँ पाठ

भागीरथ-प्रयत्न

बीकानेर का अधिकतर भाग भारतीय-मरुस्थल का सब से अधिक सूखा भाग है। यहाँ वर्षा की वार्षिक औसत १२ इंच है और कहीं कहीं इससे भी कम है। इस भाग में कोई नदी नहीं है तथा पानी के अन्य साधनों की भी कमी है। रेत के टीबे इस उजाड़ भू-भाग को और भी अधिक भयंकर बना देते हैं। बीकानेर-राज्य के अनेक नरेशों की यह हार्दिक इच्छा थी कि किसी प्रकार पर्याप्त पानी मिलने का साधन प्राप्त हो जिससे यह रेगिस्तान मरूद्यान बन सके। १८८५ ई० में महाराजा डूंगरसिंह जी ने इस विषय में भारत

सरकार को लिखा था। १८९९-१९०० के भीषण अकाल के कारण महाराजा गंगासिंह जी ने जान लिया कि बीकानेर के उज्ज्वल भविष्य के लिये पर्याप्त पानी का होना आवश्यक है। इसी से खेती की उन्नति हो सकती है। इस बात को ध्यान में रख कर आपने प्रारंभ से ही राज्य के कुछ भाग को सिंचाई से हरा भरा बनाने का प्रयत्न किया तथा पर्याप्त पानी प्राप्त करने के उपाय में लग गये।

भीषण अकाल के समय भारत-सरकार ने कर्नल डनलप स्मिथ को अकाल के प्रबन्ध के लिए कमिशनर नियुक्त किया था। इन्होंने भारत-सरकार को बीकानेर राज्य के कुछ भाग की सिंचाई का प्रबन्ध करने के लिए लिखा था। उस समय भारत सरकार ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया, परन्तु अकाल की भयंकरता ने उन्हें इस ओर आकर्षित किया। उस समय लार्ड कर्ज़न वाइसराय था। यह कठिनाइयों के समय असाधारण योग्यता का परिचय देता था। लार्ड कर्ज़न ने यह निश्चय कर लिया कि भारतीय किसानों को अकाल की भयंकरता से बचाने के लिए सिंचाई का प्रबन्ध आवश्यक है। इस उद्देश्य से उसने एक कमीशन नियुक्त किया। कमीशन ने अच्छी तरह जांच करने के बाद भारत-सरकार को यह सलाह दी कि भविष्य में सिंचाई के प्रबन्ध के लिये पूरे भारत-वर्ष का ध्यान रखना आवश्यक है। सिंचाई के प्रबन्ध में प्रांतीयता हानिकारक है।

लार्ड कर्ज़न शीघ्र इंगलैंड चला गया अतः सिंचाई की वह आयोजना प्रारंभ नहीं होसकी, जिसके अनुसार बीकानेर को भी सिंचाई का लाभ पहुँचता। इसके अतिरिक्त और भी

कठिनाइयाँ थी। बीकानेर में कोई नदी नहीं है। अतः भावलपुर-राज्य ने उस आयोजना का घोर विरोध किया जिसके द्वारा बीकानेर के कुछ भाग में सतलज नदी के पानी से सिंचाई होती। इन कठिनाइयों के कारण १९१२ के पहले कोई निश्चित आयोजना नहीं बन सकी। जब १९१२ ई० में सिंचाई की आयोजना हुई तो भावलपुर-राज्य ने फिर विरोध किया और कहा कि बीकानेर को इस योजना में सम्मिलित नहीं करना चाहिए क्योंकि बीकानेर में कोई नदी नहीं है। यदि सतलज के पानी से बीकानेर के किसी भाग में सिंचाई होगी तो भावलपुर-राज्य को इससे स्थायी हानि होगी क्योंकि सतलज का पानी भावलपुर के ही लिये पर्याप्त नहीं है। संयोगवश उस समय भावलपुर का शासक नाबालिग था और वहाँ का राज्य प्रबन्ध रिजेंसी-कौंसिल के हाथ में था। रिजेंसी-कौंसिल ने इस बात से लाभ उठाने के अभिप्राय से लिखा कि इस समय भावलपुर का शासक नाबालिग होने के कारण निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। महाराजा बीकानेर भावलपुर-नरेश के शक्ति-सम्पन्न प्रतिद्वन्दी हैं और इनका उन लोगों पर पूर्ण प्रभाव है जो इस विषय में निर्णय करेंगे।

महाराजा ने इन सब विरोधों का समाधान करते हुए कहा कि किसानों के हित का ध्यान रखते हुए यह आवश्यक है कि किसी आयोजना में प्रान्तीयता का ध्यान न रक्खा जाए। १९०५ ई० में इस सम्बन्ध में भारत-सरकार ने एक योजना बनाई। लॉर्ड कर्जन को बीकानेर के किसानों के हित का ध्यान दिलाने के लिए महाराजा स्वयं शिमला गए। आपको शंका थी कि कदाचित पंजाब के अफ़सर बीकानेर

को इस सिंचाई की योजना में सम्मिलित करने के विपक्ष में हों। परन्तु महाराजा को यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि इस योजना में बीकानेर के उत्तरी भाग को सिंचाई के हेतु सम्मिलित किया गया था। भावलपुर राज्य की ओर से जो विरोध किया गया था उस पर सरकार ने विशेष ध्यान नहीं दिया क्योंकि सरकार किसी एक स्थान का नहीं वरन् भारत के सब किसानों का लाभ चाहती थी।

यद्यपि यह योजना १९०६ ई० में तैयार हुई थी फिर भी यह कार्य रूप में नहीं लाई जा सकी। १९१९ ई० में फिर एक योजना पूर्णरूप से बनी परन्तु भावलपुर के विरोध तथा अन्य कठिनाइयों के कारण इसके अनुसार भी कार्य नहीं हो सका। इसी बीच में १९१४ ई० में महायुद्ध प्रारंभ हो जाने के कारण यह काम स्थगित करना पड़ा। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी महाराजा निराश नहीं हुए। आपने अपना प्रयत्न जारी रक्खा। अन्त में ४ सितम्बर सन् १९२० ई० को सर माइकेल ओडायर तथा भारत-सरकार की उदारता के कारण पंजाब, भावलपुर तथा बीकानेर राज्य ने इस योजना को स्वीकार किया तथा स्वीकृति-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

इस योजना के स्वीकृत होजाने पर महाराजा ने इसे सफल बनाने का पूर्ण प्रयास किया। इस काम में अनेकों कठिनाइयाँ थीं, परन्तु जी० डी० रुड़किन की सहायता से महाराजा ने इन सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की। रुड़किन साहब १९१२ ई० से ही राज्य में योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे थे। इन के विषय में हम पहले पढ़ चुके हैं। इन्होंने सिंचाई की योजना को सफल बनाने का पूर्ण प्रयास किया।

नहर बनाने में अनेक कठिनाइयाँ थीं। लगभग ७१ मील तक नहर बृटिश-भारत में बहने के बाद रियासत के रेतीले भाग में पहुँचती। इस भाग की मिट्टी उपजाऊ अवश्य है परन्तु यह भय था कि शताब्दियों से सूखी ज़मीन नहर के पानी को सुखा देगी। अतः प्रारंभ से अन्त तक नहर पक्की बनाई गई। इसके अतिरिक्त सन् १९०९ के बन्दोबस्त में लगभग तमाम भूमि निश्चित सालाना मालगुज़ारी पर लोगों को दे दी गई थी। बहुत लोग इस भूमि में बस गए थे तथा उन लोगों ने अपने मकान बना लिए थे। अतः यह भी एक कठिनाई थी। महाराजा ने यह निश्चय किया कि जो भूमि ऊसर पड़ी है उसे राज्य अपना ले और उसके बदले में काश्तकारों को वह भूमि सदा के लिए दे दी जाए जिसे वे जोतते तथा बोते आए थे। रुड्किन साहब को यह काम सौंपा गया। उन्होंने भली प्रकार जाँच करके ऊसर भूमि पर राज्य का अधिकार स्थापित किया तथा जोती हुई ज़मीन का पट्टा सदा के लिए किसानों को दे दिया। इस प्रबन्ध से राज्य को यह लाभ हुआ कि ऊसर भूमि मिल गई। इसे बेचकर नहर बनाने के लिए पर्याप्त रुपए प्राप्त हो गए। किसानों को यह लाभ हुआ कि नहर के इलाक़ों में उन्हें सदा के लिए खेत के पट्टे मिल गए। इन कठिनाइयों के हल हो जाने पर रुपयों की समस्या उपस्थित हुई। नहर बनाने में लगभग ३ करोड़ रुपयों का खर्च था। इसके अतिरिक्त नहर के इलाके में मंडी, स्कूल, अस्पताल तथा पुलिस के थाने स्थापित करने के लिए एवं उस इलाके में रेल बनवाने के लिए भी २ करोड़ से अधिक रुपयों की आवश्यकता थी। इन सब का प्रबन्ध सुगमता से

हो गया। नहर के इलाके में पंजाब प्रान्त के किसान आकर बसे और इन्होंने यहां ज़मीन मोल ले ली। इस सम्बन्ध में यह जान लेना आवश्यक है कि नहर के बनाने में जितना चूना खर्च हुआ वह सब बीकानेर-राज्य में ही तैयार हुआ।

१९२७ ई० के जाड़े में नहर बन कर तैयार हुई। २६ अक्तूबर सन् १९२७ को वाइसराय लार्ड इरविन, इस नहर का उद्घाटन करने के लिए स्वयं आए। इस अवसर पर विशेष उत्सव मनाया गया। महाराजा के नाम पर इस नहर का नाम गंग-नहर रक्खा गया। सम्राट् जार्ज पंचम ने महाराजा को इस अवसर पर तार द्वारा बधाई दी तथा बीकानेर-राज्य की उन्नति के निमित्त शुभ-कामना प्रकट की। भारतवर्ष के अनेक राजे-महाराजे एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति इस अवसर पर बीकानेर आए। महाराजा जोधपुर, महाराजा किशनगढ़ तथा राजा सीतामऊ बीकानेर-नरेश को बधाई देने के लिये आए थे। अन्य उपस्थित नरेशों में महाराव कोटा तथा उनके युवराज, महाराजा दतिया, नवानगर के महाराजा रणजीतसिंह जी, नवाब पालनपुर तथा उनके युवराज, महाराणा वांकानेर, दांता के राणा, नवाब लोहारू, अलीपुर के राव साहब एवं बनारस के युवराज थे। बृटिश-भारत से हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक तथा वाइस-चांसलर महामना मालवीय जी, सर भूपेन्द्रनाथ मित्र तथा श्री एस० आर० दास आए थे। इनके अतिरिक्त बड़े २ अफसर भी आए थे। इनमें पंजाब के गवर्नर सर मैलकमहेली तथा रेलवे बोर्ड के प्रेसिडेंट सर किलमेंट हिंडले के नाम उल्लेखनीय हैं। इन महान् व्यक्तियों की उपस्थिति में वाइसराय ने नहर का उद्घाटन किया।

देखते २ रियासत का यह भाग जो शताब्दियों से ऊसर पड़ा था, नहर के आने से मरूद्यान में परिणत होगया। महाराजा के लिए यह गौरवमय दिवस था। १८९९ के भीषण अकाल के समय से ही नहर बनवाकर अपनी प्रिय प्रजा के दुःख निवारण की आपकी उत्कट अभिलाषा थी। २८ वर्ष के सतत प्रयत्न के कारण आपकी यह अभिलाषा पूर्ण हुई।

आपका यह भागीरथ-प्रयत्न इतिहास में सदा के लिए स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा। आपके प्रयत्न से एक हज़ार वर्ग मील के क्षेत्रफल में सिंचाई प्रारम्भ हुई। वास्तव में यह एक नए राज्य का निर्माण था।

नहर बनने के बाद ५०० से अधिक नए गाँव नहर के इलाके में बस गए हैं। ये सब गाँव आधुनिक ढंग से बने हैं और प्रत्येक में सड़कों तथा कूओं आदि का उचित प्रबन्ध है। १९२१ में इस इलाके की जन संख्या केवल २८००० थी परन्तु १९३४ में यह बढ़ कर १८०००० हो गई। बड़ी २ मंडियां स्थापित होगई हैं। इन में गंगा नगर मुख्य है। साथ ही साथ औद्योगिक उन्नति भी जारी है और तेल, रूई, आटे तथा चीनी के लिये कारखाने इस इलाके में काम कर रहे हैं।

किसानों की उन्नति के लिये १९२८ ई० में गंगा नगर में प्रत्येक प्रकार की फसल की जाँच के लिए एक विभाग स्थापित हुआ। यह विभाग हर प्रकार की फसल की वैज्ञानिक ढंग से जाँच करता है और किसानों को खेती के आधुनिक ढंग बतलाता है। किसानों को कम सूद पर रुपया देने के लिए सहयोग समितियाँ भी स्थापित की गईं। इस इलाके के रहने वाले बहुधा पंजाब से आए हैं। वहाँ उन लोगों को

म्युनिसिपैलिटियों तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के काम का अनुभव था। अतः नहर के इलाके के मुख्य नगरों में म्युनिसिपैलिटियाँ स्थापित की गईं तथा जनता को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार प्राप्त हुआ। डिस्ट्रिक्ट बोर्डों की भी स्थापना हुई। इस समय गाँवों में शिक्षा, अस्पताल तथा सड़कों का प्रबन्ध इस बोर्ड के ही आधीन है। इस बोर्ड ने ३० अधिक स्कूल गाँवों में खोले हैं। राज्य की ओर से गंगा नगर में एक हाई स्कूल स्थापित किया गया है तथा प्रत्येक मंडी में मिडिल-स्कूल स्थापित कर दिये गए हैं। प्रत्येक तहसील में अस्पताल स्थापित हुआ है तथा गंगा नगर में एक बड़ा अस्पताल है।

इस विस्तृत इलाके के प्रबन्ध के लिये महाराजा ने एक अलग मन्त्री नियुक्त किया जो कॉलोनाइज़ेशन-मिनिस्टर (Colonization Minister) कहलाता है। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि इस थोड़े समय में ही इस इलाके में बहुत उन्नति हुई है। इससे महाराजा की नीति-निपुणता तथा प्रजा-हितैषिता का परिचय मिलता है। महाराजा इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुए। इस नहर के समाप्त होते ही आपने दूसरी नहर बनवाने की योजना की। इस नहर को बिलासपुर राज्य में स्थित भाखरा-डैम से निकालने की योजना है। इससे लगभग २००० वर्ग मील के क्षेत्रफल में सिंचाई हो सकेगी। अभी इस योजना पर पंजाब सरकार विचार कर रही है परन्तु यह निश्चय है कि जब कभी इस योजना के अनुसार नहर बनेगी तो बीकानेर-राज्य उस योजना में अवश्य सहयोग देगा। इसका कारण यह है कि महाराजा राज्य के उत्तरी भाग को मरूद्यान बना कर वहाँ बड़े २ नगर तथा मंडी

स्थापित करना चाहते थे जिससे प्रजा का हित हो।

प्राचीन ग्रन्थों से हमें ज्ञात होता है कि राजा भागीरथ अपनी प्रजा के कल्याण के लिए गंगाजी को स्वर्ग से पृथ्वी पर ले आए थे। महाराजा गंगासिंहजी ने भी अपनी प्रिय प्रजा के कल्याण के लिये गंगा-नहर का निर्माण किया तथा मरुस्थल को नन्दन वन बना दिया। इस उपकार के लिए आप की प्रिय प्रजा आपकी चिर ऋणी रहेगी।

बारहवाँ पाठ

राष्ट्र-संघ

सन् १९२२ ई० में लार्ड पील भारत-सचिव था। इसी वर्ष महाराजा इंगलैंड पधारे थे। लार्ड पील ने आपसे भारत-वर्ष के प्रतिनिधि बनकर राष्ट्र-संघ में जाने की प्रार्थना की, परन्तु कई कारणों से महाराजा उस समय यह निमंत्रण स्वीकार नहीं कर सके। १९२४ ई० में आपको यह निमंत्रण फिर मिला। इस बार आपने राष्ट्र-संघ में जाना स्वीकार कर लिया। यह संस्था वरसाई की संधि के अनुसार स्थापित हुई थी। महाराजा ने भारतवर्ष की ओर से उस संधि पर हस्ताक्षर किए थे। अतः आपने इस संस्था के कार्य में विशेष अभिरुचि दिखलाई। आप के साथ इस संघ में भारत की ओर से लार्ड हार्डिंग एवं सर मुहम्मद रफ़ीक थे। सर स्टैनली रीड महाराजा के चीफ़ सेक्रेटरी थे। इस यात्रा में महाराजकुमार भी आप के साथ थे।

१९२४ ई० की राष्ट्र-संघ की बैठक विशेष महत्व की थी।

इटली ने कारफ्यू का टापू अपने अधिकार में कर लिया था और अबिसीनियाँ पर भी आक्रमण किया था। यह आक्रमण उस समय असफल रहा। राष्ट्र-संघ की बैठक में इटली के इन कार्यों पर विचार करना था। राष्ट्र-संघ की स्थापना इसी लिए हुई थी कि इसके सदस्य आपस में न लड़ें, और यदि कोई झगड़े का कारण उपस्थित हो तो उसका निर्णय राष्ट्र संघ करे। इन नियमों की अवहेलना करके इटली ने कारफ्यू तथा अबिसीनियाँ पर आक्रमण किया था। अतः राष्ट्र-संघ के नियमों की रक्षा के लिए इस पर विचार होना आवश्यक था।

राष्ट्र-संघ के कार्यक्रम में विभिन्न राष्ट्रों की रक्षा का विचार करते हुए उनके निःशस्त्री-करण पर विचार करना था। इस प्रस्ताव का रूप अनिश्चित होने के कारण बृटिश-सरकार ने इसका विरोध किया। महाराजा ने संघ के सदस्यों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि भारत की भौगोलिक स्थिति के कारण यहां की सेना घटाना उचित नहीं है क्योंकि भारत की उत्तरी पश्चिमी तथा उत्तरी पूर्वी सीमा पर लड़ाकू जातियाँ रहती हैं, जिनसे भारत को सदा भय रहता है।

राष्ट्र संघ की ओर से एक अन्तर्राष्ट्रीय-स्वास्थ्य-समिति स्थापित की गई थी। इस समिति को भारतवर्ष की ओर से पर्याप्त आर्थिक सहायता मिलती थी। फिर भी इस समिति ने केवल रूस और पूर्वी यूरोप में स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य किया। भारतवर्ष में उन देशों की अपेक्षा अधिक बीमारियाँ फैलती हैं, और यहां की स्वास्थ्य-सम्बन्धी स्थिति उन देशों की अपेक्षा शोचनीय है। फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय-

स्वास्थ्य-समिति ने भारतवर्ष की समस्याओं पर तनिक भी विचार नहीं किया क्योंकि इस समिति में भारत का कोई प्रतिनिधि नहीं था। महाराजा ने राष्ट्र-संघ के सदस्यों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। अतः एक प्रस्ताव पास हुआ जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि स्वास्थ्य-समिति अपनी कार्यवाही की रिपोर्ट पेरिस नगर में स्थित अन्तर्राष्ट्रीय-हेल्थ-आफिस में भेजा करे। इस संस्था में भारतवर्ष को प्रतिनिधित्व प्राप्त था। महाराजा के इस सामयिक परिश्रम के कारण भारत को राष्ट्र-संघ की स्वास्थ्य सम्बन्धी नीति निर्धारित करने का अधिकार प्राप्त हुआ।

श्री विक्हम स्टीड नामक प्रसिद्ध पत्रकार राष्ट्रसंघ की इस बैठक में उपस्थित था। १९२४ ई० के नवम्बर और दिसम्बर मास के "रिव्यू आफ़ रिव्यूज़" नामक पत्र में इसने महाराजा के कार्य की प्रशंसा की और लिखाः—

"तारीख ६ सितम्बर, १९२४ को जिनीवा में राष्ट्र-संघ की एसेम्बली की बैठक में सभापति, एम० मोटा, ने कहा कि भारत के प्रतिनिधि महाराजा बीकानेर एसेम्बली में भाषण देंगे। स्वागत में एसेम्बली में तालियाँ बजीं। वही लम्बा, सिपाहियों के से कदवाला व्यक्ति, जो संधि-सभा में था, साधारण लाउंज सूट पहने हुए सभा मंच पर आया और उसने सभापति को अभिवादन करके बोलना प्रारम्भ किया। इस एसेम्बली ने दूसरे बृटिश वक्ताओं की तरह उत्तेजित करने वाला भाषण सुनने की आशा की। महाराजा के बोलते ही एसेम्बली की शिथिलता विनष्ट हो गई। उपस्थित सदस्यों ने आपका भाषण ध्यान से सुना और प्रशंसा की। अपने छोटे,

इटली ने कारफ्यू का टापू अपने अधिकार में कर लिया था और अबिसीनियाँ पर भी आक्रमण किया था। यह आक्रमण उस समय असफल रहा। राष्ट्र-संघ की बैठक में इटली के इन कार्यों पर विचार करना था। राष्ट्र-संघ की स्थापना इसी लिए हुई थी कि इसके सदस्य आपस में न लड़ें, और यदि कोई झगड़े का कारण उपस्थित हो तो उसका निर्णय राष्ट्र संघ करे। इन नियमों की अवहेलना करके इटली ने कारफ्यू तथा अबिसीनियाँ पर आक्रमण किया था। अतः राष्ट्र-संघ के नियमों की रक्षा के लिए इस पर विचार होना आवश्यक था।

राष्ट्र-संघ के कार्यक्रम में विभिन्न राष्ट्रों की रक्षा का विचार करते हुए उनके निःशस्त्री-करण पर विचार करना था। इस प्रस्ताव का रूप अनिश्चित होने के कारण बृटिश-सरकार ने इसका विरोध किया। महाराजा ने संघ के सदस्यों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि भारत की भौगोलिक स्थिति के कारण यहां की सेना घटाना उचित नहीं है क्योंकि भारत की उत्तरी पश्चिमी तथा उत्तरी पूर्वी सीमा पर लड़ाकू जातियाँ रहती हैं, जिनसे भारत को सदा भय रहता है।

राष्ट्र संघ की ओर से एक अन्तर्राष्ट्रीय-स्वास्थ्य-समिति स्थापित की गई थी। इस समिति को भारतवर्ष की ओर से पर्याप्त आर्थिक सहायता मिलती थी। फिर भी इस समिति ने केवल रूस और पूर्वी यूरोप में स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य किया। भारतवर्ष में उन देशों की अपेक्षा अधिक बीमारियाँ फैलती हैं, और यहां की स्वास्थ्य-सम्बन्धी स्थिति उन देशों की अपेक्षा शोचनीय है। फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय-

स्वास्थ्य-समिति ने भारतवर्ष की समस्याओं पर तनिक भी विचार नहीं किया क्योंकि इस समिति में भारत का कोई प्रतिनिधि नहीं था। महाराजा ने राष्ट्र-संघ के सदस्यों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। अतः एक प्रस्ताव पास हुआ जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि स्वास्थ्य-समिति अपनी कार्यवाही की रिपोर्ट पेरिस नगर में स्थित अन्तर्राष्ट्रीय-हेल्थ-आफिस में भेजा करे। इस संस्था में भारतवर्ष को प्रतिनिधित्व प्राप्त था। महाराजा के इस सामयिक परिश्रम के कारण भारत को राष्ट्र-संघ की स्वास्थ्य सम्बन्धी नीति निर्धारित करने का अधिकार प्राप्त हुआ।

श्री विकहम स्टीड नामक प्रसिद्ध पत्रकार राष्ट्रसंघ की इस बैठक में उपस्थित था। १९२४ ई० के नवम्बर और दिसम्बर मास के "रिव्यू आफ़ रिव्यूज़" नामक पत्र में इसने महाराजा के कार्य की प्रशंसा की और लिखाः—

"तारीख ६ सितम्बर, १९२४ को जिनीवा में राष्ट्र-संघ की एसेम्बली की बैठक में सभापति, एम० मोटा, ने कहा कि भारत के प्रतिनिधि महाराजा बीकानेर एसेम्बली में भाषण देंगे। स्वागत में एसेम्बली में तालियाँ बजीं। वही लम्बा, सिपाहियों के से कदवाला व्यक्ति, जो संधि-सभा में था, साधारण लाउंज सूट पहने हुए सभा मंच पर आया और उसने सभापति को अभिवादन करके बोलना प्रारम्भ किया। इस एसेम्बली ने दूसरे बृटिश वक्ताओं की तरह उत्तेजित करने वाला भाषण सुनने की आशा की। महाराजा के बोलते ही एसेम्बली की शिथिलता विनष्ट हो गई। उपस्थित सदस्यों ने आपका भाषण ध्यान से सुना और प्रशंसा की। अपने छोटे,

स्पष्ट एवं महत्वपूर्ण भाषण में महाराजा ने श्रोताओं को विश्वास दिला दिया कि आप जो कुछ कहते हैं उससे पूर्णतया भिन्न हैं। राष्ट्र-संघ में अंगरेज़ी में होने वाले भाषणों में आपका भाषण सबसे अच्छा था।"

सन् १९३० ई० में महाराजा फिर भारत के प्रतिनिधि होकर राष्ट्र-संघ में गए। इसके पहले भारतवर्ष के प्रतिनिधि किसी भूतपूर्व वाइसराय की अध्यक्षता में राष्ट्र-संघ में जाते थे। भारत सरकार कुछ समय से भारत के प्रतिनिधियों का नेता किसी भारतीय को ही बनाना चाहती थी। अतः १९३० ई० में यह नेतृत्व महाराजा को मिला। इसी वर्ष आपको साम्राज्य समिति का सदस्य भी चुना गया। इस समिति की बैठक अक्तूबर, १९३० ई० में लन्दन में होने वाली थी। अतः आप १४ अगस्त को श्री गिरिजाशंकर वाजपेयी के साथ रवाना हुए। इस बार आपके साथ राष्ट्र-संघ में सम्मिलित होने के लिए भारत वर्ष की ओर से नवाब सर जुलफिकार अलीखाँ और सर राबर्ट ग्रीव्ज़ थे। कुछ समय बाद सर ग्रीव्ज़ का स्थान सर वसंतमल्लिक ने ग्रहण किया। महाराजा भारत के प्रतिनिधियों के नेता थे। अतः आपको दूसरे सदस्यों का कार्य भी निर्धारित करना था। आप स्वयं निःशस्त्रीकरण-समिति एवं राष्ट्र-संघ के दफ़्तरों के पुनर्संगठन से सम्बन्ध रखने वाली समिति के सदस्य थे।

इस वर्ष राष्ट्र-संघ का ध्यान एक विशेष योजना की ओर आकर्षित हुआ। यह योजना फ्रांस के एम० ब्रायंड ने पेश की थी। इसके अनुसार यूरोपीय राष्ट्रों के संगठन का प्रस्ताव था। महाराजा ने अपने महत्वपूर्ण भाषण में इस विषय में

कहा कि ऐसी योजना से यूरोप को छोड़ कर दूसरे राष्ट्रों में संदेह उत्पन्न होने की सम्भावना है। राष्ट्र-संघ की स्थापना संसार भर में शान्ति स्थापित करने के लिए हुई है। केवल यूरोप में ही नहीं। आपके इस स्पष्ट भाषण का एसेम्बली के सदस्यों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पास हुआ उससे ज्ञात होता है कि महाराजा के भाषण एवं दलीलों से राष्ट्र-संघ के सदस्य सतर्क हो गए।

राष्ट्र-संघ का कार्य समाप्त होने पर महाराजा साम्राज्य समिति में सम्मिलित होने के लिए लन्दन गए। इसका हाल हम आगे पढ़ेंगे।

तेरहवां पाठ

बटलर कमेटी

हम पहले पढ़ चुके हैं कि महाराजा सन् १९२६ ई० तक नरेन्द्रमंडल के प्रधान थे। आपका विश्वास था कि नरेन्द्र-मंडल की प्रधानता त्यागने के बाद आप अपने राज्य की समस्याओं की ओर विशेष समय दे सकेंगे। हम पिछले पाठों में पढ़ चुके हैं कि भारतीय एवं साम्राज्य सम्बन्धी समस्याओं में लगे रहने के कारण आप अपने राज्य की आन्तरिक बातों पर विशेष ध्यान नहीं दे सके। इस लिये राज्य-प्रबन्ध में कुछ शिथिलता आ गई थी। अब महाराजा के लिये यह सम्भव नहीं था कि आप अपना पूरा समय राज्य के कार्यों में लगा सकें। अतः सन् १९२७ ई० में आपने सर मनूभाई नन्दशंकर मेहता, के० टी०, सी० एस० आई०, को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया। सर मनूभाई प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हैं। तीस

वर्ष तक आपने बड़ोदा रियासत में काम किया और अन्तिम दस वर्ष में आप वहां प्रधान मंत्री थे। नरेन्द्र-मंडल की स्थापना में भी आपने भाग लिया था। आप योग्य और अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं। महाराजा को विश्वास था कि सर मनूभाई के प्रधान मंत्री होने से आपको सार्वजनिक कार्यों में पूर्ण सहायता प्राप्त होगी।

उस समय बृटिश भारत की राजनैतिक स्थिति शोचनीय थी। लार्ड रीडिंग १९२६ ई० के अप्रेल मास में वाइसराय के पद से रिटायर होकर इंगलैंड चला गया। उसकी नीति के कारण बृटिश-भारत में पूर्ण असंतोष था। अनेक रियासतों के शासकों के प्रति भी उसका व्यवहार अच्छा नहीं था। इस लिये भारतीय नरेश भी उससे असंतुष्ट थे। केन्द्रीय व्यवस्थापिका-सभा में कांग्रेस-दल प्रधान हो रहा था और राजनैतिक सुधार की माँग पेश कर रहा था। इन सब कारणों से यह आशा थी कि शीघ्र ही बृटिश-भारत में महत्व-पूर्ण सुधार होंगे।

ऐसी परिस्थिति में भारतीय नरेशों ने अपने अधिकार सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्न करने का निश्चय किया। इसकी आवश्यकता भी थी क्योंकि बृटिश-भारत के कुछ प्रमुख व्यक्ति रियासतों के विरुद्ध थे। नये वाइसराय, लार्ड इरविन, शीघ्र सुधारों की जाँच करने वाले थे। नरेशों ने लार्ड इरविन से इस विषय में बात की। वाइसराय इस विषय पर विचार करने के लिए सहमत हो गए। सन् १९२७ ई० के जून मास में पटियाला में नरेशों की एक सभा हुई। महाराजा ने नरेन्द्र-मंडल की स्थायी सभा के सदस्य की हैसियत से इस

सभा में प्रमुख भाग लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वाइसराय ने रियासतों और बृटिश-सरकार के सम्बन्ध की जाँच के लिए एक कमेटी नियुक्त करने के लिए भारत-मंत्री से सिफारिश की। इस कार्य के लिए जो कमेटी नियुक्त हुई वह बटलर-कमेटी के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि सर हारकोर्ट बटलर इस कमेटी के सभापति थे।

बृटिश-सरकार और नरेशों के सम्बन्ध की जांच के लिए कमेटी नियुक्त हो गई परन्तु नरेशों को बहुत अधिक काम करना था। इस समय महाराजा पटियाला नरेन्द्र मंडल के प्रधान थे। अतः महाराजा ने उनके सहयोग से १९२७ ई० में बीकानेर में नरेशों और मंत्रियों की एक सभा बुलाई। इस सभा में उन सब विषयों पर विचार हुआ जो बटलर-कमेटी के सम्मुख रखे जाने वाले थे। बटलर-कमेटी के सदस्य बीकनेर आए और उनका पूर्ण रूप से स्वागत हुआ। महाराजा एवं आपके प्रधान मंत्री ने उन सदस्यों से इस सम्बन्ध में बात की। महाराजा यह अच्छी तरह जानते थे कि नरेशों को केवल अपने अधिकारों की ही रक्षा नहीं करनी चाहिए वरन् प्रजाहित के कार्य भी करने चाहिएं। आपका मत था कि समय के परिवर्तन के साथ साथ नरेशों को आधुनिक राज्य-प्रणाली के अनुसार प्रजाहित एवं परिस्थिति का ध्यान रखते हुए अपने राज्यों में सुधार करना चाहिए। आपकी सम्मति में निम्नलिखित आदर्शों के अनुसार शासन होना चाहिए:—

(१) शासक का निजी कोष राजकोष से सर्वथा पृथक हो।

(२) जान तथा माल की रक्षा का उचित प्रबन्ध हो।

(३) न्यायाधीश स्वतन्त्र हों।

(४) निश्चित कानून हों और उन कानूनों के अनुसार शासन हो।

(५) राजकर्मचारी स्थायी हों।

(६) राज्य-प्रबन्ध अच्छा हो।

(७) शासन-प्रबन्ध प्रजाहित का ध्यान रखते हुए हो।

महाराजा को इस बात का उचित गर्व था कि आप इन सिद्धान्तों के अनुसार शासन कर रहे थे। सन् १९०२ ई० में आपने शासक का निजी कोष राजकोष से पृथक स्थापित किया। १९१० ई० में आपने चीफ़ कोर्ट की स्थापना करके न्यायाधीशों की स्वतंत्रता स्थापित की। १९१३ ई० में लेजिसलेटिव एसेम्बली की स्थापना करके आपने निश्चित कानून बनाए और यह प्रमाणित कर दिया कि सब नियम प्रजा की भलाई के लिए बनेंगे। अन्य बातों की ओर भी आपने प्रारम्भ से ही ध्यान दिया।

इन सब विषयों पर विचार करना आवश्यक था। वास्तव में १९२१-२३ ई० के असहयोग आन्दोलन के बाद प्रजा-मंडल नाम की एक संस्था स्थापित हुई थी। कहने को तो यह सभा रियासतों की प्रजा द्वारा स्थापित की गई थी परन्तु वास्तव में इस प्रजा-मंडल का संचालन ऐसे व्यक्तियों के हाथ में था जो स्वार्थवश रियासतों से असंतुष्ट थे। साधारण पत्रकारों ने इनका साथ दिया। सौभाग्य से इस संस्था को कांग्रेस की सहानुभूति मिल गई। प्रारम्भ में प्रजा-मंडल के सदस्यों के शब्द-चातुर्य से बृटिश-भारत के कुछ प्रमुख व्यक्ति इनकी ओर आकर्षित हुए। इनमें दीवान बहादुर रामचन्द्रराव,

श्री सी० वाई० चिन्तामणि तथा श्री केलकर मुख्य थे। प्रजा-मंडल के सदस्यों ने रियासतों पर तथा नरेशों पर तरह तरह के आक्षेप करने प्रारम्भ किए। इन लोगों ने बटलर-कमेटी से अनुरोध किया कि वे इन लोगों की बातें सुनें परन्तु सर हारकोर्ट बटलर ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उनका कहना था कि कमेटी केवल देशी रियासतों और भारत सरकार के सम्बन्ध की जाँच के लिये बैठाई गई है।

महाराजा जानते थे कि रियासतों की पुरानी शासन व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है। आपने पहले ही अपने राज्य में सुव्यवस्था स्थापित कर दी थी और शासन प्रणाली आधुनिक ढंग की बना दी थी। आपने दूसरे नरेशों को भी ऐसा करने की सलाह दी।

महाराजा स्वयं बटलर-कमेटी की कार्यवाही में भाग नहीं ले सके, परन्तु आपने अपने प्रधान मंत्री सर मनूभाई मेहता को अपना प्रतिनिधि बनाकर इस कमेटी की कार्यवाही में भाग लेने के लिए लन्दन भेजा। पत्र द्वारा आप अपनी सम्मति भी बराबर लन्दन भेजते रहे जिसमें कमेटी एवं लन्दन में उपस्थित अन्य नरेश आपके दृष्टिकोण से परिचित रहें।

१९२९ ई० के अप्रेल मास में बटलर-कमेटी ने अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट ने नरेशों को आश्चर्य चकित कर दिया। इस रिपोर्ट में भारत-सरकार का प्रत्येक कार्य रियासतों के प्रति उचित बतलाया गया। इस रिपोर्ट से नरेशगण बहुत हताश हुए। इसी बीच में १९१९ ई० के सुधारों की जाँच के लिए भारतवर्ष में साइमन-कमीशन आया। यह निश्चय था कि साइमन-कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार भारत

में शासन-सुधार होगा। इस सम्बन्ध में लार्ड इरविन लन्दन जाने वाले थे। अतः लार्ड इरविन के लन्दन जाने के पहले बम्बई में नरेशों की जून सन् १९२९ ई० में एक सभा हुई। महाराजा इस सभा के सभापति थे। यह सभा बड़े महत्व की थी। बटलर-कमेटी की रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए इस सभा ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें भारत-सरकार को नरेशों की इच्छा का स्पष्ट ज्ञान हो गया।

इसके बाद महाराजा ने गोलमेज़-सभा में भारत के हित का जो प्रयत्न किया उसका हाल हम अगले पाठ में पढ़ेंगे।

चौदहवाँ पाठ

गोलमेज़-सभा

पिछले पाठ में हम पढ़ चुके हैं कि साइमन-कमीशन ने भारतवर्ष में घूमकर शासन-सुधार की जांच करके भारतीयों को और अधिक राजनैतिक अधिकार देने का प्रस्ताव किया। लार्ड इरविन भी इस सम्बन्ध में लन्दन गये। अक्तूबर १९२९ ई० में लार्ड इरविन इंगलैंड से लौटे और ३१ अक्तूबर को यह घोषणा की कि भारतीय समस्या पर विचार करने के लिये सम्राट् की सरकार ने भारत के भिन्न भिन्न दलों के प्रतिनिधियों की एक गोलमेज़-सभा करने का निश्चय किया है। सर जान साइमन ने इंगलैंड के प्रधान-मंत्री से कहा था कि जब तक भारतीय नरेश केन्द्रीय सरकार में भाग नहीं लेंगे तब तक भारतीय समस्याओं का उचित रूप से हल होना कठिन है! नरेशों की सम्मति से ही ऐसा सुधार हो सकता था। लार्ड इरविन ने भी इस बात पर जोर दिया।

अतः सम्राट् की सरकार गोलमेज़ सभा में विभिन्न दल वालों को बुलाकर भारतीय समस्या पर विचार करने के लिए सहमत हो गई। महाराजा इस प्रस्ताव की महत्ता भली प्रकार जानते थे और आपने इस प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया।

गोलमेज़-सभा नवम्बर सन् १९३० ई० में होने वाली थी। इस सभा में सम्मिलित होने के पहले नरेशों को अनेक बातों का निश्चय करना था। सर्व प्रथम यह आवश्यक था कि बटलर-कमेटी में प्रकट किए गए विचारों का खंडन किया जाए। दूसरे, गोलमेज़-सभा में विचारार्थ कार्यक्रम निश्चित करना था। इन उद्देश्यों से १९३० ई० के फरवरी मास में नरेन्द्र-मंडल की बैठक हुई। अनेक नरेश इसमें उपस्थित थे। २५ फरवरी को बैठक प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम महाराजा ने अपने बुद्धिमत्तापूर्ण भाषण में बटलर-कमेटी के विचारों का खंडन किया। नरेशों का कहना था कि भारत सरकार बहुधा अकारण रियासतों के आन्तरिक प्रबन्ध में हस्तक्षेप करती है। महाराजा ने अपने शासन-काल के प्रारम्भ में ही इस हस्तक्षेप का कटु अनुभव प्राप्त किया। सन् १९२५ ई० में भी राजा जीवराज सिंह जी के मामले में सर राबर्ट हालैंड ने महाराजा के निश्चय में हस्तक्षेप करना चाहा परन्तु अपने अनुभव एवं दृढ़ता के कारण आप अपने निश्चय से विचलित नहीं हुए। अतः नरेन्द्र-मंडल की बैठक में महाराजा ने इस सम्बन्ध में यह प्रस्ताव रखा कि रियासतों के आन्तरिक प्रबन्ध में हस्तक्षेप का रूप बहुत सीमित रहना चाहिए।

बटलर-कमेटी ने यह भी कहा था कि रियासतों के साथ भारत सरकार का राजनैतिक सम्बन्ध निश्चित करने के लिए

बीती हुई घटनाओं एवं व्यवहार पर निर्भर रहना चाहिए। महाराजा ने बटलर-कमेटी के इस विचार का भी तर्कपूर्ण खंडन किया। आप का कहना था कि कभी कभी बीती हुई घटनाएं एवं व्यवहार कतिपय नरेशों की नाबालिगी में होते हैं और पोलिटिकल एजेन्ट द्वारा लागू होते हैं। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जो व्यवहार किसी छोटी रियासत के साथ हुआ हो, वही बड़ी रियासत के साथ भी लागू किया जाता है। ऐसा करना अनुचित है। अतः इस प्रकार की बीती हुई घटनाओं के आधार पर भविष्य का राजनैतिक सम्बन्ध निर्भर नहीं रहना चाहिए। आपने अपने भाषण में नरेशों को भी कहा कि प्रत्येक रियासत में आन्तरिक सुधारों की आवश्यकता है। महाराजा के स्पष्ट भाषण ने सब की आंखें खोल दीं। लार्ड इरविन नरेन्द्र-मंडल को स्थायी समिति के साथ उन समस्याओं पर विचार करने के लिए सहमत हो गए जो बटलर-कमेटी की रिपोर्ट के कारण उपस्थित हुई। शिमला में नरेशों की स्थायी समिति एवं हैदराबाद, बड़ौदा और मैसूर के मंत्रियों की सभा बुलाई गई। तर्क वितर्क के बाद वाइसराय ने १४ जुलाई सन् १९३० ई० को यह निश्चय किया कि नरेशों की यह स्थायी समिति तथा मंत्री-गण भारतीयनरेशों के प्रतिनिधि बन कर, गोलमेज़-सभा में सम्मिलित होंगे।

इसी वर्ष गोलमेज़-सभा में भाग लेने के पहले महाराजा को राष्ट्र-संघ की बैठक एवं साम्राज्य-समिति में सम्मिलित होना था। अतः आप अगस्त में यहां से यूरोप गए। आप के राष्ट्र-संघ एवं साम्राज्य-समिति के कार्य के विषय में हम

पहले पढ़ चुके हैं। साम्राज्य-समिति के समाप्त होते ही आपको गोलमेज़-सभा में भाग लेना पड़ा।

गोलमेज़-सभा में महाराजा ने जो कार्य किया उसकी महत्ता जानने के लिए कुछ बातें जान लेना आवश्यक है:—

(१) प्रारम्भिक प्रस्ताव के अनुसार गोलमेज़-सभा में रियासतों से यह निर्णय करना था कि बृटिश-भारत के साथ उनका सहयोग किस तरह का होना चाहिए। गोलमेज़-सभा का मुख्य उद्देश्य था बृटिश-भारत को राजनैतिक अधिकार देना।

(२) संघ-शासन का विचार न तो भारत-सरकार द्वारा ही उत्पन्न हुआ था, न इंग्लैंड की सरकार द्वारा और न नरेशों द्वारा ही। यद्यपि महाराजा ने १९१४ ई० में ही रियासतों और बृटिश-भारत की समस्या को सुलझाने के लिए संघ-शासन का विचार प्रकट किया था परन्तु अधिकतर नरेशों के लिये यह सर्वथा नया विचार था।

(३) अधिकतर भारतवासियों की यह धारणा थी कि नरेशगण बृटिश-सरकार का समर्थन करेंगे और बृटिश भारत के औपनिवेशिक-स्वराज्य प्राप्त करने के बाधक होंगे। नरेशों के लिए यह एक संकटमय समस्या थी। यदि वे लोग बृटिश-भारत की आकांक्षाओं में बाधक बनते हैं तो लोग उनपर देश-द्रोह का अपराध लगाने के लिए प्रस्तुत हैं; और यदि बृटिश-भारत की मांगों का समर्थन करते हैं तो उनकी स्थिति संकट में पड़ती है। इन कठिनाइयों के होते हुए एक ऐसा मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण करने की आवश्यकता थी जिससे न तो नरेशगण बृटिश-भारत की माँगों में बाधक बनें और न अपनी स्थिति को संकट में डालें। महाराजाने यही मार्ग ग्रहण किया।

महाराजा को इस कार्य में सर कैलाश हक्सर तथा अपने प्रधान मन्त्री सर मनूभाई मेहता से पूर्ण सहायता मिली। महाराजा ने ऐसी योजना तैयार की जिससे रियासतों की स्थिति वर्तमान एवं भविष्य के लिए सुरक्षित रहे। इन सब बातों का निर्णय कार्लटन होटल में हुआ जहां महाराजा निवास कर रहे थे। यहीं संघ-शासन की व्यापक योजना बनकर तैयार हुई।

१२ नवम्बर सन् १९३० ई० को इंग्लैंड के प्रधान-मंत्री के सभापतित्व में सेंटजेम्स-पैलेस में गोलमेज़-सभा प्रारम्भ हुई। एक ओर बड़ोदा, काश्मीर, बीकानेर, पटियाला, रीवां, धौलपुर, अलवर और भूपाल के नरेश थे। इनके समीप सर अकबर हैदरी, सरकैलाश हकसर, सर मनूभाई मेहता और सर मिर्ज़ा इस्माइल जैसे अनुभवी और प्रसिद्ध मंत्री-गण थे। प्रधान-मंत्री के सामने आग़ाखाँ, श्री मोहम्मदअली जिन्ना और सर मोहम्मद शफ़ी थे। इन लोगों की बग़ल में श्रीमती सुब्बा-रायन और बेगम शाह नवाज़ थीं। हिन्दू प्रतिनिधियों में सर तेजबहादुर सप्रू और और राइट ऑनरेबल वी. एस. श्रीनिवास शास्त्री थे। अंग्रेज़-सरकार के प्रतिनिधियों में प्रधान-मन्त्री के अतिरिक्त लॉर्ड सैंकी, लॉर्ड रीडिंग और सर सैमुएलहोर थे।

प्रारम्भ में भारत की ओर से सर तेजबहादुर सप्रू ने भाषण दिया। इनका यह भाषण राजनैतिक समस्या के सुलझाव के लिये इतिहास में अमर रहेगा। आपने संघ-शासन का प्रस्ताव किया। आप केन्द्रिय-सरकार को शक्ति-सम्पन्न बनाने के पक्ष में थे। अन्त में आपने भारतीय नरेशों से इस कार्य में सहयोग की प्रार्थना की। सर सप्रू का भाषण समाप्त होने

पर महाराजा बीकानेर उठे। आपने अपने प्रभावशाली एवं विद्वत्तापूर्ण भाषण में सर सप्रू के प्रस्ताव का समर्थन करके यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय नरेश देशभक्ति में किसी से कम नहीं हैं। आपने यह भी कहा कि संघ-शासन के साथ ही कुछ ऐसी शर्तों का रहना आवश्यक है जिनसे रियासतों की स्थिति सुरक्षित रहे।

महाराजा के इस भाषण ने सभा को आश्चर्यचकित कर दिया। लोगों को यह विश्वास नहीं था कि भारतीय नरेश संघ-शासन के पक्ष में होकर बृटिश-भारत के सदस्यों की इच्छा पूर्ण करेंगे। नरेशों के इस व्यवहार एवं उदारता की लोगों ने अनेक प्रकार से आलोचना प्रारम्भ की। कुछ असन्तुष्ट स्वभाव के भूतपूर्व गवर्नरों ने तो अंग्रेज़ जनता को यहां तक कहा कि भारतीय नरेशों के ब्राह्मण मंत्रियों एवं बृटिश-भारत के ब्राह्मण नेताओं के षड्यन्त्र के कारण नरेशों ने यह घोषणा की है। वास्तव में नरेशों के इस निश्चय के कारण कुछ और ही थे। कुछ उदार नरेश पहले से यह विचार कर रहे थे कि भारत में ऐसा संघ-शासन होना चाहिए जिसमें नरेशों के अधिकार सुरक्षित रहें। राष्ट्रीय आन्दोलन ने इस विचार को प्रोत्साहन दिया। इसके अतिरिक्त बटलर-कमेटी की रिपोर्ट ने भी नरेशों के इस विचार को दृढ़ कर दिया।

ऊपर की बातों से हमें महाराजा के भाषण के महत्व का पता चलता है। संघ-शासन का प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने पर इस योजना का व्यापक रूप तैयार करने के लिए एक उप-सभा नियुक्त हुई। लार्ड सैंकी इसका सभापति था। इस उप-सभा में भी रियासतों की ओर से महाराजा को ही काम

करना पड़ा। महाराजा के भारतवर्ष लौट आने पर भारत-सचिव ने आपके कार्य की प्रशंसा की। लार्ड सैंकी ने भी पत्र द्वारा आप की प्रशंसा की।

कुछ नरेश संघ-शासन के प्रस्ताव के विरुद्ध थे। भारत आने पर नरेशों में दो दल हो गए। एक संघ-शासन के पक्ष में और दूसरा उसके विरुद्ध। आपस के मतभेद के कारण महाराजा ने दूसरी गोलमेज़-सभा में बहुत अधिक भाग नहीं लिया। आपकी हार्दिक इच्छा थी कि नरेशों का मतभेद दूर करके ऐक्य स्थापित करें। अतः भारत लौटने पर महाराजा पटियाला के सहयोग से आपने दिल्ली में १९३२ ई० में एक सभा बुलाई। इसमें दोनों दलों की रियासतों के मंत्री बुलाए गए। इस सभा में वे शर्तें निश्चित हुईं जिनके अनुसार रियासतें संघ-शासन में सम्मिलित हो सकती हैं।

तीसरी गोलमेज़-सभा में नरेशों ने कोई भाग नहीं लिया। हाँ, महाराजा ने अपने प्रधान-मंत्री सर मनूभाई मेहता को उस सभा में नियुक्त किया। सर मनूभाई ने नरेशों की अधिकार-रक्षा का प्रशंसनीय प्रयत्न किया। महाराजा ने छोटी रियासतों का पक्ष लेकर कहा कि संघ-शासन में इनके सदस्यों को भी उतने ही स्थान प्राप्त होने चाहिएं जितने बड़ी रियासतों के सदस्यों को प्राप्त हों। बड़ी रियासतों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। अन्त में आपके परिश्रम के परिणाम स्वरूप सरकार ने मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण किया जिससे दोनों, छोटी और बड़ी, रियासतें संतुष्ट हुईं।

यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि यद्यपि महाराजा सदा संघ-शासन का समर्थन करते रहे परन्तु साथ ही आप का

यह भी मत रहा कि रियासतों की स्वतंत्रता और अधिकार में किसी प्रकार की बाधा न पड़े। इस बात से स्पष्ट प्रकट होता है कि संघ-शासन के समर्थक होते हुए भी आप रियासतों के अधिकारों की रक्षा का पूर्ण ध्यान रखते थे।

पन्द्रहवाँ पाठ

अन्य घटनाएँ

नवम्बर १९३१ ई० में दूसरी गोलमेज़-सभा से लौटने पर महाराजा ने राज्य के आन्तरिक-प्रबन्ध में अपना समय व्यतीत करने का निश्चय किया। सन् १९२६ ई० में नरेन्द्र मंडल की प्रधानता छोड़ने के बाद से ही आपका यह विचार था। आपने इसी आशय से सर मनूभाई मेहता को अपना प्रधान मंत्री बनाया कि वह आपके कार्य में हाथ बटाएंगे और महाराजा का कार्य-भार कुछ हलका होगा। परन्तु राजनैतिक वातावरण के कारण ऐसा नहीं हो सका। बटलर-कमेटी एवं गोलमेज़-सभाओं के कार्य में महाराजा तथा प्रधान-मंत्री लगे रहे। प्रधान-मंत्री के इन कार्यों में लगे रहने के कारण महाराजा को राज्य के आन्तरिक प्रबन्ध में वह सहायता नहीं मिल सकी जिसकी आपको आशा थी। संघ-शासन के प्रस्ताव के कारण उपस्थित समस्याओं के सुलझाने में प्रधान-मंत्री का पूर्ण समय व्यतीत होने लगा। अतः राज्य का आन्तरिक प्रबन्ध महाराजा को ही देखना पड़ा। आपको बहुधा कार्यवश रियासत के बाहर भी जाना पड़ा जिसके विषय में हम पिछले पाठों में पढ़ चुके हैं। परिणाम स्वरूप राजकार्य में शिथिलता

उत्पन्न हो गईं। १९२९ ई० में रुड़किन साहब का देहान्त हो गया। यह एक अनुभवी एवं कुशल अफ़सर थे। इनकी कार्य पटुता से ही नहर के इलाके का सुप्रबन्ध हुआ। इनकी मृत्यु के कारण महाराजा को पहले से भी अधिक समय राज्य के आन्तरिक प्रबन्ध में व्यतीत करना आवश्यक हो गया।

१९३२ ई० में महाराजा के द्वितीय पुत्र महाराजकुमार श्री विजयसिंह जी का बंदूक दुर्घटना के कारण असमय में देहावसान हो गया। इस दुर्घटना का महाराजा पर गहरा प्रभाव पड़ा परन्तु अपने कर्तव्य को ध्यान में रखते हुए महाराजा साहस पूर्वक अपने काम में लगे रहे। इन दिनों आप उन सब समस्याओं के सुलझाने में प्रयत्नशील रहे जो संघ-शासन के प्रस्ताव के कारण उपस्थित हुईं। बीकानेर-राज्य का सिक्का ढालने का अधिकार, सरकारी-पत्र-व्यवहार के लिये टिकटों की संख्या में वृद्धि, नमक के विषय में समझौता तथा रेलवे-लाइन पर अधिकार आदि समस्याओं पर आपने विचार किया और भारत-सरकार से इस सम्बन्ध में लिखा पढ़ी की।

महाराजा ने गोलमेज़-सभा में जो महत्वपूर्ण भाग लिया उसके कारण आपकी ख्याति चारों ओर फैल गई। महाराजा के बढ़ते हुए यश के कारण राजपूताने के कुछ नरेश आपसे द्वेष करने लगे। प्रत्यक्ष रूप से महाराजा की यशः वृद्धि रोकने का प्रयत्न होने लगा। इस सम्बन्ध में दो बातों पर विशेष ज़ोर दिया गया। पहली यह कि बीकानेर का स्थान राजपूताने की कुछ दूसरी रियासतों से निम्न है। दूसरी यह कि संघ-शासन की सभा में बीकानेर को वह स्थान नहीं मिलना चाहिये जो अन्य बड़ी रियासतों को मिलेगा। इस

सम्बन्ध में हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि महाराजा के परिश्रम के कारण छोटी रियासतों के अधिकारों की रक्षा हुई और बड़ी रियासतें भी संतुष्ट हुईं। यह याद रखना आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में महाराजा का प्रयत्न बीकानेर के लिए नहीं था क्योंकि बीकानेर राजपूताने की प्रमुख रियासत है और इसे वे सब अधिकार प्राप्त होने आवश्यक थे जो बड़ी रियासतों को मिले। किन्तु आपने सिद्धान्त-रक्षा के लिये ही यह प्रयत्न किया था और इसी के परिणाम स्वरूप छोटी रियासतों के अधिकारों की रक्षा हुई।

आपने जब सुना कि कुछ रियासतें अपने प्रयत्न द्वारा यह सिद्ध करना चाहती हैं कि बीकानेर राजपूताने की प्रमुख रियासत नहीं है तो आपने "दी हाउस ऑफ बीकानेर" नामक पुस्तक प्रकाशित कराई। इस पुस्तक ने ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर यह सिद्ध कर दिया कि मुग़ल सम्राटों के समय से ही जयपुर रियासत को छोड़कर बीकानेर के नरेशों का स्थान राजपूताने की अन्य रियासतों के शासकों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।

हम प्रजा-मंडल का थोड़ा हाल पहले पढ़ चुके हैं। इसके सम्बन्ध में यहाँ कुछ और कह देना आवश्यक है क्योंकि इस संस्था की कार्यवाही के कारण बृटिश-भारत के कुछ प्रमुख व्यक्तियों एवं पत्रकारों का ध्यान बीकानेर नरेश की ओर आकर्षित हुआ। महाराजा ने अपनी योग्यता एवं नीति-निपुणता के कारण अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। अतः प्रजा-मंडल के लोगों ने महाराजा पर तरह तरह के आक्षेप लगाने प्रारम्भ किये और साथ ही रियासत की प्रजा को भी भड़काना तथा

बहकाना शुरू किया। राज्य के कुछ लोग इनके बहकावे में आ गये और सार्वजनिक सभाओं में राज्य के विरुद्ध आन्दोलन करने लगे। १४ जनवरी सन् १९३२ ई० को पुलिस ने इस आन्दोलन के नेताओं को पकड़ लिया और लिखित प्रमाण मिलने पर इन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया। यह मुकद्दमा बीकानेर-षड़यंत्र-केस के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय बृटिश-भारत में भी अनेक-षड़यंत्र-केस चल रहे थे। बीकानेर के अभियुक्तों ने अनेक प्रकार से मुकद्दमे के फैसले में अड़चनें उपस्थित कीं। उन लोगों ने १००० पृष्ठों का लिखित बयान दिया। भूख-हड़ताल एवं अदालत से असहयोग की धमकी दी। इन सब के होते हुए भी न्याय शीघ्र ही हुआ। जनवरी सन् १९३४ ई० में इन अभियुक्तों को साधारण कैद की सज़ा मिली। बृटिश-भारत में प्रजा-मंडल के कतिपय लोगों ने इस विषय में आन्दोलन जारी रखा और स्थान-स्थान पर सभाएँ कीं। प्रजा-मंडल के लोगों ने पूना के प्रसिद्ध नेता श्री एन० सी० केलकर को अपना सभापति बनाया। ऐसी अवस्था में महाराजा ने प्रजा-मंडल की पोल खोलना आवश्यक समझा। जून १९३४ ई० में बम्बई जाने पर आपने श्री एन० सी० केलकर को बुलाकर उनसे इस सम्बन्ध में बात की और प्रजा-मंडल की झूठी कार्यवाही से उन्हें परिचित किया। इस घटना के बाद कुछ पत्रकारों ने श्री केलकर के विरुद्ध लिखना प्रारम्भ किया। श्री केलकर को इस बात से आश्चर्य हुआ परन्तु अब वह प्रजा मंडल की पोल अवश्य समझ गए।

सन् १९३३ ई० में महाराजा तथा महारानी श्री भटियाणी

जी साहिबा के विवाह के २५ वर्ष व्यतीत हुए। राज-परिवार में अत्यधिक परदे की प्रथा के कारण बाहरी लोग महारानी साहिबा के गुण नहीं जान पाते, परन्तु महाराजा स्वयं उन गुणों को कभी नहीं भूल सकते जिनके कारण आपका दाम्पत्य जीवन सदा सुखपूर्ण रहा है। अपनी धार्मिकता एवं दान-शीलता के लिए महारानी साहिबा विख्यात हैं। दीनदुखियों के उपकार में एवं स्त्रियों की शिक्षा तथा उन्नति की ओर आपका सदा ध्यान रहता है। आपके उत्साह के परिणाम स्वरूप नोबुलस-गर्ल्स-स्कूल की स्थापना हुई। इसमें परदे वाली राजपूत लड़कियों के पढ़ने का पूर्णरूप से प्रबन्ध है। तमाम राजपूताने में इस प्रकार की कोई दूसरी संस्था नहीं है। महाराजा का दाम्पत्य-जीवन सदा सुखपूर्ण रहा है। श्री महारानी साहिबा ने आपकी प्रत्येक काम में सदा सहायता की है। अतः विवाह के २५ वर्ष पूर्ण होने पर विवाह-जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर दावत में महाराजा ने महारानी साहिबा के गुणों की प्रशंसा की। बृटिश-सरकार ने महारानी साहिबा के गुणों की प्रशंसा में उन्हें 'क्राउन ऑफ इंडिया' की उपाधि से विभूषित किया।

१९३४ ई० में सर मनूभाई मेहता प्रधान-मंत्री के पद से अलग हो गए। अतः आन्तरिक प्रबन्ध का पूरा भार महा-राजा को स्वयं उठाना पड़ा। इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। महाराजा के कला-प्रेम के विषय में हम लोग पहले पढ़ चुके हैं। अब आपने बीकानेर राजधानी की सुन्दरता बढ़ाने के लिए एवं अपनी प्यारी प्रजा की भलाई के लिए अनेक इमारतें और बनवाई। १९३२ ई० के बाद ही आपने यह कार्य प्रारम्भ

किया। जनता ने भी पूर्णरूप से इस कार्य में सहयोग दिया। इन इमारतों में अजायबघर, स्टेडियम, स्त्रियों एवं पुरुषों के लिए अलग अलग अस्पताल, महारानी नोबुल्स-गर्ल्स-स्कूल, सार्वजनिक पुस्तकालय तथा थियेटर और सिनेमा हाल मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी इमारतें बनवाईं। बीकानेर के धनिकों ने भी नई आबादी में सुन्दर सुन्दर भवन बनवाए।

बीकानेर की प्रजा महाराजा की प्रजा-हितैषिता के कारण आपकी अत्यन्त कृतज्ञ है। अतः पब्लिक-पार्क में जनता ने महाराजा की भव्य-मूर्ति बनवाने का निश्चय किया। १९३४ ई० में तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड विलिंगडन ने बीकानेर आकर इस मूर्ति का उद्घाटन किया तथा अपने भाषण में महाराजा की भूरि भूरि प्रशंसा की।

अप्रैल १९३५ ई० में सम्राट पंचम जॉर्ज की रजत-जयंती में सम्मिलित होने के लिये महाराजा इंग्लैंड गए। इस उत्सव में केवल वही भारतीय नरेश निमंत्रित थे जिनका सम्राट से व्यक्तिगत सम्बन्ध था। महाराजा ने इस उत्सव के प्रत्येक कार्य में भाग लिया।

सोलहवाँ पाठ

स्वर्ण-महोत्सव

सितम्बर सन् १९३७ ई० में महाराजा को राज्य करते ५० वर्ष हो गए। बीकानेर-राज्य की प्रजा के लिए यह बहुत प्रसन्नता की बात थी। महाराजा श्री गंगासिंहजी के पहले किसी भी बीकानेर-नरेश ने इतने समय तक राज्य नहीं किया

था। रजत-जयन्ती समाप्त होने के बाद से अब तक राज्य में अभूत-पूर्व उन्नति हुई। नीचे लिखी बातों से इस उन्नति का हमें पूरा ज्ञान हो जाएगा। रजत-जयन्ती के समय राज्य की आय ४४½ लाख रुपया थी। सन् १९३७ ई० में यह बढ़कर १½ करोड़ रुपया हो गई। १९१२ ई० में राज्य में ४०० मील लम्बी रेल की लाईन थी परन्तु १९३७ ई० में यह ८०० मील लम्बी कर दी गई। स्कूलों की संख्या में वृद्धि हुई। बहुत से मिडिल-स्कूलों के स्थान पर हाई-स्कूल स्थापित हुए। बीकानेर-नगर में डिग्री-कालेज की स्थापना हुई। जनता की सुविधा के लिए प्रिंस-विजयसिंह जी मेमोरियल जेनरल हास्पिटल बना। यह अस्पताल पुरुषों के लिए अलग है और स्त्रियों के लिए अलग। बीकानेर नगर में खेल तमाशों के लिए एक बहुत बड़ा स्टेडियम बना। पब्लिक-पार्क में गंगा-थियेटर हाल के भव्य-भवन का निर्माण हुआ। यहाँ सिनेमा दिखाया जाता है। यह सिनेमाघर भारतवर्ष के गिने चुने सिनेमाघरों में से है। गंगा-नहर के बनजाने से १००० वर्ग मील ज़मीन उपजाऊ हो गई। १९१२ ई० के बाद महाराजा ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। आप साम्राज्य की युद्ध-समिति में सम्मिलित हुए, वरसाई के सन्धि-पत्र पर आपने हस्ताक्षर किए, नरेन्द्र-मंडल के आप प्रथम चांसलर नियुक्त हुए और राष्ट्र-संघ में सम्मिलित हुए।

उपरोक्त कारणों से प्रजा ने विशेष रूप से स्वर्णमहोत्सव मनाने का निश्चय किया और इस कार्य के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए प्रजा ने एक समिति बनाई। प्रत्येक व्यक्ति ने अपने जगत-प्रसिद्ध महाराजा का स्वर्ण महोत्सव मनाने के

लिए पूर्ण उत्साह प्रदर्शित किया। बीकानेर-नगर में स्थान स्थान पर भव्य द्वार बने। रोशनी का अच्छा प्रबन्ध था। पब्लिक पार्क के फव्वारों से बिजली की रंग बिरंगी रोशनी ने पार्क की सुन्दरता को और भी बढ़ा दिया। वृक्षों पर भी विभिन्न रंग के बिजली के लट्टू लटक रहे थे। तात्पर्य यह है कि प्रजा ने इस अवसर को सुन्दर और मनमोहक बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। कलकत्ता और बम्बई इत्यादि नगरों में रहने वाली बीकानेर की प्रजा ने भी जुबली-कोष में चन्दा भेजकर अपने उत्साह का परिचय दिया।

स्वर्ण-महोत्सव मनाने का मुख्य दिन १८ सितम्बर सन् १९३७ ई० था परन्तु इस सम्बन्ध में धार्मिक कृत्य इत्यादि ११ सितम्बर से ही प्रारम्भ हो गए। छः दिनों तक महाराजा ने राज्य में स्थित विभिन्न मन्दिरों में जाकर देवी-देवताओं के दर्शन किए एवं उनकी पूजा की। १७ सितम्बर को प्रातः काल तुलादान हुआ। एक पलड़े में महाराजा बैठे और दूसरे पलड़े में तीन लाख रुपयों का सोना रखा गया। इसके बाद महाराजा ने सोने चाँदी का मिला हुआ तुलादान भी किया। उसी दिन फ़ौज, पुलिस तथा अन्य राज्य-कर्मचारियों को भोज दिया गया।

हम पहले पढ़ चुके हैं कि १८ सितम्बर स्वर्ण महोत्सव मनाने का मुख्य दिन था। इस दिन प्रातः काल १०१ तोपों की सलामी हुई। इसके बाद प्राचीन-प्रथा के अनुसार १०० से अधिक कैदी जेलखानों से छोड़े गए। दूसरे कैदियों को भी साल में ५१ दिन छूट देने की घोषणा की गई। राज्य के प्रायः प्रत्येक बड़े नगर में गरीबों को भोजन दिया गया।

इस दिन नगर में रोशनी का भी विशेष प्रबन्ध था। इस उत्सव को देखने के लिए हज़ारों आदमी भारत के प्रत्येक भाग से बीकानेर आए। महाराजा ने लालगढ़ में राज-कर्मचारियों को दावत दी और साधुओं को भी भोजन कराया।

स्वर्ण-महोत्सव के शुभ अवसर पर सम्राट् जार्ज षष्ठ ने महाराजा को बधाई का तार भेजा एवं राज्य की सुख-शान्ति के लिए शुभ-कामना प्रकट की। सम्राज्ञी मेरी ने भी आपको तार द्वारा बधाई दी।

इस अवसर पर महाराजा ने अपनी प्रिय प्रजा को संवाद दिया और कहा कि आप राज्य की प्रजा के हित के लिए एक दूसरी नहर बनवाने की योजना कर रहे हैं। यदि ईश्वर ने चाहा तो यह नहर शीघ्र तैयार हो जाएगी।

ऊपर हमने स्वर्ण-महोत्सव से सम्बन्ध रखने वाले धार्मिक कृत्यों का हाल पढ़ा है। इन धार्मिक कृत्यों के समाप्त हो जाने के कुछ दिन बाद खेल-तमाशों, दरबार और प्रजाहित की घोषणाओं का कार्य प्रारम्भ हुआ। २६ अक्टूबर को बीकानेर के स्टेडियम में स्कूल के छात्रों के खेल हुए। रात्रि के समय सरदारों और जागीरदारों को महाराजा ने भोज दिया। दूसरे दिन सरदारों और जागीरदारों ने महाराजा को भोज दिया। इसी दिन शाम को स्टेडियम में जनता का मेला हुआ। हाथी और ऊंटों की दौड़ तथा भैंसों की लड़ाई का दृश्य देखने लायक था।

३० अक्टूबर सन् १९३७ ई० को महाराजा ने एक दरबार किया। अपने भाषण में महाराजा ने प्रजा की राज-भक्ति की प्रशंसा करते हुए स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष में प्रजा-हित के

कार्यों की घोषणा की। जनता ने इस अवसर पर जो चन्दा एकत्रित किया था उसको महाराजा ने प्रजाहित के कार्यों में खर्च करने की घोषणा की। इसके अतिरिक्त इन कार्यों के लिए राज-कोष एवं निजी-कोष से भी आपने बहुत सा रुपया दिया।

बीकानेर में क्षय-रोग की चिकित्सा के लिए एक अलग अस्पताल खोलने की घोषणा हुई। औरतों के अस्पताल में बच्चों के लिए एक अलग वार्ड का निर्माण हुआ। पुरुषों के अस्पताल में चिकित्सा के लिए नये २ यंत्र मँगवाए गए। बीकानेर लेजिस्लेटिव-एसेम्बली के चुने हुए सदस्यों की संख्या में ६ सदस्य बढ़ाए गए। यह बड़े महत्व की घोषणा थी क्योंकि अब से एसेम्बली में चुने हुए सदस्यों की संख्या निर्वाचित सदस्यों की संख्या से अधिक हो गई। महाराजा ने यह भी कहा कि अब से राज्य की आय का दसवाँ हिस्सा प्रतिवर्ष प्रजा-हित के कार्यों में खर्च किया जाएगा। अनेक बाहर जाने वाली व्यापारी चीज़ों पर से कर उठा दिया गया। इसके अतिरिक्त सिले हुए कपड़ों पर आयात-कर माफ़ कर दिया गया। गंगा नहर के इलाके में काश्तकारों पर राज्य के लगभग ४२ लाख रुपए बाकी थे। ये रुपए माफ़ कर दिए गए। चूरू, सरदारशहर, सुजानगढ़ और गंगानगर में हाईस्कूलों की नई इमारतें बनवाने की घोषणा हुई। अनेक नई नई सड़कें बनवाई गईं। हिन्दू-विश्व-विद्यालय, बनारस को २५ हज़ार रुपए दिए गए। मिडिल स्कूलों की संख्या में वृद्धि हुई। बालिकाओं की शिक्षा के लिए भी अनेक नए स्कूल खोले गए। अनेक नए अस्पताल बने और रतनगढ़ में एक बड़ा अस्पताल बना। इसके अतिरिक्त महाराजा ने अपने

निजी कोष से ३ लाख रुपए दान दिए। आपने सेनाओं को झंडे प्रदान किए एवं राज-कर्मचारियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को उपाधियाँ इत्यादि भी दीं। भिन्न भिन्न संस्थाओं ने महाराजा को अभिनन्दन-पत्र समर्पित करके अपने उत्साह एवं प्रसन्नता का परिचय दिया।

स्वर्ण-महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए वाइसराय, लॉर्ड लिनलिथगो, लेडी लिनलिथगो सहित ४ नवम्बर को बीकानेर आए। अन्य यूरोपीय मेहमान भी उत्सव में सम्मिलित होने एवं महाराजा को बधाई देने के लिए इसी समय बीकानेर आए। वायसराय का बड़ी धूमधाम से स्वागत किया। गया। स्टेशन से गढ़ तक वायसराय की सवारी का हाथियों पर जुलूस निकला। उत्सव की ऐसी मनोरंजक छटा शायद ही किसी ने कभी देखी हो। वाइसराय के ठहरने का प्रबन्ध लालगढ़ महल में हुआ था। ५ नवम्बर को वाइसराय ने गंगा-गोल्डेन जुबिली म्यूज़ियम (अजायबघर) का उद्घाटन किया। यह म्यूज़ियम बीकानेर की प्रजा ने महाराजा के स्वर्ण-महोत्सव के उपलक्ष में बनवाया था। इसके बाद वाइसराय ने बीकानेर की प्रसिद्ध इमारतों का अवलोकन किया। ६ नवम्बर को वाइसराय के स्वागत में महाराजा ने एक दरबार किया और अपने भाषण में बीकानेर राज्य एवं बृटिश सरकार के पारस्परिक सम्बन्ध की चर्चा की तथा वाइसराय के आगमन पर प्रसन्नता प्रकट की। वाइसराय ने अपने भाषण में महाराजा के गुणों की प्रशंसा की। साथ ही यह भी घोषणा की कि सम्राट् ने महाराजा को 'जनरल' की उपाधि प्रदान की है। इस घोषणा से सब लोग बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि

भारतीय नरेशों में यह सम्मान किसी को नहीं प्राप्त है। दूसरे दिन वाइसराय तथा अन्य यूरोपीय मेहमान गजनेर गए। इस अवसर पर गजनेर के महलों एवं झील का दृश्य अत्यन्त मनोरम था। प्रत्येक स्थान पर बिजली की रोशनी से झील जगमगा रही थी। वाइसराय महोदय गजनेर में तीन दिन ठहरे और ९ नवम्बर को स्पेशल-ट्रेन से दिल्ली लौट गए। धीरे २ अन्य यूरोपीय मेहमान भी बीकानेर से बिदा हुए।

नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में भारतवर्ष के अनेक राजे, महाराजे, अमीर उमराव तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति महाराजा को, स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष में, बधाई देने के लिए बीकानेर आए। ग्वालियर, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर, बूंदी, कोटा, पटियाला, कच्छ, प्रतापगढ़, दतिया, बनारस, पालनपुर, नरसिंहगढ़, सीतामऊ, वांकानेर, दाँता, दरभंगा इत्यादि राज्यों के नरेश उत्सव में सम्मिलित होने के लिए बीकानेर आए। इनके अतिरिक्त अनेक रियासतों के प्रसिद्ध दीवान तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी सम्मिलित हुए। बृटिश-भारत से भी अनेक प्रतिष्ठित सज्जन आए थे। महाराजा ने सबका समुचित आदर सत्कार किया। इन लोगों के स्वागतार्थ लालगढ़ में एक भोज हुआ। अपने भाषण में महाराजा ने उपस्थित नरेशों एवं अन्य महानुभावों को धन्यवाद दिया। इसके बाद उपस्थित नरेशों की ओर से ग्वालियर के महाराजा जयाजी राव ने महाराजा की कुशलता एवं नीति-निपुणता की प्रशंसा की। बृटिश-भारत के प्रसिद्ध नेता डाक्टर बी. एस. मुंजे ने भी अपने भाषण में महाराजा के गुणों का बखान किया। यह उत्सव लगभग सात दिनों तक चलता रहा।

प्रायः देखा जाता है कि उत्सवों में बहुत अधिक खर्च होता है और इस खर्च से कोई स्थाई लाभ का कार्य नहीं होता। परन्तु बीकानेर महाराजा का स्वर्ण-महोत्सव इससे सर्वथा भिन्न था। प्रजा ने जो कोष इस उत्सव पर महाराजा को भेंट किया वह सब महाराजा ने प्रजा-हित के स्थायी कार्यों में लगा दिया। साथ ही राज्य-कोष एवं निजी-कोष से भी इस हेतु बहुत सा रुपया खर्च किया।

सत्रहवाँ पाठ

वर्तमान युद्ध

हम इस पुस्तक के आरम्भ में गत महायुद्ध के विषय में पढ़ चुके हैं। इस महायुद्ध में महाराजा ने बृटिश-सरकार की केवल धन तथा जन से ही सहायता नहीं की थी वरन् आप स्वयं भी युद्धक्षेत्र में गए और वहाँ अपनी वीरता का परिचय दिया। इनके सैनिक कार्यों से प्रसन्न होकर सम्राट् ने आप को समय समय पर उच्च सैनिक उपाधियाँ प्रदान कीं। हम पिछले पाठ में पढ़ चुके हैं कि महाराजा के स्वर्ण-महोत्सव के अवसर पर सम्राट् ने आपको 'जनरल' की उपाधि प्रदान की।

सन् १९३० ई० के बाद से ही यूरोप के राजनैतिक क्षेत्र में अशान्ति फैल रही थी। जर्मनी धीरे धीरे अपनी शक्ति बढ़ा रहा था और लड़ाई की तैयारी कर रहा था। एक २ करके उसने सारे यूरोप के अनेक छोटे २ राज्यों पर अपना अधिकार जमा लिया। इंगलैंड की सरकार ने जर्मनी के इस अत्याचार

की निन्दा की और उसे ऐसा करने से मना किया। परन्तु जर्मनी ने लड़ाई की सम्पूर्ण तैयारी कर ली थी। १ सितम्बर सन् १९३९ ई० को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। अतः ३ सितम्बर को इंगलैंड और फ्रांस ने भी जर्मनी के विरुद्ध लड़ाई की घोषणा कर दी। यह युद्ध इस समय चल रहा है।

वर्तमान युद्ध में भारतीय सैनिक संसार के भिन्न भिन्न युद्ध-क्षेत्रों में वीरता पूर्वक शत्रु का सामना कर रहे हैं। युद्ध प्रारम्भ होते ही महाराजा ने बृटिश-सरकार को पूर्ण सहायता देने की घोषणा की। इस सम्बन्ध में बृटिश-सरकार को अब तक जो सहायता दी जा चुकी है उसका विवरण नीचे दिया जाता है:—

लगभग ५½ लाख रुपये नकद दिए गए हैं जिनमें से ७५०००) रु० महाराजा ने अपने निजी कोष से दिए हैं। युद्ध की सहायतार्थ मार्च सन् १९४२ में स्टेडियम के निकट गंगा गोल्डन जुबली-क्लब के मैदान में एक बहुत बड़ा मेला लगाया गया। उसमें जयपुर, मुलतान, मद्रास, एवं अन्यस्थान से दुकानें आईं। ग्राम-सुधार और खेती सम्बन्धी नुमायश का उस मेले में खास प्रबन्ध किया गया था जिससे मनोरञ्जन के साथ ही साथ जनता को लाभ भी हो। इनके अतिरिक्त राजकीय शिक्षा विभाग की ओर से शिक्षा सम्बन्धी वस्तुओं की प्रदर्शिनी भी की गई। इस मेले की सम्पूर्ण आय वर्तमान युद्ध में सहायतार्थ भेज दी गई। राज्य की ओर से तीन लाख रुपयों की एक लॉटरी भी की गई थी जिसमें से दो लाख रुपए युद्ध में सहायतार्थ भेजे गए।

आर्थिक सहायता के अतिरिक्त महाराज ने बृटिश-सरकार

को सैनिक सहायता भी बहुत दी है। बीकानेर की निम्न-लिखित फ़ौजें सम्राट् की फ़ौजों के साथ काम कर रही हैः—

(१) श्री गंगा रिसाला १७ अगस्त सन् १९४० ई० को बीकानेर से विदा हुआ।

(२) श्री सादूल लाइट इन्फेन्ट्री (मेकेनाइज़्ड), जिसने उच्चश्रेणी की तैयारी करके १८ नवम्बर सन् १९४० ई० को प्रस्थान किया।

(३) श्री विजय बैटरी ८ सितम्बर सन् १९४१ ई० को रवाना हुई।

इनके अतिरिक्त नीचे लिखे नये बेड़े राज्य में बनाए गए हैं—

(१) बीकानेर जी. पी. टी. कम्पनी। यह आज कल युद्ध-क्षेत्र में गई हुई है।

(२) दूसरा इन्फैन्ट्री-बैटेलियन। यह दूसरे बेड़ों की सहायता के लिए स्थापित किया गया है।

(३) तीसरा इन्फैन्ट्री बैटेलियन।

(४) ट्रेनिंग बैटेलियन।

(५) तोपखाने का ट्रेनिंग सैंटर।

(६) युद्ध के कैदियों की देख-रेख के लिए दो बेड़े और तैयार करने का भी वचन दिया गया है।

भारतीय सेना के लिए राज्य से ११४९ रङ्गरूट भी भर्ती किए गए हैं। यहाँ पर यह जान लेना चाहिए कि युद्ध प्रारम्भ होने के पहले बीकानेर राज्य का फौजी खर्च ८३ लाख रुपया था, परन्तु इस समय यह बढ़ कर २४ लाख रुपया हो गया है।

महाराजा ने बीकानेर में एक युद्ध अस्पताल खोला है

जिसमें ४०० तक घायल सैनिकों का इलाज हो सकता है। राज्य में बारह हजार युद्ध कैदियों को रखने और राज्य की ओर से उनके लिए आवश्यक मकान, दवाई और देख-रेख का प्रबन्ध करने का वचन दिया गया है।

महाराजा और भी कई प्रकार से युद्ध में सहायता पहुँचा रहे हैं। इस समय बीकानेर में गैस से बचने के लिये कपड़ा तैयार हो रहा है। भारतीय सेना के लिए बारह सौ पागड़े और दाहने बनाए गये हैं। १२५० मन बबूल की छाल, ४५० मन शोरा और १५०० बरते हुए एक्सरे फिलम सरकार को दिए गए। समुद्रपार काम करने के लिए बीकानेर-स्टेट-रेलवे से ५० बन्द और २२ खुले डिब्बे भेजे गए। गोले बनाने के लिये ४ लेथ मशीनें दीं। सम्राट् की फौज का सामान ढोने के लिए बहुत से जानवर दिये तथा राज्य के महकमों में मिस्त्री और मोटर चलाने वालों की शिक्षा का प्रबन्ध किया।

अक्तूबर सन् १९४१ ई० में महाराजा स्वयं अपने पौत्र भँवर श्री करणीसिंह जी बहादुर को साथ लेकर मिश्र और इराक के युद्ध-क्षेत्र में गए और विभिन्न स्थानों पर सेनाओं का संगठन देखा। शत्रु जिस समय कैरो नगर (मिश्र) पर भयंकर आक्रमण कर रहा था उस समय आप वहीं थे और परमात्मा की कृपा से सकुशल लौट आए। महाराजा तथा भँवर साहब के युद्ध-क्षेत्र से लौटने पर जनता के हर्ष का ठिकाना न रहा। आपके स्वागत के लिए जनता ने स्थान स्थान पर द्वार सजाए। शहर भर में रोशनी का प्रबन्ध किया गया। स्टेशन से गढ़ तक महाराजा की सवारी का जुलूस आया। अपनी प्रिय प्रजा के इस उत्साह को देख कर

महाराजा को महान् हर्ष हुआ एवं उन्होंने प्रजा की इस राज-भक्ति की अपने भाषण में सराहना की।

अठारहवाँ पाठ

कुछ विशेषताएँ

शासक के नाते महाराजा सदा प्रजाहित का ध्यान रखते हैं। आपका दृढ़ विश्वास है कि रियासत की भलाई के लिए ईश्वर ने आपको योग्यता, शक्ति, दूरदर्शिता एवं नेतृत्व प्रदान किया है। यही कारण है कि महाराजा स्वयं शासन के प्रत्येक विभाग की पूर्ण निगरानी रखते हैं।

अपने शासन काल में अधिकतर महाराजा ने प्रधान-मंत्री का कार्य स्वयं किया। अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए आप अपना समय विभाग निर्धारित करते हैं। प्रायः अपने दफ़्तर में बैठ कर आप अपना कार्य करते रहते हैं और आपके सेक्रेटरी एवं क्लर्क इत्यादि आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में रहते हैं। शासन-काल के प्रारम्भ में अनेक महत्वपूर्ण पत्र आप स्वयं अपने हाथों से लिखते थे क्योंकि उन दिनों टाइप की मशीन का प्रयोग बहुत कम था। अब भी महत्वपूर्ण पत्र महाराजा के देखे बिना और ठीक किये बिना दफ़्तर से बाहर नहीं भेजे जाते। प्रायः आठ बजे सुबह से आप अपना कार्य प्रारम्भ करते हैं और साढ़े ग्यारह बजे तक काम करते रहते हैं। इसके बाद दैनिक-धार्मिक-कृत्य एवं भोजन का समय होता है। भोजन के बाद थोड़ा आराम करके आप २½ बजे फिर कार्य प्रारम्भ करते हैं। मंत्री-गण एवं अन्य प्रधान अफ़सरों

को आदेश मिलता है और आवश्क कागज़ महाराजा स्वयं देखते हैं। इस प्रकार सायंकाल प्रायः देर तक आप काम करते रहते हैं।

स्वयं इतना कठिन परिश्रम करने के कारण आप स्वभावतः यह चाहते हैं कि सब लोग अपने कार्य में कुशल एवं परिश्रमी हों। साथ ही आपका कहना है कि शासक को सदा प्रजा हित का ध्यान रखना चाहिए और समय के अनुसार शासन-प्रणाली में सुधार करना चाहिए। यह बात महाराजा ने कई बार अपने व्याख्यानों में कही है। आपके सततः परिश्रम के कारण ही बीकानेर राज्य ने आपके शासन-काल में आश्चर्यजनक उन्नति की है। इसमें सन्देह नहीं कि यदि आप राज-कार्य में दिलचस्पी न लेते तो इतने थोड़े समय में यह उन्नति न हो सकती। आपने राज-कार्य में प्रजा को भी भाग दिया। इसी हेतु आपने शासन-सम्बन्धी सभाएँ, लेजिस्लेटिव असेम्बली, म्युनिसिपैलिटियाँ एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड स्थापित किए।

महाराजा कुशल एवं अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं। राजनैतिक मामलों की आपको अच्छी परख है। इसका पता हमें दो प्रमुख बातों से लगता है। प्रथम आपने १९१७ ई० में रोम से भारत-सचिव को एक पत्र भेजा था जिसमें बृटिश-भारत को राजनैतिक अधिकार देने का अनुरोध किया था। पत्र के साथ ही आपने एक योजना भी तैयार करके भेजी थी। सन् १९१९ ई० के सुधार बहुत कुछ इस योजना के आधार पर ही हुए थे। इसके विषय में हम पहले पढ़ चुके है। द्वितीय, गोलमेज़-सभा में भारतवर्ष के लिए आपने संघ-

शासन का समर्थन किया। अपनी नीति निपुणता के कारण ही नरेन्द्र-मंडल के कार्य में आपने विशेष ख्याति प्राप्त की। वाद विवाद एवं तर्क में भी महाराजा अद्वितीय हैं।

एक योद्धा, राजनीतिज्ञ एवं कुशल-शासक होने के कारण महाराजा को ललित कलाओं से विशेष प्रेम नहीं है। अपने पूर्वजों की भाँति आपकी साहित्य में विशेष अभिरुचि नहीं हैं। आपको केवल उन विषयों की पुस्तकों से प्रेम है जिन विषयों का आपके जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। संगीत के अनुभवी पारखी होते हुए भी आपकी संगीत-शास्त्र में विशेष रुचि नहीं है। स्थापत्य-कला से आपका अधिक प्रेम है। स्थापत्य-शास्त्र का पूर्ण ज्ञान होने के कारण इस कला के आप अच्छे समालोचक हैं। शासन के प्रत्येक विभाग का महाराजा को पूर्ण ज्ञान एवं अनुभव है।

महाराजा की सबसे बड़ी विशेषता आपकी सादगी है। आप तड़क भड़क और दिखावा नहीं चाहते। हाँ, दशहरा इत्यादि खास मौकों पर आप राज्य की प्राचीन-प्रथा के अनुसार राजसी शान से दरबार इत्यादि करते हैं। आपका यह एक विशेष गुण है कि जो काम आप प्रारम्भ करते हैं वह बिना समाप्त किए नहीं छोड़ते। आपका धैर्य प्रशंसनीय है। इसका उदाहरण हमें नहर बनवाने की योजना से मिलता है। नहर बनाने की योजना १९०५ ई० में प्रारम्भ हुई परन्तु गंगा-नहर १९२७ ई० में बन कर तैयार हुई। अनेक कठिनाइयों एवं अड़चनों के होते हुए भी महाराजा धैर्य पूर्वक अपने प्रयत्न में लगे रहे और अन्त में आपने सफलता प्राप्त की।

कार्यपटुता एवं नेतृत्व गुण के बिना कोई नरेश सफल-

शासक नहीं बन सकता। महाराजा में ये दोनों गुण हैं। शासन के प्रारम्भ में ही आपने भीषण दुर्भिक्ष के समय जिस योग्यता से जनता का दुःख दूर करने का प्रयत्न किया वह सराहनीय है। उस समय आपकी अवस्था केवल १९ वर्ष की थी। लॉर्ड कर्ज़न तथा सर डेंजिल इबेटसन ने आपकी कार्य कुशलता की अत्यन्त प्रशंसा की। शासन के प्रत्येक कार्य से हमें महाराजा के उपरोक्त गुणों का परिचय मिलता है। आपके संगठन-कार्य की सर सेमुअल होर ने भी बहुत सराहना की।

आप ऐसे मनुष्यों को नहीं चाहते जो शीघ्रतापूर्वक कोई कार्य न कर सकें। इतना होते हुए भी आप प्रत्येक नया कार्य बड़ी सावधानी से करते हैं। जब तक आप किसी नए कार्य के परिणाम पर पूर्ण विचार न कर लें तब तक आप उसे व्यवहार में नहीं लाते।

महाराजा में मित्रता स्थापित करने का महान् गुण है। शासन काल के प्रारम्भ से आजतक कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसे एक बार मित्र बनाने के बाद महाराजा ने भुला दिया हो। आपकी युवावस्था के मित्रों से और भी अधिक घनिष्ठता हो गई है। अपने मित्रों से आप बराबर पत्र-व्यवहार करते रहते हैं। परन्तु इन पत्रों में आप राजनैतिक विषयों की चर्चा नहीं करते। महाराजा का अपने परिवार से और विशेषतः अपने पौत्रों से अधिक स्नेह है। उन लोगों की शिक्षा की ओर आपका अधिक ध्यान रहता है और अपनी देख रेख में उनकी शिक्षा का आपने उचित प्रबन्ध किया है। आपने अपनी निगरानी में उनके रहने के लिए अलग २ महलों में प्रबन्ध कर रखा है।

आपके मनोरंजन का एक मात्र साधन शिकार है। आप अचूक निशाना लगाते हैं और जंगली जंतुओं के शिकार में आपकी विशेष अभिरुचि है। जंगली जानवरों के शिकार का बीकानेर में अभाव है परन्तु पनडुब्बी और बटबड़ के शिकार के लिए बीकानेर प्रसिद्ध है। गजनेर में बड़े दिनों की छुट्टियों में बटबड़ के शिकार के लिए अनेक व्यक्ति निमंत्रित किए जाते हैं। इन व्यक्तियों का उचित आदर सत्कार किया जाता है और प्रत्येक की सुविधा का ध्यान रखते हुए शिकार का प्रबन्ध किया जाता है। इसके अतिरिक्त आपको शेर के शिकार से अधिक प्रेम है। बीकानेर में शेर नहीं होते। इसलिये शेर के शिकार के लिए आप दूसरे राज्यों में जाते हैं। कोटा, ग्वालियर, भूपाल, दतिया एवं अन्य राज्यों के जंगलों में आपने १५० से अधिक शेर मारे हैं। आप उन इने गिने नरेशों में से हैं जिन्हें नेपाल-सरकार ने शिकार के हेतु निमंत्रित किया था। इस स्थान पर यह कह देना आवश्यक है कि शिकार से प्रेम होते हुए भी आपने राज्य-कार्य में कभी शिथिलता नहीं आने दी।

महाराजा अपना साल भर का कार्य-क्रम पहले से ही निर्धारित कर लेते हैं। नए साल के प्रारम्भ में बड़े दिन की छुट्टियों में आए हुए अतिथि बिदा होते हैं। इसके बाद दो महीने तक महाराजा राजकार्य में संलग्न रहते हैं। मार्च के मध्य तक इस प्रकार काम में लगे रहने पर भी आप लगभग दो बार कार्य वश दिल्ली जाते हैं। मार्च के अन्त में बीकानेर में अधिक गरमी होने के कारण आप शिकार के लिए जाते हैं और उधर से मई के मध्य तक बम्बई पहुँचते हैं। बम्बई में

समुद्र-तट के अपने राज-प्रासाद में आप लगभग डेढ़ महीना व्यतीत करते हैं। इस स्थान पर भी आप रियासतों से अथवा बृटिश-भारत से सम्बन्ध रखने वाले कार्यों में लगे रहते हैं। बीकानेर में वर्षा प्रारम्भ होते ही लगभग जुलाई के पहले सप्ताह में आप बीकानेर वापिस आते हैं। बम्बई से लौटते समय कुछ समय के लिए आप माउँट आबू में रुकते हैं। राज-परिवार के अन्य लोग गर्मी में यहीं रहते हैं। जुलाई से अक्तूबर के प्रारम्भ तक बीकानेर का मौसिम सायंकाल के समय प्रायः सुहावना रहता है। इन दिनों महाराजा राज्य के बाहर बहुत कम जाते हैं। वर्षा होते ही आप मोटर में बैठकर प्रत्येक बांध का निरीक्षण करते हैं क्योंकि आप को इस बात का विशेष ध्यान रहता है कि कहीं वर्षा का पानी व्यर्थ नष्ट न हो।

दशहरे के अवसर पर विशेष उत्सव मनाया जाता है क्योंकि दशहरे के ही दिन महाराजा का जन्म हुआ था। प्राचीन-काल में दशहरे के बाद नरेश-गण लड़ाई के लिए सेनाओं का निरीक्षण करते थे एवं अपने अधीनस्थ सरदारों से भेंट लेते थे। इस प्राचीन-प्रथा की स्मृति अब भी मनाई जाती है। सरदार एवं जागीरदार बुलाए जाते हैं। पुरानी प्रथा के अनुसार सब लोग एकत्रित होते हैं। महाराजा शाही-जलूस में जाते हैं तथा दरबार में भेंट स्वीकार करते हैं। इस अवसर पर सरदारों और जागीरदारों को दावत दी जाती है। इसके बाद सब सरदारगण अपने अपने घर चले जाते है। दशहरे के उत्सव के बाद महाराजा तीन महीने फिर कठिन परिश्रम के साथ राज-कार्य में संलग्न रहते

हैं। इस बीच में संसार के भिन्न भिन्न भागों से महाराजा के मित्र आते हैं। उनका पूर्ण स्वागत होता है। नवम्बर मास में महाराजा राज्य में भ्रमण करते हैं, भिन्न भिन्न दफ़्तरों का निरीक्षण करते हैं, धनिकों से मिलते हैं और यदि अवकाश मिला तो कहीं शिकार में भी भाग लेते हैं। दिसम्बर मास के मध्य तक बड़े दिन की छुट्टियों में शिकार का प्रबन्ध होने लगता है। २३ दिसम्बर तक सब अतिथि बीकानेर आ जाते हैं। शिकार इत्यादि के बाद सब अतिथि विदा होते हैं और फिर वही कार्यक्रम प्रारम्भ होता है।

महाराजा की विशेषताओं के विषय में पिछले अध्यायों में कहा जा चुका है। आधुनिक बीकानेर उस समय के बीकानेर से सर्वथा भिन्न है। जिस समय महाराजा ने शासन प्रारम्भ किया था, उस समय राज्य की आय लगभग २० लाख रुपये थी। सड़कें और रेल केवल नाम मात्र की थीं। नहर का नाम भी नहीं था। किसानों को सदा दुर्भिक्ष का भय रहता था। ज़मीन का उचित प्रबन्ध नहीं था। आधुनिक नियम एवं उचित ढंग की न्याय-प्रणाली का अभाव था। राज्य-कार्य में प्रजा को कुछ अधिकार नहीं प्राप्त थे। बड़े बड़े जागीरदार और सरदार राज्य के विरुद्ध हो रहे थे। इस प्रकार हर प्रकार की बुराई मौजूद थी। इस समय बीकानेर ने आश्चर्य जनक उन्नति कर ली है। बीकानेर राजपूताने की एक प्रमुख रियासत बन गई है। नरेन्द्र-मंडल के कार्यों पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। इतना ही नहीं परन्तु अखिल भारतीय एवं साम्राज्य से सम्बन्ध रखने वाली राजनैतिक घटनाओं पर भी बीकानेर का गहरा प्रभाव पड़ा है।

इस समय आधुनिक राज्य-प्रणाली के अनुसार यहां शासन होता है। नहर के बन जाने से लगभग १००० वर्गमील जमीन उपजाऊ और हरी भरी हो गई है। धन-जन की रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध है। शिक्षा और अस्पतालों की भी उचित व्यवस्था है। शासन कार्य में प्रजा को भी अधिकार प्राप्त हैं। म्युनिसिपैलिटियों एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्डों का प्रबन्ध प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में है। रियासत में ८०० मील लम्बी रेल की लाइन है। महाराजा के उत्साह पूर्ण व्यवहार के कारण रियासत के सरदार एवं जागीरदार इस समय राज्य के स्तम्भ हैं। यहां की प्रजा और काश्तकारों ने पर्याप्त उन्नति कर ली है।

इस संगठन-कार्य में महाराजा को योग्य एवं अनुभवी यूरोपीय तथा भारतीय अफ़सरों से पूर्ण सहायता मिली है। रुड़किन साहब के विषय में हम पहले ही पढ़ चुके हैं। इन्हीं के प्रयत्न से नहर के इलाके में सफलता प्राप्त हुई। इनके देहावसान के पश्चात् रायबहादुर जय गोपाल नहर के इलाके के मिनिस्टर नियुक्त हुए। मिस्टर जे० फियर फिल्ड ने रेलवे विभाग की उन्नति की। और भी अनेक अफसरों से महाराजा को संगठन-कार्य में सहायता मिली। इन अफसरों के प्रति महाराजा का व्यवहार सदा स्नेह जनक रहा है।

महाराजा ने बीकानेर-राज्य की ही उन्नति नहीं की वरन् समय समय पर आपने बृटिश-भारत को राजनैतिक अधिकार देने का भी सरकार से अनुरोध किया। आप आदर्श देश-भक्त हैं। आपके इस प्रयत्न का वर्णन हम पिछले पाठों में पढ़ चुके हैं।

आप सम्राज्य की युद्ध-समिति में सम्मिलित होने वाले भारत के प्रथम प्रतिनिधि थे। भारत की ओर से आपने वरसाई की सन्धि पर हस्ताक्षर किए। नरेन्द्र-मंडल के आप प्रथम चांसलर चुने गए। भारत के प्रतिनिधि आप के नेतृत्व में राष्ट्र-संघ में सम्मिलित हुए। इन सब से बढ़कर बात यह है कि नरेशों की ओर से भारतवर्ष के लिए आपने संघ-शासन का स्वागत किया।

उन्नीसवाँ पाठ

सर वाल्टर लारेंस के विचार

इस पुस्तक में आदि से अन्त तक हम लोग महाराजा श्री गंगासिंहजी के शासन एवं व्यक्तित्व के विषय में पढ़ चुके हैं। महाराजा से जो एक बार मिला वह आपके गुणों से अवश्य प्रभावित हुआ। इस पाठ में हम सर वाल्टर लारेंस द्वारा लिखित महाराजा का कुछ वर्णन पढ़ेंगे। सर वाल्टर लारेंस महाराजा डूंगरसिंहजी के शासन-काल के अन्तिम भाग में अपने अफ़सर सर एडवर्ड के साथ आया था। उस समय रेल नहीं थी। अतः सर वाल्टर तथा अन्य लोगों को घोड़ों पर एवं ऊँटगाड़ी में मरुस्थल की यात्रा करनी पड़ी। कुछ समय बाद बीदासर के ठाकुर ने विद्रोह किया जिसका वर्णन हम इस पुस्तक के प्रथम भाग में पढ़ चुके हैं। इस विद्रोह के दमन के लिए सर वाल्टर लारेंस अंग्रेज़ी सेना के सहित आया था। वह लिखता है:—

"यद्यपि इस घटना के बाद मैं राजपूताने से पंजाब चला

गया परन्तु बीकानेर के प्रति मेरी दिलचस्पी बराबर बनी रही। महाराजा का अध्यापक नियुक्त होने वाला व्यक्ति मेरा मित्र था। उसे योग्य शिष्य मिला। महाराजा गंगासिंहजी की शिक्षा मेरी इस धारणा को पुष्ट करती है कि भारतीयों की शिक्षा भारतवर्ष में ही होनी चाहिए। भारतीयों को शिक्षा के हेतु इंगलैंड नहीं भेजना चाहिए क्योंकि इससे बहुधा अच्छाई की जगह खराबी होती है। महाराजा को भाग्य से अच्छा अध्यापक मिला और सर ब्रायन इजर्टन को अच्छा शिष्य मिला। महाराजा स्वभाव से ही चतुर, परिश्रमी और प्रखर-बुद्धि के बालक थे। आपने शीघ्र ही पाश्चात्य विद्या का अध्ययन कर लिया। भारतवर्ष की भी सब अच्छी बातें आपने सीखीं। भूतपूर्व सम्राट् महाराजा गंगासिंहजी की बहुत प्रशंसा करते थे और मुझ से प्रायः कहा करते थे कि वृटिश साम्राज्य में महाराजा की तरह कोई दूसरा पत्र नहीं लिख सकता। मेरे पास भी महाराजा के अनेक पत्र हैं। आपकी शैली सरल और स्पष्ट है। भारतवर्ष के भारतीय और अंग्रेज कार्यकर्त्ताओं में एक दोष है। इन लोगों का विश्वास है कि उनके अतिरिक्त कोई दूसरा वह कार्य नहीं कर सकता जो ये लोग करना चाहते हैं। अतः ऐसे लोग स्वयं कार्य करते हैं और दूसरों को उस कार्य में जिम्मेवारी नहीं देते। अपने मित्र भूतपूर्व महाराजा ग्वालियर की भाँति महाराजा बीकानेर में भी यह प्रशंसनीय दोष है। दोनों ही शासकों ने अथक परिश्रम करके अपने राज्यों को उन्नत, समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाया। बीकानेर में इस कार्य के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ा क्योंकि यह मरुस्थल का भाग है।

लार्ड कर्ज़न के साथ भारतवर्ष आने पर मेरा महाराजा से सम्पर्क बढ़ा। लार्ड कर्ज़न आपके गुणों से प्रभावित हुए। उन दिनों कुछ लोगों का विचार था कि रियासतों का अस्तित्व समय के प्रतिकूल है, परन्तु महाराजा ग्वालियर एवं महाराजा बीकानेर के उदाहरण से लार्ड कर्ज़न को विश्वास हो गया कि रियासतें साम्राज्य के लिए स्तम्भ के समान हैं। मैं लार्ड कर्ज़न के साथ बीकानेर गया, परन्तु इस बार पहले की भांति मार्ग रहित मरुस्थल की यात्रा नहीं करनी पड़ी। यह बीकानेर-स्टेट-रेलवे की कष्ट-रहित यात्रा थी। बीकानेर के नए महल में हम लोगों का स्वागत हुआ। महाराजा ने यह सुन्दर महल नया बनवाया था। यह लाल पत्थर का बना है और इसके चारों ओर सुन्दर फूलों एवं वृक्षों के बागीचे हैं। महाराजा को भवन-निर्माण का बहुत शोक है। शहर में पानी का भी आप उचित प्रबन्ध कर रहे हैं। मैं राजधानी से थोड़ी दूर पर स्थित एक कोयले की खान को देखने गया। इस खान में मैंने धरती के नीचे बहती हुई एक नदी देखी। शाक और फल इत्यादि के उत्पन्न करने में इसका पानी प्रयोग में लाया जाता है। बीकानेर नगर पहले की अपेक्षा बिलकुल बदल गया था। पुराने गढ़ के चारों ओर अच्छे अच्छे बाग और इमारतें बन गई थीं। वाइसराय ने इनमें से एक भवन का उद्घाटन भी किया। यह भवन बहुत ही सुन्दर है और राज्य के सरदारों और जागीरदारों के लिये क्लब है। मैं प्रायः सभामंच से दूर बैठता था। मैं यह जानने के लिए दूर बैठता था कि भाषणों का श्रोताओं पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस अवसर पर कुछ सरदारों ने मुझे जगह दी।

उन्होंने मुझ से पूछा कि मैं बीकानेर में पहले पहल आया या और भी कभी आ चुका हूं। मैंने उत्तर में उनसे कहा कि मैं बहुत वर्षों पहले बीकानेर आया था और उस समय बीदासर गया था। मैंने उन लोगों से ठा० बहादुर सिंह जी के विषय में पूछा। उन लोगों से पता चला कि बहादुरसिंहजी उसी पंक्ति में बैठे हैं। मैंने उनको देखा। उस समय वह सोने का कड़ा पहने हुए बैठे थे। सोने का कड़ा पहनना बड़े सम्मान का चिन्ह है। इसके बाद मैं बहादुरसिंहजी से बातें करने लगा। इस छोटी सी घटना के कारण मैं प्रायः सोचा करता हूँ कि देशी राज्य अनेक आकर्षणों से परिपूर्ण हैं लेकिन सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि पथ भ्रष्ट व्यक्ति भी यहाँ अपने जीवन का निर्माण कर सकता है। यदि मैं भारतवासी और ख़ास कर राजपूत होता तो रियासत में रहना पसन्द करता।

बीकानेर के आश्चर्य जनक परिवर्तनों को देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, परन्तु इससे भी अधिक प्रसन्नता मुझे इस बात से हुई कि बहादुरसिंहजी राजभक्त बन गए। बीकानेर की प्रत्येक वस्तु से महाराजा का व्यक्तित्व प्रकट होता था। हिन्दुस्तानी में 'बन्दोबस्त' एक शब्द है। इसका अर्थ बहुत व्यापक है। अच्छा शासन-प्रबन्ध और नियंत्रण इसी के अन्तर्गत हैं। मैं कुछ व्यक्तियों को जानता हूँ जो 'बन्दोबस्त' में दक्ष हैं। ग्वालियर के महाराजा माधोरावजी सिंधिया और बीकानेर के महाराजा गंगासिंहजी वैसे ही व्यक्ति हैं जैसे वर्तमान-काश्मीर-नरेश के पिता अमरसिंहजी थे। इन सब लोगों की शिक्षा भारतवर्ष में हुई और संसार के किसी भी देश में ये लोग महान शासक समझे जा सकते हैं।

कुछ वर्षों के बाद मैं किंग जॉर्ज के साथ, जो उस समय प्रिंस ऑफ़ वेल्स थे, फिर बीकानेर आया। इस बार मैंने बीकानेर में और भी अधिक उन्नति देखी। नई सड़कें बन गई थीं, रेल की लाइन बढ़ गई थी, अस्पतालों और स्कूलों के लिए नए भवन बन गए थे तथा इस मरुस्थल में कारखानों से धूवाँ निकलता हुआ दिखाई दे रहा था। बाग में वृक्षों, सड़कों तथा पानी की अधिकता देखकर मेरे मन में यह प्रश्न उठने लगा कि क्या यह वही बीकानेर है जो मैंने २० वर्ष पहले देखा था। वही सुव्यवस्थित प्रबन्ध चारों ओर दिखाई देता था। बीकानेर की मुख्य चीज़ों में यहाँ का ऊँट-रिसाला है जिसने बृटिश-सरकार की ओर से विभिन्न युद्ध-क्षेत्रों में भाग लिया है।

ऊपर लिखी घटना तीस वर्ष पहले की है। बीकानेर से बिदा होते समय मैंने समझा था कि इससे अधिक उन्नति बीकानेर में सम्भव नहीं। १९३६ ई० में मैं फिर बीकानेर आया और लगभग एक महीने तक लालगढ़ में रहा। सुबह महाराजा प्रतिदिन अपने दफ़तर में काम करते थे, परन्तु तीसरे पहर और रात्रि को मैं प्रायः उनसे मिलता था। महाराजा निरीक्षण के समय अथवा गजनेर एवं अन्य स्थानों पर शिकार के लिए मुझे अपने साथ ले जाते थे। प्रत्येक स्थान पर मैंने अच्छी सड़कें देखीं, जंगलों की रक्षा का उचित प्रबन्ध देखा और वर्षा का पानी सुरक्षित रखने के उपाय देखे। बीकानेर में वर्षा बहुत कम होती है। अनिश्चित मौसम के कारण कभी २ बाढ़ से बहुत हानि होती है। परन्तु अब वर्षा का पानी गजनेर एवं अन्य झीलों में पहुँचाया जाता है

जिससे कोई हानि न हो सके। मैंने अनेक नई चीजें देखी। राज्य के उत्तर में गंग-नहर का इलाका बस गया है। इस नहर के बन जाने से राज्य को बहुत लाभ हुआ है। बीकानेर इस समय आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से भारत की प्रमुख रियासतों में गिना जाता है।

महायुद्ध के दिनों में मैं महाराजा से प्रायः मिलता था। जब महाराजा भारत के प्रतिनिधि हो कर राष्ट्र-संघ की बैठक में जिनेवा गए थे उस समय भी मैं आपके साथ था। गोल-मेज़-सभा में आपने प्रमुख भाग लिया। अपनी राजनैतिक बुद्धिमत्ता, अनुभव एवं उत्साह के कारण प्रत्येक विषय में आपकी सलाह ली जाती थी। मेरी यह धारणा थी कि संसार के भिन्न भिन्न राजनैतिक कार्यों में भाग लेने के कारण अपने राज्य शासन प्रबन्ध की ओर आपका पहले का सा उत्साह नहीं रह गया होगा। परन्तु मेरी धारणा गलत निकली। बातों बातों में मुझे ज्ञात हो गया कि यूरोप के अनुभव ने आपके उत्साह एवं कार्यशीलता को तनिक भी कम नहीं किया है। महाराजा सदा सोचा करते हैं कि अभी बहुत कुछ करना है। और उन सब कार्यों को आप के अतिरिक्त कोई दूसरा भली प्रकार नहीं कर सकता। कभी २ मैंने यह सलाह दी कि अब आप आराम करें और युवकों को कार्य भार सौंपें। इसके उत्तर में महाराजा का कहना था कि युवकों से भूलें होती हैं और वे विलम्ब करते हैं। आप को अपने जीवन के अनेक स्वप्न कार्य रूप में परिणत करने हैं और समय बहुत कम है।

महाराजा को दुख और कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ीं परन्तु

आपने अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए उनको धैर्य पूर्वक सहन किया।

महाराजा से मैं कभी २ धार्मिक चर्चा भी करता था। आपके साथ मुझे हिन्दू-धर्म के प्रधान गुरू, पुरी-मठ के महंत श्री शंकराचार्य जी से मिलने का भी अवसर मिला। वे बीकानेर में अपने एक शिष्य से मिलने आए थे। महाराजा की धर्म-परायणता से मैं पहले से ही परिचित था। पुरी-मठ के श्री शंकराचार्य जी ने भी आपके धार्मिक विचारों की मुझसे प्रशंसा की। बीकानेर नगर से दूर मरुस्थल में कोलायत नामक एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहां के मन्दिर के दर्शन के लिये दूर २ से यात्री आते हैं। इन यात्रियों की सुविधा के लिए महाराजा ने बीकानेर से कोलायत तक रेल बना दी है। आप की धार्मिक अभिरुचि का यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण है।

मैं अभी तक महाराजा के आकर्षक व्यक्तित्व एवं प्रौढ़ विचारों के विषय में कुछ नहीं कह सका। मैंने आप से प्रायः धार्मिक विषयों पर बात की है जिसमें आपने मुझे विश्वास दिला दिया कि जो हिन्दू अपने धर्म का सच्चा अनुगामी है वही भारत का सहायक हो सकता है।

मेरे इंग्लैंड जाने के समय महाराजा बम्बई तक मेरे साथ आए। कदाचित् मैं फिर बीकानेर नहीं आ सकूँगा, परन्तु जब तक मैं जीवित रहूँगा महाराजा को कभी नहीं भूल सकता। आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। आपके सुन्दर भवन एवं जगमगाते फूलों और छायादार वृक्षों वाले गजनेर तथा लालगढ़ के मनोरम उद्यान आपकी कलात्मक अभिरुचि

प्रदर्शित करते हैं। महाराजा ने अपनी सैनिक योग्यता के कारण अपनी सेनाओं को दक्ष बना दिया है। आप अद्वितीय शिकारी हैं। वास्तव में आप महान गुणी हैं। आपका सबसे बड़ा गुण अपने मित्रों के प्रति आपकी श्रद्धा और प्रेम है।"

* समाप्त *